रक्षा सम्पदा संगठन
Defence Estates Organisation

सत्यमेव जयते

G20
भारत 2023 INDIA

सम्पदा भारती

16वां अंक

रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

भारत 2023 INDIA

वसुधैव कुटुम्बकम्

ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

'सम्पदा भारती' पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविता, कहानी आदि में प्रस्तुत विचार रचनाकारों का सृजन–क्षेत्र है। उनसे किसी प्रकार की समानता संयोग मात्र है।

सम्पदा भारती

16वां अंक

प्रधान संरक्षक

जी एस राजेस्वरन

महानिदेशक, रक्षा सम्पदा

संरक्षक एवं परामर्शदाता

मीना बलिमने शर्मा

वरिष्ठ अपर महानिदेशक

संपादक

चारू तिवारी

सहायक निदेशक (राजभाषा)

संपादन सहयोग

दीपक कुमार ऋषि, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

विक्रम सिंह, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

तेजराज सिंह, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

विशेष आभार

भल्ला राम मीना, एम टी एस

प्रतिभा पारुल, डाटा एंट्री ऑपरेटर

साज-सज्जा एवं प्रकाशन

प्रदीप मिश्र, प्रोग्रामर (सूचना प्रौद्योगिकी अनुभाग)

भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

महानिदेशक, रक्षा सम्पदा का संदेश

महानिदेशालय की गृह पत्रिका 'सम्पदा भारती पत्रिका' का 16वां अंक संगठन के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अतीव प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह हमारे लगातार जारी प्रयासों का ही नतीजा है कि हम अपने राजभाषायी दायित्व अनुपालन क्रम में थोड़ी सी भी कोताही को गुंजाइश न देते हुए सार्थक और ठोस उपायों द्वारा लक्ष्य प्राप्ति दिशा में आगे बढ़ते गए।

साथियों, सरल और सहज भाषा प्रवाह समय की मांग है। नए अंग्रेजी शब्दों को उनके लिप्यंतरण के साथ हिन्दी में *Merge* करते हुए भाषा की अभिव्यक्ति दक्षता को बढ़ाना वर्तमान समय की मांग है। नए बदलते मानकों के साथ दुरूह और जटिल शब्दावली प्रयोग का आग्रह ई–माध्यमों में ज्यादा देर ठहर नहीं पाएगा।

कार्यालयी कामकाज में भाषा के परिमार्जन और परिष्कार दिशा में हमारा थोड़ा सा प्रयास सहज और समृद्ध शब्दावली को *in* करते हुए काफी अच्छे *result* दे सकता है। यहां कहीं भी अंग्रेजी भाषा का अंधानुकरण अनुरोध नहीं है, केवल अभिव्यक्ति और मुक्तता की स्वच्छंदता को गति देना ही प्रथम और मूल उद्देश्य है। वैसे भी हमारी हिन्दी का यही नैसर्गिक गुण है, यह लगातार प्रवाहमान रहते हुए अन्य भाषाओं को सहायक नदियों की भांति आत्मसात करते, उनसे मोती रूप शब्द और शैली ग्रहण करते हुए अपने को और प्रबल बनाती चलती है।

भाषा के बदलते प्रतिमान हमें नए आग्रह, तकनीक, शब्दावली को ग्रहण करने पर ज़ोर देते हैं, पर पुराने को छोड़ कर एक दम आगे तो नहीं बढ़ा जा सकता। सही और स्वाभाविक तरीके से मूल से छेड़छाड़ किए बगैर नए को अपनाना ही भाषा की समृद्धि को बढ़ाएगा, उसे नए ठोस रूपाकार देगा। किसी भाषाविद की भांति ही हमें भी इस तथ्य को ध्यान में रखकर ही नए को अपनाने की ओर तत्पर होना चाहिए, ऐसा मेरा विश्वास है।

इन विचारों के साथ मैं सम्पदा भारती के परिवार के सभी सदस्यों (पाठकों) रचनाकारों और सम्पादन मण्डल से जुड़े अधिकारियों एवं कार्मिकों को बधाई एवं साधुवाद देता हूँ।

जय हिन्द !

जी एस राजेस्वरन

वरिष्ठ अपर महानिदेशक महोदया : संवाद

महानिदेशालय की गृह पत्रिका 'सम्पदा भारती के 16वें अंक में सुधी पाठकों संग 'संवाद' माध्यम से वार्ता करते हुए मुझे इस बात से संतुष्टि है कि पत्रिका पूर्व वर्षों की भांति अपने स्तरीय कलेवर को बनाए रखने में सफल रही है। इसमें शामिल रचियताओं की अभिव्यक्तियां भाषा, शैली, विन्यास और शब्द चयन दृष्टि से अपने पूर्ण गूँथे विचार–विनियम क्षेत्र में सृजनात्मक क्षमता को दर्शाते हुए सामने आई हैं। पाठक निश्चय ही सृजनकर्ताओं के लेखों, कहानियों एवं कविताओं से तादात्मय स्थापित कर पाएंगे।

भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है भाषाओं का पल्लवन, विकसन हम सब की महती जिम्मेवारी हैं। भाषाओं का सम्मान हमारी मूल प्राथमिकता होनी चाहिए।

भाषा का सीधा संबंध लोक संस्कृति, भाव, पर्यावरण से है। आम जन से जुड़कर भाषा का रूपाकार और समृद्ध होता है। भारत सरकार का 'मेरी माटी मेरा देश' स्लोगन अन्य बातों के साथ–साथ भाषा के महत्व से भी जुड़ा है। माटी और भाव से जुड़कर ही भाषाओं का वर्तमान रूप अपने पूरे औदार्य के साथ प्रकाशित होता है। भाषाओं की उज्ज्वलता और शब्द गांभीर्य में ठोस वृद्धि करता हैं।

मुझे पूरा विश्वास है कि 'सम्पदा भारती' पत्रिका इस महान उद्देश्य में अपने कर्तव्य की अनुपूर्ति पूर्ण गंभीरता से करेगी।

पत्रिका में सहयोग देने वाले रचयिताओं एवं संपादक मण्डल को बधाई और शुभेच्छाएँ !

जय हिन्द !

मीनाशर्मा

मीना बलिमने शर्मा

संपादक की कलम से,

साथियो, परस्पर संवाद कभी रुकना नहीं चाहिए। एक प्रसिद्ध विज्ञापन की पंक्तियां भी हैं – 'बोलने से होगा'। शायद आज के समय की मांग भी यही हैं कि हम बोलें, खुलकर बोलें, अपनी उपलब्धियों, अभिव्यक्तियों की गूंज पूरे विश्व में दम–खम के साथ गुंजायमान करें। विश्व पटल पर भारत की उपलब्धियां चंद्रयान – *III* की सफलता और आदित्य – *I* की सफल लॉन्चिंग के साथ हमेशा के लिए अंकित हो गई हैं, अनुकरणीय बन गई हैं। अन्तरिक्ष के क्षेत्र में भारतवर्ष के सिरमौर में ये बेशकीमती रत्न आने वाली पीढ़ियों के लिए देदीप्यमान *milestone* बन गए हैं।

गृह पत्रिका का सरोकार केवल कार्यालयी कामकाज से नहीं जुड़ा है। इसके माध्यम से कार्यालय विशेष की विचार–अवधारणा रचनाकारों की रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। भाषा की समृद्धि में इनका बड़ा हाथ है। इस सशक्त मंच के जरिए 'अपनी कह, उसकी सुन' का *concept* भी उजागर होता है। साथ ही वर्तमान सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू भी इसमें स्थान पाकर आने वाले समय के लिए अपना स्थायित्व सुरक्षित कर लेते हैं। उनका जिक्र करना हमारा नैतिक कर्तव्य भी है।

इस बार पत्रिका में पुराने स्तंभो के स्थान पर नए काल खंड को शामिल किया गया है। इसमें आजादी के 'अमृत महोत्सव' काल में महानिदेशालय की भागीदारी स्वरूप 'मेरी माटी मेरा देश' स्लोगन के साथ कदमताल करते हुए हमारे क्रांतिकारी वीरों की शौर्यगाथा को 'एकखंड' रूप में स्थान दिया गया है। ये प्रयास आवश्यक भी हैं। इस तरह से स्वतन्त्रता संग्राम से जुड़ी वीर गाथाओं को *document* कर आज के पाठकों से रूबरू करवाने में हमारा गांभीर्य परिलक्षित होता है। यह निश्चय ही अपने उद्देश्य में सफल होगा। आजादी से जुड़े हमारे रण बांकुरों के जीवन से जुड़ी महत्वपूर्ण घटनाओं को तत्कालीन परिदृश्य के साथ पाठकों के समक्ष लाने का प्रयास अतीत से वर्तमान को साझा करना है, यह वर्तमान पाठकों को उस समय की सामाजिक स्थिति, घटनाओं से भावों, संवादो के जरिए जुडने का पूरा अधिकार देता है। तभी पाठक भी अपने तौर पर उस माहौल की गंभीरता, अर्थवता को समझ पाता है।

अंत में, सभी रचनाकारों, पत्रिका प्रकाशन से जुड़े राजभाषा अनुभाग के मेरे सहयोगियों और आई टी सेल के प्रोग्रामर का आभार और शुभेच्छाएँ !

जय हिन्द !

चारु तिवारी
सहायक निदेशक

हिन्दी के प्रयोग हेतु राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2023-24 में निर्धारित लक्ष्य

क्र.सं.	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
1.	हिन्दी में मूल पत्राचार (ई–मेल सहित)	'क' क्षेत्र (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश छत्तीसगढ़, झारखंड और अंडमान व निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र) से 1. 'क' क्षेत्र को 100% 2. 'ख' क्षेत्र को 100% 3. 'ग' क्षेत्र को 65% 4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य, संघ/राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति : क' व 'ख' क्षेत्र को 100%	'ख' क्षेत्र (पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, चंडीगढ़, दमन व दीव और दादरा व नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र) से 1. 'क' क्षेत्र को 90% 2. 'ख' क्षेत्र को 90% 3. 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्तिः 'क' व 'ख' क्षेत्र को 90%	'ग' क्षेत्र ('क' तथा 'ख' क्षेत्रों में आने वाले राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रो को छोड़कर अन्य सभी राज्य व संघ राज्य क्षेत्र) से 1. 'क' क्षेत्र को 55% 2. 'ख' क्षेत्र को 55% 3. 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्तिः 'क' व 'ख' क्षेत्र को 55%
2.	हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में	100%	100%	100%
3.	हिन्दी में टिप्पण लेखन	75%	50%	30%
4.	हिन्दी में डिक्टेशन या की–बोर्ड पर स्वयं द्वारा टंकण कार्य	65%	55%	30%
5.	हिन्दी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण व आशुलिपि)	100%	100%	100%
6.	हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
		राजभाषा से संबंधित महत्वपूर्ण बैठकें		
7.	राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रत्येक तिमाही के दौरान एक बैठक)	
8.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रत्येक छमाही के दौरान एक बैठक)	
9.	हिन्दी कार्यशाला आयोजन		वर्ष में 4 (प्रत्येक तिमाही के दौरान एक कार्यशाला)	

रक्षा सम्पदा दिवस 2022 : कुछ झलकियाँ

रक्षा सम्पदा दिवस 2022 : कुछ झलकियाँ

अनुक्रमणिका

क्र सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	अमृत खंड (संकलन): भगत सिंह (लेख)	चारू तिवारी	13
2.	अमृत खंड (संकलन): चंद्रशेखर आजाद (लेख)	राजभाषा अनुभाग	19
3.	अमृत खंड (संकलन): हम मतवाले ..... (लेख)	भल्ला राम मीना	22
4.	यथार्थ जीवन मूल्य .... (कविता)	राजश्री माणिक रसाल	24
5.	लक्ष्य (कविता)	राजश्री माणिक रसाल	25
6.	इंतजार है मुझे (कविता)	सौ. दीपाली विनायक चाचड	26
7.	मन की बात (कविता)	सौ. दीपाली विनायक चाचड़	27
8.	मैं और मेरी जिंदगी (कविता)	संजय हरिभाऊ थिटे	29
9.	तिरंगा (कविता)	नितिन गणपत शिंदे	30
10.	दोस्त कभी पुराने नहीं होते (कविता)	नितिन गणपत शिंदे	30
11.	बीरबल की चतुराई (कहानी)	नरेश कुमार	31
12.	महत्वपूर्ण वास्तु टिप्स (लेख)	दीपक कुमार ऋषि	33
13.	राजभाषायी संवैधानिक स्थिति (लेख)	विक्रम सिंह	35
14.	पछतावा (कहानी)	दक्षिता सिंह	38
15.	हमारी मौली (कहानी)	सौ. निशात शेख	39
16.	पूर्णावतार श्री कृष्ण (कविता)	मनीष कुमार श्रीवास्तव	41
17.	भटकी हुई चिड़िया (कविता)	मनीष कुमार श्रीवास्तव	42
18.	माँ ये बता (कविता)	अनुज कुमार	43
19.	सर्वाधिक जनसंख्या : चुनौती .... (लेख)	संजय कुमार	45
20.	गुप्तदान: असली दान (कहानी)	मुकेश कुमार	47
21.	चिड़िया के घौंसले (कहानी)	राजकुमार मीना	48
22.	संसार के दो मेहमान (कहानी)	आकाश	50
23.	एक और आखिरी प्रयास (कहानी)	मुनेश कुमार मीना	51
24.	मनहूस कौन (कहानी)	अमन कुमार	52
25.	जादुई हथौड़े (कहानी)	रवि कुमार	54
26 .	भारत में हृदय रोग : एक .... (लेख)	पवन कुमार तिवारी	56
27.	प्यारा हिन्दी पखवाड़ा (कविता)	नरेंद्र कुमार चौहान	57

क्र सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
28.	जनसंख्या विस्फोट (लेख)	दीपक कुमार तिवारी	58
29.	शायद (कविता)	नितिन गणपत शिंदे	60
30.	अपनी किस्मत पर (कविता)	प्रमोद	60
31.	आत्म मुग्धता (लेख)	परमेश्वर कुमार सिंह	61
32.	आपसी फूट पड़ी महंगी (कहानी)	बबलू कुमार सैनी	65
33.	आम के बारे में कुछ रोचक तथ्य (कहानी)	चारू तिवारी	66
34.	भारत गिग इकोनॉमी का उदय (लेख)	शशि गोदवाल	68
35.	जी–20 (लेख)	रीना ठाकुर	70
36.	इतना वक्त कहाँ से लाऊं (कविता)	प्रीति	73
37.	बचपन (कविता)	रेखा	73
38.	यहाँ सब कुछ बिकता है (कविता)	अमित राज	73
39.	चुनाव का मौसम (कविता)	योगेन्द्र कुमार गुप्ता	74
40.	विनम्रता का महत्व (लेख)	संजय चंद्र पराशर	75
41.	पर्वतों का महत्व (लेख)	आदिल प्रताप सिंह	76
42.	कोरोना वायरस (लेख)	धर्मराज जाट	77
43.	राजभाषा हिन्दी (लेख)	दीपक कुमार ऋषि	80
44.	चंद्रयान 3 : अंतरिक्ष में .... (लेख)	तेजराज सिंह	81
45.	संवेदना (लेख)	धीरेन्द्र तिवारी	83
46.	दुआ (लेख)	जितेंद्र डडवाल	85
47.	प्रेरक प्रसंग (लेख)	तेजिंदर दत्त फुलारा	86
48.	नव अंकुर (कविता)	तेजिंदर दत्त फुलारा	87
49.	आदित्य एल–1 (लेख)	प्रतिभा पारूल	88
50.	मित्रता (लेख)	जितेंद्र डडवाल	90
51.	ऋणानुबंध (कहानी)	दीपक कुमार ऋषि	91
52.	कर्मफल (लेख)	दीपक कुमार ऋषि	92
53.	कश्मीर की घाटी (कविता)	विकास धर्मसिंह डोरिये	93
54.	मेरी माटी मेरा देश (लघु लेख)	रोहित	94
55.	हेमचन्द्र विक्रमादित्य (लेख)	प्रदीप मिश्र	95
56.	राजभाषा अनुभाग के कार्यकलाप (लेख)	राजभाषा अनुभाग	99

अमृत–खंड

इस पत्रिका के माध्यम से हम आजादी का 75वां अमृत महोत्सव जो अपने पूरे कलेवर के साथ 76वें वर्ष को विदा कर, 77वें वर्ष में *Slip In* कर चुका है, वर्ष के समापन अवसर पर 'मेरी माटी मेरा देश' अवधारणा को आत्मसात कर, नए भारत के उज्ज्वल पटल पर बीते कल के कुछ चिरन्तन लम्हों को *document* कर रहे हैं।

ये लम्हें पाठकों के समक्ष आगामी कुछ संवाद लेखों के जरिए प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इनका पूरा ताना–बाना व्यक्तिगत सोच से नहीं बुना गया है बल्कि हमारे मर्धून्य कहानीकारों लेखकों द्वारा कल्पना शक्ति, आप बीती का बखान करते हुए इन्हें अभिव्यक्त किया गया है :–

1. लम्हों में पिरोई वीर गाथा : शहीदे आजम भगत सिंह
2. चंद्रशेखर आजाद : एक व्यक्तित्व
3. हम मतवाले नौजवान

इन श्रृंखलाओं में आइए आजादी के बहुमूल्य संग्राम में प्रभावी और गहरी भूमिका निभाने वाले हमारे महान योद्धाओं को याद करते हुए अतीत के गहरे समुद्र से संस्करण रूपी मोती चुने और पूर्ण योग भाव से अपने स्वतन्त्रता सेनानियों को नमन करते हुए उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करें।

भूमिका

स्वतन्त्रता आंदोलन से जुड़े कुछ किस्से, घटनाएँ जिन पर पाठकों का ध्यान इस उद्देश्य से नहीं खींचा जा रहा है कि मौजूदा समय में किसी वाद, मत, अवधारणा या विचार का स्थापन नए सिरे से करना है यहाँ तो पूरा आग्रह उस समय मौजूद अवधारणों, विचारों, वादों, मतो से आज की पीढ़ी का परिचय कराना भर हैं।

ये विचार मत अवधारणाएँ, घटनाएँ उस समय के परिप्रेक्ष्य को दर्शाती हैं जिसे तत्कालीन लेखकों, विचारकों ने अपने *angle* से देखते हुए बयान किया है।

इनमें महत्वपूर्ण घटनाक्रम जीवंत होकर हमारे सामने आया है। इतिहास के साथ तथ्य जुड़े होते हैं किन्तु इस इतिहास में तथ्य विशुद्ध यथार्थ के साथ समेकित होकर उकेरा गया है, यहां स्वयं का यथार्थवादी सत्य है, जिसके गवाह या यूं कह लीजिए, मुक्त भोगी स्वयं लेखक है। इनका यथार्थ, विशुद्ध तथ्यात्मक के साथ–साथ शब्दों में पिरोया गया सत्य है जो लेखक, विचारक के अपने ऊपर घटित घटना के परिणामस्वरूप, लेखनी बद्व हुआ है। शायद इस लिए यह घटनाक्रम ज्यादा जीवंत, गहन यथार्थ और आज के संदर्भ में मुक्त प्रासंगिक हो गया है। इस इतिहास को विरोधाभास अथवा इतिहास के साथ छेड़–छाड़ रूप में न देखे जाने का प्रबल आग्रह है।

प्रसिद्ध साहित्यकार 'यशपाल' की लेखनी से ये यथार्थवादी घटनाक्रम, 'जिन्हें उनके शब्दों में इतिहास नहीं माना जाना चाहिए, उनके स्वतन्त्रता संग्राम से जुड़े संघर्ष को क्रांतिकारियों के विचार परिप्रेक्ष्य से जोड़ते हुए गंभीर और व्यापक परिदृश्य में खुलकर बयां करते हैं।

शहीदे आजम भगत सिंह

आजादी का 75वां अमृत महोत्सव 76वें वर्ष में *slip in* होकर 77वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। इस महोत्सव का दूसरा नाम कर्तव्य काल भी है, अपने कर्तव्य के प्रति सचेत रहते हुए अधिकारों की बात करना ही उचित है, न्यायसंगत है, और यही इसकी थीम कही जा सकती है।

'मेरी माटी मेरा देश' स्लोगन इस कर्तव्य काल की आधारशिला कही जा सकती है। माटी से जुड़कर ही हमारे कर्तव्य पथ की राह *Clear Picture* के साथ हमें रास्ता दिखाती है। अभाव, अन्याय के खिलाफ लड़ने का साहस देती है।

इतनी भूमिकाएँ क्यों, क्या सिर्फ इसलिए कि हम "अमृत काल" में हैं, नहीं, हमारा ध्येय, मकसद सिर्फ कोरी लफ़्फ़बाजी नहीं है, बल्कि कर्तव्य पथ के इन चिरंतन राहगीरों की अनथक गाथा का फिर स्मरण कर, उस माहौल उस समय को जीना है, जिससे होकर ये कालखंड हम तक आज इस रूप में पहुंचा है। जो शायद नहीं हो पाता अगर महान स्वतन्त्रता सेनानियों की कुर्बानियाँ नहीं होती, या यूं कहे कि उस समय के *unsung Heros* की शौर्य गाथाएँ, पूरे दमखम के साथ ओजस्वी *Action* में घटित होकर अंतिम परिणाम रूप में हमारे सामने न आई होती।

इस पूरी वार्ता का सारांश हमारे महान वीरों की शौर्य गाथा को स्मरण कर श्रद्धा सुमन अर्पित करना है यहाँ हम बात कर रहे हैं महान क्रांतिकारी 'शहीद–ए–आजम' सरदार भगत सिंह की। यह वृतांत प्रसिद्ध लेखक यशपाल की लेखनी से निकले तथ्यों पर आधारित हैं। यशपाल और भगतसिंह लाहौर के नेशनल कॉलेज में एक साथ पढे थे। इस कारण उनके व्यवहार में निकटता उन्हीं के शब्दों में देखी जा सकती हैं :–

भगतसिंह के अधिकांश चित्रों में सिर पर केश और पगड़ी नहीं, हैट दिखाई देता है। भगतसिंह का जन्म सिख परिवार में हुआ था। भगतसिंह का परिवार साधारण किसान था, जिसे जाट कहा जाता है। किन्तु परिवार में कट्टरवादी रूढ़ियाँ नहीं थी। पिता के स्वतंत्र विचार होने के कारण बचपन में भगतसिंह के सिर पर लंबे केश नहीं थे। उनकी शिक्षा भी डीएवी स्कूल में हुई।

उनके दादा सरदार अर्जुनसिंह की सांप्रदायिक आस्था वैदिक धर्म आर्यसमाजी प्रणाली में थी। रूढ़िवाद से मुक्त पारिवारिक वातावरण में भगतसिंह ने तर्क, विद्रोह और साहस की दीक्षा पारिवारिक परंपरा से भी पाई। परिवार के स्वतन्त्रता और क्रांति के भाव ने भगतसिंह पर भी प्रभाव डाला।

"भगतसिंह का पुश्तैनी घर लाहौर से लगभग सात– आठ मील दूर सांडा गाँव में था। सुखदेव लयालपुर का रहने वाला था। भगतसिंह के परिवार का पुराना स्थान पंजाब के होशियारपुर जिले में था। चिनाब नदी की नहर बन जाने पर लयालपुर के रेतीले जिले में नई बस्ती बसने लगी। भगत सिंह का परिवार भी पैतृक स्थान में खेती की भूमि का अभाव अनुभव कर लायलपुर के एक गाँव में बस गया।

"भगतसिंह के व्यक्तित्व से जुड़े कुछ पहलू जो उनकी सकारात्मक और, ऊर्जसिवी मनोदशा को दर्शाते हैं :–

"वह मैट्रिक पास किए बिना और कुछ समय गुरुद्वारा आंदोलन वगैरह में लगाकर हमारा सहपाठी बना था। इस कारण वह पढ़ाई में, खासकर पाठ्यक्रम में दूसरे साथियों से अपने आपको कुछ पिछड़ा हुआ अनुभव कर रहा था। कक्षा में प्रोफेसरों से उसे डांट–फटकार भी काफी सुननी पड़ती थी। भगतसिंह के स्वभाव में सबसे बड़ी बात समय और परिस्थिति के अनुकूल सेट हो जाने की थी। पढ़ाई की अपनी कमी को पूरा करने के लिए वह विशेष यत्न कर रहा था, परंतु कक्षा में हम लोग यदि गुट बांधकर कोई शरारत करते तो वह पीछे नहीं रहता था।"

भगतसिंह से जुड़ी एक घटना का जिक्र करते हुए लेखक यशपाल कहते हैं, कि "एक दिन अवसर से मैं और भगतसिंह रावी नदी में नौका खेने का अभ्यास करने गए थे। हम दोनों ही थे, तीसरा कोई नहीं था। यह तो याद नहीं कि प्रसंग कैसे चला, परंतु एकांत देखकर मैंने भगतसिंह से एक बात पूर्ण विश्वास से कह डाली, "*Let us pledge our*

lives to our country" (आओ हम लोग अपना जीवन देश के लिए अर्पण करने की प्रतिज्ञा करें)। भगतसिंह ने सहसा बहुत गंभीर होकर अपना हाथ मेरी ओर बढ़ा दिया – "*I do pledge*" (मैं प्रतिज्ञा करता हूँ)। हाथ मिलने के बाद हम दोनों ही कुछ देर तक चप्पू चलना छोड़ निश्चल बैठे रहे उस समय सूर्यास्त हुआ ही था, आकाश पर लाली थी। अंधेरा होता देखकर हम लोगों ने नाव किनारे लगाकर मांझी को सौंप दी। लौटते समय भी हम लोग चुप ही रहे बोले नहीं। यह बात इतनी भावुकता से हुई थी कि उसकी याद बनी है।"

लिखने की ओर उनकी प्रबल रुचि थी। वे उर्दू में लिख सकते थे, उनकी लिखी छोटी रचनाएँ स्थानीय उर्दू पत्रों में भी प्रकाशित होती थी।

"सिनेमा देखने का शौक भगतसिंह को काफी था, परंतु टिकट के लिए दामों की कठिनाई रहती थी। पिता से सिनेमा के लिए तो क्या जूता तक खरीदने के लिए दाम मांगना उसे स्वीकार न था। घर के काम–काज के बारे में जब वह उनकी बात मानने को तैयार नहीं था तो खर्चा कैसे मांगता। समस्या का एक ही हल था कि जरूरतों की परवाह न करना और कभी साथियों की जेब में पैसा देख लेने पर उसका उपयोग कर लेता। एक दिन जयदेव गुप्त ने उसे सिनेमा दिखने का वादा कर लिया था। तब लोग सिनेमा चवन्नी के टिकट में ही देखते थे, परंतु चवन्नी का ही काफी मूल्य था। दो आने में तो घी चुपड़ी हुई तंदूर की दो बड़ी–बड़ी रोटियाँ और मामूली छुंकी हुई दाल–तरकारी का भोजन हो जाता था।

भगतसिंह को घी–दूध का शौक भी कम न था। अनारकली में कालू दूध–दही वाले के यहाँ सरदार किशनसिंह जी का उधार हिसाब चलता था। भगतसिंह जब चाहता वहाँ से दही–दूध खा पी सकता था और उसके साथ जो कोई हो, उसे भी खिला–पिला सकता था, परंतु किसी तंदूर या तवे पर उधार नहीं था। भगतसिंह सांडा (घर) जाने से कतराता था। रामकृष्ण ने ग्रेजुएट होकर मोहनलाल रोड पर एक छोटा सा होटल खोल लिया था। हम सब लोग खाने के लिए वही पहुँचने लगे थे। अपने लोगों में से कोई किसी समय खाना खा रहा हो और भगतसिंह पगड़ी के दोनों चोर दोनों कंधो पर लटकाए सामने से गुजर जाए तो वह होटल में चला आता। बिना किसी भूमिका के एक कुर्सी उठाकर वह साथ बैठ जाता और चपाती के बड़े टुकड़े का दोना बनाकर दाल के ऊपर तैरता हुआ घी एक ही बार में समेटकर मुंह में रख लेता। अगर राजाराम शास्त्री होटल में दिखाई दे जाए तो भगतसिंह जरूरी काम छोड़कर, भूख न होने पर भी उनकी कटोरी में से सब घी जरूर पी जाता। "देखो, अरे देखो, क्या कर रहा हैं अरे देखो तो इस जाट को!" शास्त्री जी हाथ फैलाये सहायता के लिए दुहाई देते रह जाते।

पंजाब में घी कुछ अधिक मात्रा में खाने का चलन था। उन लोगों को वह पच भी जाता था। एक दिन भगतसिंह से कुछ आवश्यक बात करते–करते मैं उसके गाँव सांडा पहुँच गया। भोजन का समय था। उसकी माँ ने कहा, पहले खा लो। एक बड़ी सी कटोरी में लौकी की तरकारी और थाली में बहुत सी बड़ी–बड़ी रोटियाँ उन्होंने हम दोनों के बीच रख दी। तरकारी में घी इतना था कि भगतसिंह भी घबरा गया। वह झुंझुला उठा, "माँ, इतना घी भी कोई खा सकता हैं। तुम तो तरकारी को बरबाद कर देती हो।"

भगतसिंह की माँ ने गाल पर उंगली रख मुझसे शिकायत की, देख तो इस लड़के को, कुछ खाता ही नहीं। जरा सा घी इसे नहीं भाता, तभी तो सुखकर कांटा हो रहा है।"

भगतसिंह के लंब–तंडग, हष्ट–पुष्ट शरीर की ओर संकेत कर मैंने कहा," अगर ये कांटा हैं तो मैं हूं ही नहीं।"

माँ को हंसी आई, परंतु स्नेह की गाली दे मुझे डांट भी दिया, धत् नालायक, बात कहनी भी नहीं आती। बच्चों को ऐसे नजर लग जाती है।"

मैं भगतसिंह के उस समय के अंग्रेजी ज्ञान का उदाहरण दे रहा था। जयदेव गुप्त ने संध्या समय भगतसिंह को साथ सिनेमा ले चलने का वायदा किया था। भगतसिंह जहां भी था, सिनेमा न चुकने के लिए भागा हुआ मकान पर लौट आया। देखा कि जयदेव लेटा हुआ कोई उपन्यास पढ़ रहा हैं। भगतसिंह ने अपने पाँव से जयदेव के पाँव पर ठोकर देकर चेतावनी दी, "अबे उठ सिनेमा का वायदा भूल गया?"

जयदेव ने लेटे ही लेटे चिढ़कर कड़े स्वर में डांट दिया, "अजीब जाहिल आदमी हैं, मेरी तबीयत खराब हैं इसे सिनेमा की पड़ी हैं। अभी डॉक्टर के यहाँ से लौट रहा हूँ। वह देख दवाई !" उसने मेज पर पड़ी बोतल की ओर संकेत कर दिया।

भगतसिंह ने नरमी से पूछा, "क्या हो गया तुझे?"

जयदेव ने गंभीर मुद्रा में उत्तर दिया, "डॉक्टर ने डिस्पेप्सिया बताया हैं।"

अंग्रेजी का यह शब्द सुनकर भगतसिंह चुप रह गया। सिनेमा न जा सकने की कलख तो मन में थी ही। चुपचाप डिक्शनरी उठाकर एक कुर्सी पर बैठ गया और डिस्पेप्सिया शब्द का अर्थ ढूंढने लगा। अर्थ देखकर उसने डिक्शनरी मेज पर पटक दी। उठकर एक लात और जयदेव की कमर पर जमायी और बांह से खींच उसे खड़ा कर दिया, "बदमाश! खा–खाकर बदहजमी कर ली हैं। काहिल पड़ा सो रहा हैं, और ऊपर से दवाई ठुसेंगा? डिस्पेप्सिया कहकर डराना चाहता हैं!"

जयदेव उलझता रहा कि उसका मन ठीक नहीं हैं, परंतु भगतसिंह की दलील थी, "तुझे बदहजमी हैं। शाम को तुझे खाना नहीं चाहिए इसीलिए तेरे पास जो पैसे हैं वह मुझे सिनेमा देखने के लिए दे दे। तुझे न जाना हो, मत जा।"

भगतसिंह के तत्कालीन अंग्रेजी ज्ञान की चर्चा इसीलिए की हैं कि अपने ही स्वाध्याय से उसने अंग्रेजी पर इतना अधिकार कर लिया था कि असेंबली बमकांड के समय उसने जो पर्चे फेंके थे और ट्रिब्यूनल के सामने अंग्रेजी में जो लिखित बयान उसने दिये थे, उनकी भाषा की प्रशंसा प्राय सभी लोगों ने की थी। कुछ लोगों ने कल्पना कर ली थी कि वे बयान भगतसिंह के नहीं वकीलों के लिखे हुए थे। इस कल्पना में कोई तथ्य नहीं हैं। अध्ययन भगतसिंह का स्वभाव था। जब भी देखों, उसके लंबे बेडौल कोट की जेब में कोई न कोई पुस्तक रखी ही रहती थी। नीरव सड़क पर चलता हो तो चलते–चलते भी पढ़ता रहता था।"

काकोरी कांड के बाद भगतसिंह ने लाहौर छोड़ दिया। उनकी आगामी योजनाएँ दिल्ली में रूपाकार लेने लगी। ऐसी एक बैठक 8 और 9 सितंबर 1928 को फिरोजाबाद किले के खंड़हरो में हुई और हिंदुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ बना। इसमें समाजवादी शब्द भगतसिंह और सुखदेव ने जोड़ा था।

कई ऐसी घटनाएँ हुई जिनमें भगतसिंह की स्वतन्त्रता संग्राम में क्रांतिकारी के रूप में भूमिका और प्रबल होती दिखाई देती है। साइमन कमीशन के भारत आगमन पर उसके विरोध में असंतोष का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया था। लाहौर में साइमन कमीशन के विरोध का आयोजन भगतसिंह की नौजवान सभा ही कर रही थी। नौजवान भारत सभा की पुकार थी, "अंग्रेज़ सरकार को हमारे भाग्य निर्णय का अधिकार नहीं है। वे कमीशन भेजने वाले कौन होते हैं?"

यह सभा लाला लाजपत राय की अगुवाई में लाहौर में हो रही थी," लाला लाजपत राय की मृत्यु से पूरा देश स्तंभित था। भगतसिंह ने सुझाया कि लाला जी पर आघात का, राष्ट्रीय अपमान का बदला लिया आए। केन्द्रीय समिति ने दिसंबर के पहले सप्ताह में लाहौर के 'मंज' मोहल्ले के एक मकान में फैसला किया कि चूंकि हमला करने का हुक्म स्काट ने दिया था, और लाठी साण्डर्स ने भारी थी अतरू दोनों को ही गोली मार दी जानी चाहिए। किन्तु उस समय स्कॉट लाहौर में था ही नहीं, अब केवल साण्डर्स पर ही हमला किया जाना था।

भगतसिंह के क्रांतिकारी जीवन से जुड़ी एक अन्य महत्वपूर्ण घटना असेम्बली बम कांड थी। लोकसभा को 1949 से पूर्व केन्द्रीय असेम्बली पुकारा जाता था।

"केन्द्रीय असेम्बली भवन में बम फेंकने का विचार यूं ही नहीं आया था। अंग्रेज़ सरकार उस समय विधानसभा में दो दमनकारी कानून, 'सार्वजनिक सुरक्षा कानून' और 'औद्योगिक विवाद कानून' बनाने वाली थी और इन कानूनों को लेकर जनता में प्रबल विरोध था। किन्तु बहुमत द्वारा इस कानूनों को अस्वीकार करने के बावजूद वाइसराय द्वारा दी गई आज्ञा से इन्हें कानून बना दिया गया था।

सरकार के कानों तक अपनी बात पहुंचाने के लिए केन्द्रीय असेम्बली में बम फेंकने तथा पर्चे बाटने का निर्णय लिया गया।

इस तरह आजादी की मशाल हाथ में लिए क्रांतिकारी अपने विजय पथ पर आगे बढ़ रहे थे। आजादी का ये संग्राम हमारे महान क्रांतिकारियों की आहुति का जिक्र किए बिना अधूरी है, शहादत महान वीरों की :–

"1929–30 और 39 में 'इंकलाब ज़िदाबाद' और 'भगतसिंह की जय', 'गांधी जी की जय' से कम सुनायी नहीं देती थी। कांग्रेस के सर्वसाधारण लोगों की गांधी जी से यह मांग थी कि सरकार से समझौते की शर्तों में भगतसिंह और उनके साथियों की फांसी की सजा रद्द की जाने की मांग भी रखी जाय। गांधी जी ने इस मांग को समझौते की शर्त बनाने से इनकार करके इस प्रसंग में वाइसराय से केवल प्रार्थना भर करना ही स्वीकार किया। जो भी हो, जनता को बहुत आशा थी कि उसकी भावना की उपेक्षा नहीं की जाएगी। भगतसिंह आदि की फांसी की सजा मनसुख हो जाएगी। सर्वसाधारण जनता को इस बात से भी विकट क्षोभ हुआ कि गांधी जी ने इस शहीदों को फांसी न दी जाने के प्रश्न को उचित महत्व नहीं दिया।

मार्च 1939 के अंत में कांग्रेस का अधिवेशन कराची में हुआ था। उस समय जनता गांधी जी द्वारा भगतसिंह और उसके साथियों की उपेक्षा के लिए अपना क्षोभ प्रकट किए बिना न रह सकी। इन शहीदों के शोक में कांग्रेस में गांधी जी को काले झंडे दिखाये गए और काले फूल भी पेश किए गए थे। गांधी जी ने विनय से काले फूलों को स्वीकार कर मान लिया था कि वे भगतसिंह को बचाने में असमर्थ रहे। सर्वसाधारण के लिए यह समझ सकना कठिन था कि जन–भावना के प्रतीक बन चुके भगतसिंह आदि की प्राण–रक्षा को समझौते की शर्त बनाने में गांधी जी असमर्थ क्यों थे।

"23 मार्च, 1939 को लाहौर जेल में भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी पर लटका दिया गया। इस अवसर पर देश भर में व्यापक शौक हड़तालें हुई। उस समय तक मुस्लिम लीग और कांग्रेस में ब्रिटिश साम्राज्यवादी खूब गहरी फूट डलवा चुके थी।

भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु तीनों ही अंतिम दिन तक पूर्ण रूप से स्वस्थ मानसिक अवस्था में थे। उन्हें संतोष था कि वे अपने उद्देश्य के लिए बलिदान हो रहे हैं। फांसी की कोठरी में भगतसिंह को केवल एक बात से कलख हुआ था। वह थी, उसके पिता सरदार किशनसिंह का पुत्र की प्राणभिक्षा के लिए अंग्रेज़ गवर्नर की सेवा में प्रार्थना–पत्र भेजना। गवर्नर ने तो वह प्रार्थना नामंज़ूर कर ही दी थी, परंतु भगतसिंह को यह बात बहुत अपमानजनक लगी थी। यह बात सुनकर उसने खिन्नता से कहा था– *My father has stabbed me in the back* (मेरे पिता ने मेरी पीठ में छुरी भोंक दी)।

इन लोगों की फांसी के लिए 24 मार्च, 1939 तारीख निश्चित हुई थी। अंग्रेज़ सरकार को आशंका थी की इस अवसर पर जनता जेल के सामने बहुत बड़ा प्रदर्शन कर सकती है और संभव है इन शहीदों के शव मांगकर उसका बहुत बड़ा जुलूस निकाला जाए। यह सब सरकार विरोधी भावना का ही प्रदर्शन होता। इन संभावनाओं का प्रतिकार करने के लिए गवर्नर की अनुमति से यह काम कुछ पहले ही निपटा देना उचित समझा गया।

उसी समय इस तीनों को नहाने के लिए पानी दे दिया गया। जेल का कायदा हैं कि मृत्युदंड पाने वाले को फांसी के हाते की ओर ले जाने से पहले नहाने के लिए पानी दे दिया जाता हैं। भगतसिंह को जेल के अधिकारियों में से ही किसी ने पहले सूचना दे दी होगी। जेल के निरीक्षण की बात पर मजाक करते हुए भगतसिंह ने धर्मपाल से यह भी कहा था, "तुम लोगों ने जो मीठे चावल भेजे थे, हम लोगों ने खा लिये। न खाते तो ठीक रहता।" फांसी के लिए निश्चित सुबह से पहली रात दंड पाने वाले प्रायः निराहार रखे जाते हैं ताकि फांसी के झटके से मल–मूत्र निकल जाने की संभावना न रहे। जयप्रकाश वगैरह ने उससे स्मृति के लिए कुछ चीजें मांग रखी थी। भगतसिंह ने कुछ समय पूर्व ही अपनी सभी चीजें हजामत का सामान, पेंसिल, बटन से लेकर दिया सलाई की खाली डिबिया तक बाँट दी थी, परंतु बड़े अफसरों को संदेह न होने देने के लिए चुप था।

यह आशा नहीं थी कि सरकार शहीदों के शवों का प्रदर्शन और उचित सत्कार करने केलिए इनके शरीर उनके सम्बन्धियों को दे देगी। लोग इस बात के लिए भी बहुत आशंकित थे कि सरकार शहीदों के शवों को कही दूर ले जाकर

इनके प्रति उपेक्षा या निरादर का व्यवहार न करे, इसीलिए लोग लाहौर से बाहर जाने वाली सभी सड़कों पर चौकसी रखे हुए थे। फिरोजपुर जाने वाली सड़क पर भगतसिंह की बहन अमरकौर कुछ साथियों के साथ थीं। आधी रात के लगभग पुलिस की गाड़ियों को फिरोजपुर की तरफ जाते देखकर इन लोगों ने अनुमान कर लिया कि शहीदों के शव सतलुज नदी की ओर, लाहौर से लगभग साठ–पैसठ मील दूर ले जाए जा रहे हैं। दिन निकलने तक बहुत से लोग सतलुज के रेल–पुल पर पहुँच गए। वहाँ तीन चिताएं जल रही थीं, परंतु पुलिस लौट चुकी थी। संध्या तक वहाँ खूब भीड़ लग गयी। उस स्थान से चिताओं की राख़ या अस्थियाँ आदि जो कुछ भी मिला, लोग श्रद्धा से उठा ले गए। बाद में मार्च 1947 तक वहाँ प्रतिवर्ष मेला लगता रहा। अब वह भाग पाकिस्तान में हैं।

अफवाहों के निराकरण के लिए सरकार ने उसी रात विज्ञप्ति प्रकाशित की थी कि भगतसिंह की अन्त्येष्टि संस्कार सिख विधि से करने के लिए एक ग्रंथि (सिख पुरोहित) तथा सुखदेव और राजगुरु के लिए एक ब्राह्मण पुरोहित को नियुक्त किया गया था। उनकी चिताएँ भी नदी के किनारे उचित स्थान पर बनायी गयी थीं।"

जीवन से उपराम होकर शांति के लिए मृत्यु की शरण चाहना वीरता नहीं हैं। भगतसिंह और उनके साथी न जीवन से खिन्न थे, न उनकी मानसिक अवस्था दुर्बल थी, और न वे जीवन से घबराकर शांति के लिए मृत्यु चाहते थे। उनका लक्ष्य मानवता का कल्याण था। मानवीय अधिकारों को पाने का कर्तव्य पूरा करने के लिए उन्होंने मृत्यु को स्वीकार किया था। इस परिस्थिति का सामना उन्होंने स्वस्थ, सम मानसिक अवस्था से किया। यही उनकी वीरता थी और यही इस लेख का परम ध्येय भी हैं। समस्त मानव जाति जो समरसता, प्रेम, स्वतंत्र विचारधारा में विश्वास रखती है, महान शहीदों के ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकती।

शत–शत नमन !

चारू तिवारी
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

चन्द्रशेखर आजाद - एक व्यक्तित्व परिचय

'कर चले हम फिदा जान ओ तन साथियो, अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो' 'सन् 1964' की प्रसिद्ध वार फिल्म 'हकीकत' का ये गाना हमारे दिलो –दिमाग को उद्वेलित कर गहन देश प्रेम की भावना से भर देता हैं। 'आजादी के मतवाले' सीरीज में चंद्रशेखर आजाद का जिक्र हल्के में नहीं किया जा सकता, उसके लिए तो मातृ–भूमि से ओत–प्रोत वह गहन देशप्रेम का भाव–विमोचन चाहिए, जिसके वशीभूत हो हमारे मतवाले सिपाही अपना जीवन उत्सर्ग करते चले गए। विराट विचारों से ओत–प्रोत उनका व्यक्तित्व थोड़ा भी विचलित हुए बगैर अपने पथ पर लगातार अडिग रह स्वतन्त्रता की पताका अपने हाथों में पकड़े रहा। इस लेख में लेखक यशपाल की कलम से चन्द्रशेखर आजाद के व्यक्तित्व से जुड़े कुछ पहलुओं का वर्णन किया गया हैं।

इन पहलुओं के साथ तादातम्य स्थापित करते हुए पाठक गण के साथ–साथ समस्त वर्तमान परिदृश्य भी उस ओजस्वी योद्धा के व्यक्तित्व से अभिभूत हुए बिना नहीं रह पाएगा। बचपन से ही दृढ़ संकल्पी आजाद बहुत पहले ही अपने जीवनपथ के उद्देश्यों को समझ गए थे।

आजाद का जन्मस्थान मध्यभारत की झाबुआ तहसील का भावरा ग्राम था। उस समय यह गाँव अलीराजपुर रियासत के अंतर्गत था। आजाद के पिता का नाम पंडित सीताराम तिवारी था और माता जगरानी देवी थीं। तिवारी जी की आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं थी इसलिए उन्नाव जिले में अपने बहनोई शिवनंदन और रामप्रसाद मिश्र के यहाँ रहते थे। बहुत निस्पृह और निष्ठावान ब्राह्मण थे। स्वभाव काफी तीखा और किसी की बात न सहने वाला था। किसी बात से चिढ़कर उन्नाव छोड़कर अलीराजपुर चले गए थे। वहाँ उन्होंने रियासत के एक बाग की रखवाली का काम आठ–दस रुपए मासिक पर कर लिया था। उस समय रियासतों में ऐसी ही तनख़्वाहें हुआ करती थीं। अन्न–वस्त्र भी सस्ता था।

बचपन में आजाद भी बच्चे ही तो थे। खाने–खेलने का शौक भी था, खाने में उन्हें गुड बहुत पसंद था और खेल था, देसी बारूद भरकर खिलौने की तोप चलाने का, पर इस खेल के लिए पैसे काफी न मिलते थे। एक दिन आजाद ने बाग को अपना ही समझ कुछ फल तोड़ गुड और बारूद के लिए बेंच दिए। पिता की दृष्टि में यह अक्षम्य अपराध था। आजाद पर इतनी मार पड़ी कि माँ का कलेजा दहल गया और आजाद के स्वाभिमान ने उस घर में रहना ही स्वीकार नहीं किया। पढ़ने की भी इच्छा थी। माँ ने बहुत यत्न से बचाकर रखी हुई अपनी पूंजी, ग्यारह रुपए आजाद को दे दिए। आजाद भागकर वेद के केंद्र काशी में पहुँच गए। वहाँ वे एक क्षेत्र में रहकर 'लघुकौमुदी' और 'अमरकोश' रट रहे थे कि कांग्रेस के सविनय कानून भंग आंदोलन उन्हें आकर्षित कर लिया। उस समय उनकी उम्र तेरह–चौदह या पंद्रह वर्ष रही होगी।

कांग्रेस के सविनय–कानून–भंग आंदोलन में गिरफ्तार होकर जब वे अदालत में पेश किए गए तो उनके हाथ अभी इतने छोटे थे कि बंद हथकड़ियों मे से निकल आते थे। आजाद हथकड़ियों से हाथ निकाल–निकालकर पुलिस वालों को चिढ़ाने में मजा लेते थे। परिणाम में उनके दोनों हाथों को मिलकर हथकड़ी जड़ दी गयी। अदालत में मैजिस्ट्रेट ने उन्हें तिरस्कार से डाँटा 'अभी हाथ भर का तो हैं नहीं, चला हैं आंदोलन करने ! वाला भाग जा ! आजाद ने मैजिस्ट्रेट को फटकार दिया। कानूनन आजाद को उस आयु में जेल की सजा नहीं दी जा सकती थी इसलिए ब्रिटिश न्याय की रक्षा के लिए तैनात मैजिस्ट्रेट ने उन्हें जेल में ले जाकर बेंत लगाकर छोड़ देने की सजा दे दी।

तेरह–चौदह वर्ष के आजाद को इस प्रकार बारह बेंत लगाए गए। आजाद हर बेंत की चोट पर 'वंदे मातरम् !' और 'महात्मा गांधी की जय'! पुकारते रहे।

आजाद बेंतों की सजा पाकर जेल से छूटे तो आन्दोलन में और भी तत्परता से भाग लेने लगे। उसी समय उनका संपर्क काकोरी दल के लोगों, मन्मथनाथ गुप्त आदि से हो गया। काकोरी की प्रसिद्ध साहसपूर्ण रेल डकैती में सरकारी खजाना लूटने में आजाद ने भाग लिया था। गिरफ्तारियाँ आरंभ होने पर आजाद फरार हो गए। लड़कपन में भी वे खूब चुलबुले और फुर्तीले थे इसलिए साथी उन्हें 'क्विक सिल्वर' (पारा) के उपमान से पुकारते थे।

आजाद ने बचपन में पढ़ पाने की इच्छा के अतिरिक्त अपने जीवन में कभी कोई व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा नहीं बनाई। उस समय की अपनी सूझ–बूझ और उस समय की परंपरा में आस्था के कारण उन्होंने शिक्षा का अर्थ समझा था–संस्कृत।

उनकी कल्पना में अपने जीवन की परिणति यही थी कि किसी न किसी दिन विदेशी सरकार की पुलिस से लड़ते हुए मारे जाएंगे। यह भी ख्याल नहीं था कि गिरफ्तार हो जाएंगे तो अदालत में अपने बयानों से ही लड़ेंगे। बहुत स्पष्ट और दृढ़ इरादा था कि लड़ाई में मरना ही हैं। सदा ही कहा करते थे, "गिरफ्तार होकर अदालत में हाथ बांधे बंदरियाँ का नाच मुझे नहीं नाचना हैं। आठ गोली पिस्तौल में है और आठ का दूसरा मैगजीन साथ हैं। पंद्रह दुश्मन पर चलाऊँगा। और सोलहवीं यहाँ।" और वे अपनी पिस्तौल की नली अपनी कनपटी पर छुआ देते थे।

आजाद से जुड़े अंतिम दिन का घटनाक्रम (ये बयानी लेखक यशपाल की कलम से निकली हैं) :–

– 27 फरवरी 1931 की सुबह सुरेन्द्र पांडे और मैं स्वेटर खरीदने के लिए कटरा से चौक जाने के लिए तैयार थे। आजाद ने कहा, "मुझे एलफ़्रेड पार्क में किसी से मिलना हैं। साथ ही चलते हैं। तुम लोग आगे निकल जाना।"

"हम तीनों एलफ़्रेड पार्क के सामने से साइकिलों पर जा रहे थे। एक साइकिल पर सुखदेव राज पार्क में जाता हुआ दिखाई दिया। मैं समझ गया कि भैया को राज से मिलना हैं। हम दोनों से वे प्रायः अलग अलग ही मिलते थे। भैया पार्क में चले गए और पांडे और मैं सीधे चौक की ओर।

चौक में हम लोगों ने आवश्यक दवाइयाँ ले ली। एक दुकान से हम लोगों ने दो स्वेटर खरीदे ही थे कि लोगों को चिल्लाते हुए सुना, "कंपनी बाग (एलफ़्रेड पार्क) में पुलिस के साथ किसी की जबर्दस्त गोली चल रही है।"

पांडे ने उन लोगों को सम्बोधन कर घबराहट से पूछा, "क्या हुआ? किससे गोली चली?"

एलफ़्रेड पार्क में गोली चल जाने की बात सुनकर मेरा भी मन काँप उठा, परंतु पांडे का हाथ दबाकर मैंने कहा, "*Don't be excited* (उत्तेजित मत हो)!" हम लोग समझ गए कि एलफ़्रेड पार्क में पुलिस की गोली किससे चली होगी। पांडे को तो मैंने उत्तेजित न होने के लिए कहा पर स्वयं ही खलबला उठा था। अपनी साइकिल घुमाते हुए मैंने पांडे से कहा," मैं वही जा रहा हूँ।"

"जरा सुनो!" पांडे ने साइकिल का हैंडल थामकर बोला, " खबर यहाँ तक पहुँचने तक तो सब कुछ हो चुका होगा। तुम भी समझ से काम लो। वहाँ जाकर क्या करोगे? अब वहाँ जाकर अपने आपको पुलिस के हाथों सौप देना ही होगा।"

बात पांडे की ठीक थी, परंतु ऐसे जान पड़ा कि अंधेरा सा छा गया हो। फिर भी हम लोग रह नहीं सके और कुछ चक्कर देकर उस ओर गए ही। पुलिस लोगों को पार्क के भीतर जाने से रोक रही थी। पार्क के गिर्द सड़कों पर बहुत भीड़ जमा थी। भीड़ के अनुसार लोगों की बातों से निश्चय हो गया कि गोली क्रांतिकारियों और पुलिस में चली थी। भीड़ के अनुसार क्रांतिकारी दो थे, और पुलिस के साथ–सत्तर सिपाही। क्रांतिकारी एक पेड़ के नीचे बैठे बात कर रहे थे। पुलिस ने उन्हें सब ओर से घेरकर ललकारा। दोनों ओर से गोली चलने लगी।"

"लड़ाई के समय मौजूद लोगों का कहना हैं दोनों क्रांतिकारियों में से एक जख्मी होकर लड़ता रहा। दूसरा भाग गया। लड़ने वाले ने आखिरी गोली अपनी कनपटी पर मार ली। उसके गिर पड़ने पर भी पुलिस ने तुरंत उसके समीप आने का साहस न किया। कई गोलियां उसके शरीर में मारकर निश्चय कर लिया कि वह निष्प्राण हो चुका हैं। पुलिस शरीर को अपनी गाड़ी में उठाकर ले गयी।

इलाहाबाद के राष्ट्रीय भावना रखने वाले और कांग्रेसी लोग आजाद का अंतिम संस्कार उचित ढंग से करना चाहते थे। नेहरू जी की पत्नी स्वर्गीय कमला नेहरू और बाबू पुरषोत्तमदास जी टंडन ने भी अंतिम संस्कार के लिए आजाद का शरीर पुलिस से पाने का बहुत यत्न किया। पुलिस प्रदर्शन की आशंका में उनका शरीर देने में आनाकानी कर रही थी। अंत में एक व्यक्ति को आजाद के भाई के रूप में उनके शव की मांग करने के लिए पेश किया गया। आजाद का शरीर मिलने

पर पाया गया कि उनकी दांयी कनपटी पर गोली का घाव था और घाव के चारों ओर के बाल जले हुये थे। यह इस बात का प्रमाण था कि कनपटी पर रखकर गोली मारी गई। संस्कार गंगा तट पर किया गया। शव का जुलूस न निकाले जाने की खास ताकीद थी फिर भी अर्थी के साथ बड़ी संख्या में लोग एकत्र हो गए थे और चिता की भस्म को चुटकी–चुटकी श्रद्धा से उठा ले गए।

एलफ्रेड पार्क में जिस वृक्ष के नीचे आजाद ने वीरगति प्राप्त की थी, घटना के दूसरे दिन से बहुत से लोग क्रांतिकारी राष्ट्रीय वीर की स्मृति में उस पेड़ की पूजा करने लगे। पेड़ के तने में बहुत सी गोलियां धंस गयी थी। श्रद्वालु लोगों ने पेड़ के तने पर सिंदूर पोत दिया और वृक्ष के नीचे धूप–दीप जलाकर फूल चढ़ाने लगे। शीघ्र ही वहाँ पूजा करने वालों की भीड़ अधिक हो गयी। ब्रिटिश सरकार, को यह असह्य था। सरकार ने वह पेड़ कटवा दिया, परंतु जनता तभी से एलफ़्रेड पार्क को आजाद पार्क पुकारने लगी थी"।

एलफ़्रेड पार्क की चर्चा चलने पर उनके साथी ने बताया था कि आजाद ने ही उससे कह दिया था, "मैं तो लड़ूँगा, तुम बचने की कोशिश करो।"

उस समय उत्तर प्रदेश में पुलिस का इंस्पेक्टर जनरल हालिन्स था। हालिन्स ने अंग्रेजी पत्रिका *'Men Only'* के अक्तूबर 1954 के अंक में भारत में अपनी नौकरी के संस्मरणों में आजाद और पुलिस की इस लड़ाई का जिक्र किया हैं। इस लेख के अनुसार सिपाही बाड़ की झाड़ियों के पीछे छिपकर आजाद और उनके साथी पर गोलियां चलाने लगे। पुलिस इंस्पेक्टर विशेसवारसिंह निशाना लेने के लिए झाड़ी के ऊपर से झांक रहा था। उस समय तक आजाद के शरीर में दो–तीन गोलियां धंस जाने से खून बह रहा था। ऐसी हालत में भी आजाद ने इंस्पेक्टर के झाँकते हुए चेहरे का निशाना लेकर जो गोली चलाई उससे विशेसवारसिंह का जबड़ा टूट गया। हालिन्स ने अपने संस्मरण में आजाद के इस निशाने की प्रशंसा करते हुए लिखा हैं, 'और आगे क्या हुआ, यह इतिहास में दर्ज हैं। यह आजाद का अंतिम परंतु बहुत प्रशंसा के योग्य निशाना था।'

घटनाओं के विवरण में दृष्टिकोण का बहुत बड़ा हाथ हैं, 1931–32 में यू पी के इंस्पेक्टर जनरल पुलिस होलिन्स ने अपनी पुस्तक *No Ten Commandments* में चन्द्रशेखर आजाद जी की शहादत का वर्णन एक दुस्साहसी क्रांतिकारी के रूप में किया हैं।

हम हॉकिन्स की बात से पूरा इत्तफाक रखते हैं। आजाद की शहादत, उनकी वीरता, मनोबल, देश के लिए सब कुछ कुर्बान करने का भाव, इतिहास में उन्हें बहुत ऊंचे स्थान पर बैठा देता हैं। इस ओजस्वी क्रांतिकारी के ऋण से भारतवर्ष कभी उत्कृ्ण नहीं हो सकता।

श्रेद्धय सुमन।

संकलन–
राजभाषा अनुभाग

हम मतवाले नौजवान

आजादी के ज्ञात–अज्ञात मतवाले योद्धाओं को समर्पित यह लेख हमें हमारे कर्तव्य की याद भी दिलाएगा। इतने यत्नों से संजोई गई 'आजादी' के मर्म को समझने, उसे बनाए रखने के महत्वपूर्ण योगदान में हमें अपनी भागीदारी से पीछे नहीं हटना है। यह काल क्रम के अखंड भेद का भेदन उसके समय की मांग है। पुरानी परम्पराओं, मान्यताओं, धारणाओं को सिरे से खारिज करना कहीं भी श्रेयस्कर नहीं है। अतीत की कड़ी को वर्तमान में पिरोते हुए ही सही, सार्थक भविष्य के निर्माण का ताना–बाना बुना जा सकता है।

हम मतवाले नौजवान, आजादी के प्रहरी, सरहदों पर तैनात, देश की भूमि पर तैनात, हरदम चौकस। हमें गिला नहीं किसी से, बदले का वर नहीं चाहिए। इन पंक्तियों को उद्धत करने का उद्देश्य 1947 से पूर्व की लड़ाई में शामिल नौजवानों की स्थिति दर्शाता है। उस समय जब इस लड़ाई में पूरा देश शामिल था नौजवानों की भूमिका का वर्णन करना तो बनता है। वैसे भी हम इस वर्ष आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे है। इस अवसर पर प्रस्तुत प्रसिद्ध साहित्यकार अमरकांत द्वारा लिखित उपन्यास 'इन्ही हथियारों से' के कुछ अंश प्रस्तुत कर रहे हैं। इन अंशों को यहाँ प्रस्तुत करने का प्रयोजन उस समय की परिस्थितियों से आज के पाठक को अवगत कराना है। उस समय जिन परिस्थितियों में अँग्रेजी अधिकारियों द्वारा यातना ग्रहों में इन नौजवानों के हौसले तोड़े जाने का कुप्रपंच रचा जाता था उन्हें उपन्यास की पृष्ठभूमि में बेहतर ढंग से समझा जा सकता है।

'क्या आप बलिया जिले के मंगल पाण्डे को भूल गए ? गुलाम हिंदुस्तान में ब्रिटिश सत्ता को चुनौती देने वाली सन 1857 की क्रांति की पहली चिंगारी। 30 जनवरी, 1831 ई. को जन्म हुआ था मंगल पाण्डे का। बैरकपुर रेजीमेंट के मंगल पाण्डे के अंदर अँग्रेजी राज्य के प्रति बगावत की भावना मचल रही थी और 29 मार्च, 1857 को बैरकपुर परेड स्थल पर उसने उस भावना को अमली जामा पहना दिया। बलिया के उस बहादुर सैनिक ने किस तरह अंग्रेजों की सत्ता को चुनौती दी, कइयों को धराशायी किया और अंत में वीरतापूर्वक फांसी के फंदे पर झूल गया, यह भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की ऐसी कहानी है, जिस पर हम अभिमान करते है और जो स्वर्णाक्षर में लिखी जाने योग्य है।

'08 अप्रैल का ऐतिहासिक दिन था। बैरकपुर के जल्लादों ने मंगल पाण्डे को फांसी देने से इंकार कर दिया था तो कलकत्ता से जल्लाद बुलाकर उनको फांसी पर लटकाया गया। याद रखिए कि हिंदुस्तान के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम से जो प्रथम चिंगारी बलिया के वीर सैनिक मंगल पाण्डे की बंदूक से निकली, वह समूचे देश में फैल गई। हर जगह बगावत की लपटें ब्रिटिश हुकूमत को खाक करने के लिए उठने लगी। मंगल पाण्डे सिर्फ बलिया के ही नहीं बल्कि हमारे देश के प्रथम स्वतन्त्रता सेनानी और शहीद है, जिन पर हर हिंदुस्तानी को गर्व है। आज मंगल पाण्डे की शहादत पुकार रही है कि आप आगे बढ़कर इस विदेशी हुकूमत को जड़ से उखाड़कर समुन्द्र में फेंक दे। फिर आया महात्मा गांधी द्वारा छेड़ा गया सन 1921 ई. का असहयोग आंदोलन, जिसमें लोगों ने खुलकर भाग लिया।

ये तो रही बात स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि और उस समय की सामाजिक स्थिति की। अब हम पाठकों का ध्यान उस समय स्थित नौजवानों की मनोदशा, उनका परिवेश, उनके विचार और विचारों से जूझते उनके अभिभावकों के संघर्ष की ओर खींचते हैं।

इस उपन्यास का नायक "नीलेश" जो 18–19 वर्ष के आयु वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, समव्यस्कों, बड़ी महिलाओं के साथ अपने समय की लड़ाई लड़ता है। अपने आदर्शवादी किन्तु व्यवहारिकता में थोड़ा पीछे, नीलेश बिल्कुल व्यवहार्य परिस्थितियों में *surrender* कर देता है, जो उसके पड़ोस में रहने वाली उसकी समवयस्क पात्र 'नम्रता' को बिलकुल पसंद नहीं आता। उसकी झलक उपन्यास में यत्र–तत्र देखी जा सकती है।

"सोलह की उम्र पार करते ही जब नीलेश आठवीं से नवीं कक्षा में पहुंचा तो बाहर की दुनिया के साथ उसके अंदर भी अनेक परिवर्तन हो रहे थे। शर्म से चुप रहने लगा और कई उलझनों का शिकार भी हो गया। तभी उसकी मुलाक़ात गोबर्धन, नफीस और दयाशंकर से हुई थी। वे सदा देश की आजादी और क्रांतिकारियों की बातें करते। उनसे कई पुस्तकें

पढ़ने को मिली, जिनमें गांधीजी की आत्म–कथा, क्रांतिकारियों की जीवनियाँ, कुछ उपन्यास और ब्रह्मचर्य, हठयोग, आसन, प्राणायाम विषयों पर कुछ पुस्तकें थी। गांधीजी की पुस्तक का गहरा असर पड़ा उस पर। सत्य की खोज कैसे उनको जनता और आजादी के संघर्षों के बीच ले गई? एक साधारण आदमी जुल्म–अन्याय का कैसे प्रतिरोध कर सकता है?

नम्रता एक आदर्शवादी किन्तु वर्तमान परिस्थितियों से पूर्णतया चौकस, व्यवहारिकता को समझकर सही हल खोजने में विश्वास रखने वाली लड़की है। यहाँ इस बात से इंकार नहीं करना चाहिए कि नम्रता के आत्मविश्वास सही बात करने में निडरता में परिवार का भी योगदान अमूल्य है। उसके माता–पिता ने बचपन से ही उसे सही गलत का फैसला करने, गलत बात का विरोध करने, आगे बढ़कर अपने निर्णय को कार्यान्वित करने की शक्ति का अधिकार लेने का साहस दिया है। माता–पिता का यह महत्वपूर्ण भूमिका हम आज भी नकार नहीं सकते।

नम्रता की हालत कुछ अलग है। अनेक तरह के द्वंद्व है उसके भीतर। एक स्तर पर वह अपने से लड़ रही है निजी स्वतंत्र एवं नूतन व्यक्तित्व के लिए तथा दूसरे स्तर पर समाज की जड़ स्थितियों से सम्पूर्ण नारी जाति की अस्मिता और गरिमा के लिए उसके अंदर एक आँधी की शुरुआत पहले ही हो चुकी थी"।

यह तो थी स्थिति नम्रता और नीलेश के मन की। आइए अब जायजा लेते हैं उस समय की सामाजिक परिस्थितियों और उसमें शामिल सामाजिक ताने –बाने का।

"शहर में चारों ओर शोर था। असंख्य लोगों की पगध्वनियाँ, बातचीत, हंसी, कहकहे, इधर–उधर भटके साथियों को पुकारने की आवाजें। घरों या बाहर बच्चों की थप–थप दौड़ या चीखना–चिल्लाना। खाना बनानेवाली ग्रहिणियों का हटर–हटर बतियाना, पुकारना, हिदायतें देना। उकड़ू या पीढ़े या बोरे पर बैठी असंख्य ग्राहिणियों के हाथ आटा की लोइयाँ बेलते एक साथ संचालित हो रहे हैं। चूड़ियाँ खनक रही हैं, वृक्ष हिल रहे हैं जिसके बीच सम्बद्ध–असम्बद्ध बातों के मधुर, छोटे टुकड़े, स्वेद–शोभित तपतमाए मुख से निकलकर तैर रहे हैं। और इन सब में और अलग भी, अनगिनत अनुभवहीन नौजवानों तथा उत्साही कार्यकर्ताओं के घरों और तहसील स्कूल के बीच आने जाने की आवाजें, त्वरित बड़–बड़, प्रबंध संबंधी मतभेद या गड़बड़ी होने पर आपसी नोक–झोंक, बहसें और झल्लाहटें।

इसके बाद भोजन शुरू हुआ, जो देर तक जारी रहा। चपड़–चपड़, खाना, गला खंखारना, खानेवालों का मांगना और खिलानेवालों का पूछना, पानी पीकर डकारना, उठकर हँसते–खिलखिलाते हुए जाना। हर आवाज अलग थी, फिर भी सभी आवाजें मिलकर एक बड़ी आवाज बनकर उठती हुई आकाश में टंग गई थी। राष्ट्रीय एकता, संघर्ष और विजय के उल्लास एवं उत्सव का जनस्वर।"

संक्षेप में, स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान पैदा हुई पीढ़ी ने अपने स्तर पर इस संग्राम में अपना भरपूर योगदान दिया। जीवन के सभी चरणों से जुड़े कर्तव्य बोध, मूल्य संरक्षण का दायित्व गंभीरता से निभाया। आज की पीढ़ी भी कहीं न कहीं इन्ही बदलते मूल्य तारतम्य में आने वाले नए कल को *adjust* करने का संघर्ष कर रही हैं और यही हर पीढ़ी का स्वभाव है, जिसे हल करते रहना ही समय की मांग है।

इति!

भल्ला राम मीना
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

यथार्थ जीवन मूल्य - आनंद

आनंद मिलता हैं हमें––––
वासुदेव की गीतों में,
ईशस्तवन की भूपाली में,
तुलसी पूजा के मंत्र में, कृष्ण बांसुरी
की मधुर सूरों में,
तन मन को शांत करने वाले भक्ति गीतों में
गणपति बप्पा की आरती में
मन सरस्वती की पूजा में,
आनंद मिलता हैं हमें––––
सूरज की किरणों से सारी सृटि तेजोमय होती है तो,

अंधकार को खोकर जग सुंदर होता हैं तो,
कोयल की कूक और चिड़ियों की चहकती आवाज हो तो,
मस्त पवन की झोको ने अंगड़ाई ली तो, लहराती फसलों ने अंबर का मुख चूम लिया तो
रवि ने जब अपनी आभासे स्वर्ण रश्मि का बिगुल बजाया तो।
''आनंद मिलता हैं हमें––––
संगीत के सप्तसुरों को सुन लें तो, इंद्रधनुष के सप्तरंग को अपनी आँखों में भर लिया तो,
तांडव करते शिव संसार को देख लिया तो
घुंघुरू की झंकार ढोलक की ताल सुनें तो,
नटराज की नृत्य करते हाथों की मुद्राभिनय देखें तो,
''आनद मिलता हैं हमें–––––– माता पिता की सेवा करने में,
पिता अपने सर पर हाथ रखे हैं तो,
माँ खुश होकर हसती हैं तो माँ का चेहरा देखने में,
दोस्तों के साथ सृष्टि की सैर करने में, गगन में काले बादल छा जाएं और सावन की वर्षा हो तो, कागज की नाव बनाकर पानी में बहाए तो,
''आनंद मिलता हैं हमें–––––
अपनों के सुख दुख में समा जाये तो, अपनों के साथ खुशी के वक्त बिताएँ तो,
त्योहार मनाने के लिए अच्छे वक्त का इंतजार करने में,
अपनों को दिया हुआ वादा निभाने में, कठिन मार्ग को चुनकर कड़ी मेहनत करने में,
भूतकाल को वर्तमान पर हावी होने न देने में,
जीवन के ध्येय को पाने की कोशिश करने में,
''आनंद मिलता हैं हमें––––
गर्व से हमारा राष्ट्रगीत बोलने मे,
अपने देश से प्यार करने में,
हमारे सैनिकों का सम्मान करने में सैनिको को शान से सलाम करने में, अपनी मातृभाषा पर गर्व करने में , देशभक्ति पर गीतों को ध्यान से सुनने में,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों गीत को महसूस करने में। जन–गण मन राष्ट्रगान में डूब जाने में झण्डा ऊंचा रहे हमारा, तिरंगा गीत, देशभक्तों को सर झुकाकर नमन करने में आनंद मिलता है हमें–––

राजश्री माणिक रसाल
छावनी बोर्ड पुणे

'लक्ष्य'

यह जीवन एक जंग हैं,
हम हार क्यों मानेंगे।
जब तक न जीतेंगे
मैदान हम न छोड़ेंगे,
पा लेंगे मंजिल अपनी आसमान को छू लेंगे।
रच देंगे नया इतिहास प्यार से सब को मनाएगे,
आशा और विश्वास के साथ
'' अपने लक्ष्य को पाना हैं———————
रख संयम कठिनाइयों में पग पग आगे बढ़ना हैं,
डटा रहे वही विजेता यही जगत की सच्चाई हैं।
मुश्किल होगा जीवन सफर भरोसा खुद पर करना हैं,
राह में साथ न मिले तो जीवनपथ पर अकेले ही चलना हैं।
पूरी तरह समर्पित होकर कोशिश के साथ
'' हमें लक्ष्य को पाना है————————— सुख दुःख की धूप छाव में मेहनत से आगे बढ़ना हैं,
मंजिल को पाने की खातिर संघर्ष को अपनाना हैं।
नींव जमीं से बनाकर उड़ना आसमान में हैं,
जज्बे की उड़ान के साथ इस जग पर छा जाना हैं।

''हमें अपने लक्ष्य को पाना हैं——————
हिम्मत हौंसला बुलंद हो तो जोश जब्बा भरपूर,
मंजिल पाने की लगन हो तो मिलती सफलता जरूर
तूफानों का करे मुक़ाबला थोड़ा धीरज धर कर,
संदेश अर्जुन को कृष्ण ने दिया था चलना उसी मार्ग पर।
अपनी मेहनत से हमको अपना मुकद्दर बनाना हैं,
असफलता रुकावट को तोड़कर।
''हमें अपने लक्ष्य को पाना हैं————————— देख लेगा जमाना हमे, हम किसी से कम नहीं,
चाह हमको हैं, जहां उड़ेंगे हम वही। जीवन संघ र्ा के महासमर में हिम्मत हौंसला धरना हैं,
होगी परीक्षा भी, होगी समीक्षा भी लेकिन
''हमें अपने लक्ष्य को पाना हैं ——————— कड़ी मेहनत ठोस इरादे मन मे जिनके प्रीत हैं,
बढ़ते रहो पथ पर पथिक भय के आगे जीत हैं।
आंधियों में पालने वाले संघर्ष जिनका गीत हैं, साहसी सदा सुखी रहता वक्त की यही रीत हैं
मन हो न हताश कभी आस का दीप जलाना है
हमे अपने लक्ष्य को पाना हैं ....

राजश्री माणिक रसाल
छावनी बोर्ड, पुणे

इंतजार है मुझे...

इंतजार हैं मुझे मेरे 'माँ' ही रहने का .....
न कि माँ से 'मदारी' बनने का.......
पति–बच्चे–सास के इशारो पर न नाचने का, इंतजार हैं मुझे!

कोई देता नहीं पैसे, घुमाने पर 'अपेक्षा' की थाली...
मेरा कर्तव्य देखकर, खुश होकर कोई भी नही बजाता 'ताली' !!
'कलियुग' खत्म होने का तो पता नहीं
मन में घुसा 'कली' खत्म होने का इंतजार हैं मुझे !
कौन सभालेगा इस माँ को?
जो खाती हैं घर के ही लोगों के बर्ताव से धोखा....
फिर भी हर–बार ढूंढती हैं उनके ही खुशी का मौका.....!
इंतजार है मुझे, कब ढूंढेगी तू अपना खुद का जहांन .....
कब छोड़ देगी जताना–बनना सब की नजर में महान...!
कब तू अपने खुद को आशीर्वाद देगी कि, 'चिरंजीवी भव...
अपनी हड्डियों को भरपूर पोषण देगी, कम न होने देगी लोड....!
ए, मुझमे बसी माँ, मत थका ज्यादा तेरी इतनी सी जान को
कर्तव्य पूरा करते–करते संभालना हैं खुद की तबीयत को ...
अगर तुझे 'गंभीरता' से लड़ने के लिए रहना हैं खड़ा.....
तो नियमित रूप से 'हैल्थचेकअप' का वादा करना होगा बड़ा...!
इंतजार हैं मुझे, कि कब तू खुद कि 'त्याग' कि लेवल/सीमा तय करेगी?
ढलती उम्र तक सोच न पाई, अब तो अपनी 'बकेट लिस्ट' पूरी करेगी...!
कब तू आसानी से खुली सास लेगी?
न कि, लाफ्टरक्लब जैसी झूठी–झूठी हंसी से मन बहलाएगी...!
इंतजार हैं मुझे, मेरे मन से हर डर मिट जाने का...
हर एक के स्पीड पर, मोबाइल पर, नेट पर मन से पाबंदी आने का...!
अकेलापन इस न चाहनेवाले मित्र को आसपास भी मत भटकने देना....
अपने जीवन को सुंदर–सुनहरे–यादगार लम्हों से भर देना...
आप क्या देंगे हर मदर्स डे पर हर माँ को शुभकामना–बधाईयाँ....
उसकी शुभकामनाओं पर ही तो चल रही हैं आपकी जीवन नैया...
इंतजार हैं मुझे, कि कब तू अपने सुख का कंट्रोल अपने ही हाथ में रखेगी?
अपने हंसी का – आनंद का सुख का कारण केवल और केवल खुद ही बनेगी...!!
बनेगी ना? इंतजार हैं मुझे......!!

सौ. दीपाली विनायक चाचड
छावनी बोर्ड पुणे

मन की बात

अभी हाल ही में, पंतप्रधान श्री मोदी जी के 'मन की बात' कार्यक्रम का सर्वे किया गया। हर–रोज यह कार्यक्रम देखनेवालों की सुननेवालों की संख्या दिन–ब–दिन बढ़ती ही जा रही हैं!!

भारत के कोने–कोने से, लोगों से कार्यान्वित, नई–नई कल्पनाओं की खोज करके, उन्हे 'सराहकर' मोदी जी' अपने 'मन की बात' में उनका जिक्र करते हैं। खुद 'मोदी जी' दखल ले रहे हैं तो उस बात का वजन (वेटेज) एकदम बढ़ता हैं। जैसे हमारे 'ऑलिड सोसाइटी का सोलर प्रोजेक्ट'।

तो जनाब, इसी प्रकार हमारे भी मन की बात पर किसी का ध्यान जाए तो आज के हर घर की, हर टीचर के सामने खड़ी कई सारी समस्याओं का निराकरण हो सकता हैं।

आजकल के सब छात्रों को, बच्चो को विधातक से विधायक कार्य की ओर हमे लाना हैं। करोना काल से शुरू हो गई न की नकारात्मकता को करो – न के बजाय कुछ करो ना! की ओर हमें ले जाना होगा। यह सिर्फ शिक्षक का या घर में माँ का ही कर्तव्य नहीं हैं.... समाज के, कुटुंब के हर सदस्य को इन बच्चों का, युवा पीढ़ी का साथ देना हैं।

उनकी अच्छी चाहत को, हॉबी को सही मार्ग पर ले जाना हैं। अगर उनका शौक सही हो, तो उसे ऊंचे शिखर पर जाने–से कोई रोक नहीं सकता। सिर्फ लगन और जूनन हो।

एक सबसे अच्छा उदाहरण, हैं। प्रसिद्ध गायिका, गायन सम्राज्ञी लता मंगेशकर जी के शब्द हैं कि, मैं कोई और क्षेत्र में गई होती, तो उस क्षेत्र की भी लता मंगेशकर ही बनती। यानी करोड़ो में एक–अद्वितीय–असामान्य।

पल–पल में बढ़ती, बदलती बाते, ज्ञान देखकर मन घबरा जाता हैं। आज की पीढ़ी टेक्नोसेन्डी बन गई हैं। स्लेन्द याने गुलाम! ज़िंदगी जीते वक्त जिन समस्याओं से, जिन प्रश्नो से बाहर निकलने के लिए, हमारे दिमाग और हृदय को, जो विराम चाहिए, वो आज मिलेगा ही नहीं ऐसी व्यवस्था इस वर्तमान ने की हैं।

यह नया टेक्निक/तंत्रज्ञान बहुत–बार मनोरंजन के माध्यम से दबे पाँव आता हैं हमारे मन–पर हावी हो जाता हैं!! जिस प्रकार कठपुतलियों को उनको नचाने वाले सूत्रधार के सामने कुछ भी नही चलता... ऐसा ही इस युवा पीढ़ी का हो रहा हैं।

आज के हर घर में, प्राणों से भी ज्यादा महत्व प्राप्त हुए, चार–पाँच मोबाइल, गाड़िया, टी.वी., एसी दिखते हैं।

विज्ञान हमारा, शारीरिक श्रम कम करता हैं, हमें सुखी बनाता हैं, हमारा वक्त बचाता हैं.... लेकिन इस बचे हुए वक्त का क्या करना हैं यह बात कोई नहीं सिखाता।

मन डर सा जाता हैं.... जब हम देखते है कि दाँत होठ भींच के मोबाइल में, रेस का खेल खेलते वक्त ये बच्चे उस 'आभासी' दुनिया में खो जाते हैं ––––– तरस आता हैं इन पर!!

क्या इनके नसीब में मैदान की मिट्टी, उस धूल का महसूस होने वाला स्पर्श, वो पसीना, गिरने की, गिराने की, हारने की, जीतने की, जीतने का 'नशा'–––––– हैं ही नही? यह बाते खुद अनुभव करने की, महसूस करने की है ये नशा जो आत्मविश्वास भरता हैं–बढ़ाता हैं, वह कोई भी विटामिन की गोली नहीं दे सकती।

रोप–वे तो मिनटो में हमें पहुंचा देता हैं ऊंचे पहाड़ पर। लेकिन उस जंगली–वन के रास्ते से जाते वक्त, पहाड़ी, नालें पार करते–करते, थकान से चूर होते हुए, चलते–चलते, कभी चोट खाते–गिरते– संभालते, जब वे ऊपर पहुँचते हैं, तब जो पहाड़ या पर्वत समझ में आएगा वो रोप–वे कैसे सिखाएगा ?

लैपटाप का, मोबाइल का चार्जिंग खत्म होने से पहले जी–जान लगाकर ये चार्जर ढूंढते हैं, या हमारी गांडी थोड़ी सी भी बिगड़ती हैं तो उसी वक्त 'मैकनिक' के पास दौड़ते हैं–––! लेकिन भगवान की अद्‌भुत लीला से, मिले हुए इस शरीर की वक्त पर मरम्मत कहां करते हैं? जब तक गले तक बात नहीं आती, तब तक उसकी तरफ ध्यान ही नहीं जाता––––चैतन्य न जाने कहाँ खो गया हैं!! मन घबरा जाता हैं।

अगर, इन्हे खुशी जाहिर करनी हैं, दुख–व्याकुलता दिखानी हैं, व्यक्त करनी हैं तो जिनकी आँखों में बिलकुल नमी नहीं होती, वे अपने आँसू–अपना दुख–अपना सुख–खुशी मोबाइल के स्माइली–क्राइली से दर्शाते हैं।

शस्त्र हो या शास्त्र... ये कब–कहाँ–कितना और क्यू इस्तेमाल में लाना हैं ये 'सजग साक्षरता' इस पीढ़ी में, सब में, क्यों नहीं हैं?

अपने बलबूते पर ये कुछ प्राप्त। हासिल करने की 'क्षमता' रखते हैं?

ये बात हमारे मन की चिंता बढ़ाती हैं। हमें यह सब बदलना होगा। उन्हें 'सक्षम' बनाना होगा। हर जगह श्री मोदी जी नहीं पहुंच सकते। हमें ही हमारी बात का वेटेज बढ़ाना है।

जैसे कि, इल्ही से (कीड़े से) खुद के भरोसे कैटर पिलर बनना–खुद के परिश्रम से ककुन बनाना–खुद ही पूरा ज़ोर लागार उसे तोड़ना और अंत में एक खूबसूरत तितली बनना ऐसी ही पूरी प्रक्रिया, ये जीवन की दौड़ हमें आज की पीढ़ी को खुद– अपने बलबूते पर पूरी करना सिखाना हैं। सब ने उनका साथ देना हैं।

उनके नाजुक पंखो में हमें गरुड पक्षी की ताकत और उड़ान की शक्ति भरना हैं।

मेरे मन की बात ....
हर एक के मन में जागृत रहना चाहिए....
एक 'उत्सुक शेरपा'
जो ढूंढ ही लेता हैं
एक नया 'एवरेस्ट'
उसके अनगिनत सपनों का...
जो उसे कामयाबी दें ...
हमें बस उसका साथ देना है।

सौ. दीपाली विनायक चांचड
छावनी बोर्ड पुणे

मैं और मेरी ज़िंदगी

सर सर करते बाते मन में आती चली गयी
और मैं उसमें डूबता चला गया
बाते आती रही– मैं सोचता चला गया
मैं हवा में उड़ता चला गया
ख्वाबों में तादात्में होता चला गया
तनहाई में मन में उदासी छाती चली गयी
तो कभी मन हंसी से उछलता चला
कार्यों में फँसता चला गया
कार्य करने का आनंद मैं उठाता चला गया
दिल को ठंडक पहुंचाता चला गया
कभी बहाने बनाता, कभी खुशी से कार्य को चूमता चला गया
राह मुझे मिलती गयी, मार्ग दिखाती चली गयी
लोग मुझे मिलते गए, अपने कार्यों को मुझसे करवाते चले गए
राहों में मैं पिसता चला गया, लोग मुझे ढूंढते रहे
कुछ मीठे कुछ कडवे लब्ज कहते चले
कुछ मेरे यादों में बसते चले गए
मैं रिश्ते निभाता चला गया, कारवां बनता चला गया
यादों में उनके खोता चला गया
मन ही मन खुश होता चला गया
ख्वाबों के ईमेल बनता चला गया
आज नहीं तो कल मिलेंगे जरूर मिलेंगे
सोचता चला गया
मैं दिल को तनहाई में कहता चला गया
रोज मिलते नहीं हैं तो क्या हुआ
अक्सर उनकी यादों में बाते तो करता रहा
मैं ठहरता गया यादे आती गयी, और मेरे रूह को छूती रही
मैं मदमस्त होता चला गया
मैं और मेरी तनहाई। अक्सर ये बाते चलती गयी
कालचक्र घूमता रहा ख्वाबों के गलियारों में
सिलसिला चलता गया दिल कहता रहा
ये तो ज़िंदगी हैं, ये तो ज़िंदगी हैं......

श्री संजय हरिभाऊ थिटे
छावनी बोर्ड पुणे

तिरंगा

खून के कतरे–कतरे में
लहराता हैं तिरंगा
दिल की हर धड़कन में
धड़कता हैं, तिरंगा

गाँव–गाँव शहर–शहर
हसता हैं तिरंगा
मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे में
बसता हैं तिरंगा

हिन्दी, उर्दू अनेक भाषा
बोलता हैं तिरंगा
सात समंदर सम्मान में
महकता हैं तिरंगा

रणभूमि मे शौर्य से
लड़ता हैं तिरंगा
उन्नति का वायु भरकर
उड़ता हैं तिरंगा

गगन को भी आगोश में
लेता हैं तिरंगा
हवा में सबकी साँसे बनकर
बहता हैं तिरंगा

भारत माँ के शीश का
ताज हैं तिरंगा
हर भारतीय के ह्रदय की
आवाज हैं तिरंगा

गणतंत्र का सविधान का
प्राण हैं तिरंगा
विश्व अंबर में चमकने वाला
सम्मान हैं तिरंगा

नितिन गणपत शिंदे
छावनी बोर्ड खड़की

दोस्त कभी पुराने नहीं होते

दोस्त कभी पुराने नहीं होते
यादें कभी बासी नहीं होती
वक्त के गुजर जाने से
बंधन कभी कमजोर नहीं होते

दोनों ने बांटकर खाई
आधी आधी रोटी
कटिंग चाय में की हुई कटिंग
बाद के पैसे बचाने के लिए
पैदल चलना या

बिना टिकट बस की सवारी
और उसमें बचे पैसे से
देखा हुआ सिनेमा
ऐसे पल कभी बूढ़े नहीं होते
दोस्त कभी पुराने नहीं होते

मेरे 'उसके' लिए
तूने खाई हुई मार
हमारे संदेश पहुचांने के लिए
की हुई पोस्टमैनगिरी
तू ही हमारा मोबाइल था
तू ही हमारा नेट था
जो हमेशा रिचार्ज रहता था
कभी न गुम होने वाली रेंज होता था

मुलाकातें कम होने से
दोस्ती के जज़्बात कम नहीं होते
इसलिए दोस्त आज भी
यादों का झोंका बनकर
बहते रहते हैं कभी पलकों पर
कभी सुनहरे पलों के होंठो पर
जहाज कितना भी दूर जाए
मगर दोस्तो के किनारे
कभी दूर नहीं होते
दोस्त कभी पुराने नहीं होते

नितिन गणपत शिंदे
छावनी बोर्ड खड़की

बीरबल की चतुराई

बहुत पुराने समय की कहानी हैं। एक बार अकबर बादशाह का दरबार लगा था। दरबार में सारे दरबारी, पंडित, मंत्री और सामान्यजन भी बैठे हुए थे। उस समय दरबार में हंसी ठिठोली का माहौल छाया हुआ था। सब उसी में मशगूल थे। अकबर भी बहुत खुश नजर आ रहे थे।

लेकिन एक बात थी जो अकबर को हमेशा ही खटकती रहती थी, वह यह कि राजदरबार के सभी दरबारी बीरबल के फैसले से बहुत जलते थे। बीरबल के आगे उनके फैसले की एक न चलती थी। इसलिए उन्हें बीरबल से बहुत ईर्ष्या थी, लेकिन वह बीरबल के सामने बोलने कि हिम्मत जुटा नहीं पाते थे। बीरबल की दरबार में अनुपस्थिति होने पर अकबर हमेशा बीरबल की प्रशंसा के पुल बांधते रहते थे।

जब बीरबल दरबार में अनुपस्थित रहते थे तब दरबारी बीरबल के प्रति द्वेष का भाव रखकर अकबर बादशाह को भड़काने का काम करते रहते थे लेकिन अकबर को बीरबल की चतुराई पर बहुत भरोसा था। दरबार में चल रही हंसी –ठिठोली के बीच अकबर ने दरबारियों की परीक्षा लेने का मन बनाया।

उन्होंने सभी दरबारियों से शांत होने को कहा और बोले – ध्यान से सुनो, तुम सभी को मेरे एक सवाल का जवाब देना हैं। जो इस सवाल का जवाब सही देगा और उसे साबित कर दिखाएगा उसे में बीरबल की जगह अपना मंत्री नियुक्त कर दूंगा।

अकबर ने कहा – देखो तुम सबके लिए बहुत बढ़िया अवसर हाथ आया हैं, इससे तुम अपने मन के सभी अरमान पूरे कर सकते हो।

यह सुनकर सभी दरबारी बहुत खुश हुए। अकबर ने फिर अपना सवालिया बाण छोड़ा और कहा, देखों तुम्हें यह साबित करना हैं कि मनुष्य द्वारा निर्मित चीज ज्यादा अच्छी होती है या कुदरत के द्वारा निर्मित चीज ज्यादा अच्छी होती हैं।

अकबर के मुंह से सवाल सुनते ही सभी दरबारी सोच में पड़ गए। अकबर ने उन्हें पूरे एक हफ्ते का समय दिया और कहा अगले शुक्रवार को जब दरबार लगेगा तो तुम्हें खुद को सबसे श्रेष्ठ साबित करना है सब दरबारी अपने–अपने घर को हो लिए। सभी सोच में डुबे थे कि इस बात को कैसे साबित किया जाए। लेकिन किसी में इतनी चतुराई भी तो नहीं थी। जितनी की बीरबल में।

सारे दरबारियों में से किसी को भी इस सवाल का हल नहीं मिल पाया। तय समय के अनुसार शुक्रवार के दिन राजदरबार लगा। सभी लोग अपने–अपने आसान पर विराजमान हो गए। हालांकि बीरबल सबसे पहले पहुँच गए थे।

अब राजा ने एक–एक कर सभी से सवाल का जवाब मांगा, पर सभी दरबारी, पंडित, मंत्री अपनी गर्दन झुकाकर खड़े हो गए।

अब अकबर से रहा नहीं गया। उन्होने बीरबल से पूछा। बीरबल ने बड़ी ही चतुराई भरा जवाब दिया, जहाँपनाह! इसमें कौन सी बड़ी बात हैं, इसका जवाब बहुत ही आसान हैं। अभी लीजिए कह कर बार अपनी कुर्सी से उठकर बाहर चले गए।

यह देख दरबारियों में खुसर–फुसर शुरू हो गई। एक कहने लगा– अरे यह क्या? बीरबल अकबर को जवाब देने के बजाय दरबार से उठकर बाहर चले गए। अकबर आराम से अपने सिंहासन विराजमान हो गए और बीरबल की प्रतीक्षा करने लगे।

तभी एक कारीगर हाथों में पत्थरों से निर्मित एक फूलों का बड़ा सा गुलदस्ता लेकर आया और राजा को गुलदस्ता

देकर जाने लगा। राजा ने गुलदस्ता हाथ में लिया और उसकी सुंदरता देखकर गुलदस्ते की बहुत अधिक तारीफ की। और अपने खजाने के मंत्री को आदेश दिया कि इस कारीगर को एक हजार स्वर्ण मुद्राएँ इनाम के तौर पर दी जाए।

इनाम लेकर कारीगर खुशी–खुशी बाहर चला गया तभी अकबर के बगीचे का माली आया और एक बड़ा–सा गुलदस्ता राजा को भेंट किया। इतना सुंदर गुदस्ता देखकर राजा उसकी भी तारीफ किए बिना न रह सका। अकबर ने फिर अपने मंत्री को आदेश दिया और कहा – माली को सौ चाँदी की मुद्राएँ इनाम से तौर पर दी जाएँ।

बस फिर क्या था राजा का इतना आदेश हुआ की बीरबल चतुराई भरा मुंह बनाकर दरबार में दाखिल हुए। पहले तो अकबर बीरबल पर बहुत नाराज हुए और कहने लगे शायद सभी दरबारी ठीक ही कहते हैं। मैं ही तुम्हें जरूरत से ज्यादा तवज्जो देता हूँ। इसलिए तुम यूं बीच में ही राजदरबार छोड़कर चले गए और मेरे सवाल का जवाब भी नही दिया।

अकबर का इतना कहना हुआ कि बीरबल ने अकबर को प्रणाम करते हुए कहा – जहाँपनाह, आप कुछ भूल रहे है। अभी – अभी जो दो कारीगर यहाँ उपस्थिति देकर गए है। उन्हें आपके पास भेजने के लिए मैं ही बाहर गया था। अपने यह कैसा न्याय किया, दो कारीगरों के साथ। एक को हज़ार स्वर्ण मुद्राएँ और दूसरे को सिर्फ सौ चाँदी कि मुद्राएँ।

अकबर ने जवाब दिया – असली फूलों का गुलदस्ता तो दो दिन में ही मुरझा जाएगा और यह पत्थर से निर्मित गुलदस्ता कभी भी खराब नहीं होगा इसलिए।

अकबर का इतना कहना ही था कि बीरबल ने अपना चतुराई भरा बाण छोड़ा और बोले – तो फिर आप भी मान गए न कि मनुष्य द्वारा निर्मित वस्तु कुदरत के द्वारा निर्मित वस्तु से ज्यादा अच्छी है।

अब जहाँपनाह की बोलती ही बंद हो गई। वे बीरबल कि चतुराई देखकर मन ही मन मुस्कुराए और फिर से अपने सिंहासन पर बैठ गए।

नरेश कुमार
रक्षा सम्पदा निदेशालय, जयपुर

महत्वपूर्ण वास्तु टिप्स

वास्तुशास्त्र किसी निर्माण से संबन्धित चीजों के शुभ–अशुभ फलों को बताता हैं। यह किसी निर्माण के कारण होने वाली समस्याओं का कारण और निवारण भी बताता हैं। यह भूमि, दिशाओं और ऊर्जा के सिद्धांत पर कार्य करता हैं। इसमें भी पाँच तत्वों को संतुलित करने का सिद्धान्त कार्य करता हैं।

1. बाथरूम में पानी की बाल्टी या फिर टब को हमेशा भरकर रखना चाहिए, यदि बाल्टी खाली हैं तो उसे पलटकर रखे, इससे घर में सुख समृद्धि बनी रहती हैं।

2. वास्तुशास्त्र के अनुसार नीले रंग का बहुत महत्व, नीला रंग खुशहाली का प्रतीक माना जाता हैं इसलिए अपने बाथरूम में नीले रंग की बाल्टी जरूर रखनी चाहिए।

3. घर में बाथरूम के दरवाजे के सामने कभी भी आईना नहीं लगाना चाहिए, ऐसा करने से घर में नकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होने लगता हैं।

4. बाथरूम में उत्तर या पूर्व दीवार पर मिरर लगाएँ और उसका आकार चकोर या आयताकार हो। गोलाकार या अंडाकार मिरर वास्तु के हिसाब से अच्छा नहीं माना जाता हैं।

5. सोमवार को आटे में थोड़ा दूध मिला कर गुथने से परिवार के सदस्यों का चन्द्र ग्रह मजबूत होता हैं।

6. मंगलवार को आटे में थोड़ा सा गुड़ मिला कर गुथने से परिवार के सदस्यों का मंगल ग्रह मजबूत होता हैं।

7. बुधवार को आटे में धनिया या पालक मिलाकर गुथने से परिवार के सदस्यों का बुध ग्रह मजबूत होता हैं।

8. गुरुवार को आटे में थोड़ी सी हल्दी या बेसन मिलकर गुथने से परिवार के सदस्यों का गुरु ग्रह मजबूत होता हैं।

9. शुक्रवार को आटे में थोड़ा सा घी या दही मिलाकर गुथने से परिवार के सदस्यों का ुक्र गृह मजबूत होता हैं।

10. शनिवार को आटा गुथते वक्त थोड़ा सा सरसो का तेल मिलाकर गुथने से परिवार के सदस्यों का शनि ग्रह मजबूत होता हैं।

11. बंद गैस चूल्हे पर तवा या कढ़ाई कभी न रखे। इससे घर के खर्चे अनावश्यक रूप से बढ़ते हैं।

12. पुराना तवा या कढ़ाई कभी भी किसी को दान न दें।

13. गरम तवा पर कभी भी पानी न डालें। इससे छन्न की आवाज घर में क्लेश पैदा करती हैं।

14. तवे और कढ़ाई को कभी भी उल्टा न रखे, धन की समस्या आती हैं।

15. पहली रोटी गाय एवं अंतिम रोटी कुत्ते के लिए जरूर निकले।

16. रसोईघर में नमक हमेशा काँच के जार में रखे।

17. रसोईघर में नमक, हल्दी, आटा, चावल, सरसो का तेल खत्म होने से पहले ही लाकर रख देना चाहिए। इससे घर में अन्न और धन की कमी नहीं होती।

18. जब महिलाएं पहली रोटी पकाने जाए तो उससे पहले तवे पर नमक छिड़क दें। इस उपाय से घर में अन्न तथा धन बना रहेगा।

19. राधाकृष्ण की तस्वीर बेडरूम में लगाना शुभ होता हैं।

20. रामदरबार की तस्वीर बैठक में पूर्व या उत्तर की ओर लगाएं।

21. भगवान शंकर, कुबेर और महालक्ष्मी, माँ दुर्गा एवं सरस्वती की फोटो उत्तर दिशा में लगाएं।

22. माँ दुर्गा की फोटो में शेर का मुंह खुला नहीं होना चाहिए।

भाग्य और धन वृद्धि के लिए घर में लगाएं ये तस्वीरे

1. वास्तु के अनुसार, घर में तैरती हुई मछलियों की तस्वीर लगाना शुभ होता हैं। तैरती हुईं मछलियों की तस्वीरें जीवतंता का प्रतीक होती हैं। इन्हें घर पर लगाने से घर के सदस्य खुशहाल रहते हैं और उनकी आयु लंबी होती हैं।

2. घर के अंदर सूर्योदय, बड़े पहाड़ और सुंदर प्रकृति की तस्वीरे लगाने से आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा आती हैं और आप आशावादी बनते हैं।

3. घर के अंदर हमेशा खिल खिलाते हुए और हँसते हुए चेहरों की तस्वीर लगाने चाहिए। ऐसी तस्वीरे लगाने से परिवार के सदस्यों के बीच प्रेमाभाव बढ़ता हैं।

दीपक कुमार ऋषि
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

राजभाषा की संवैधानिक स्थिति

सदियों की पराधीनता के पश्चात जब आजाद देश के संविधान निर्माण की बारी आई तो संविधान सभा के समक्ष एक बड़ा मुद्दा था कि इस विस्तृत देश की विभिन्न भाषाओं में से किस भाषा को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया जाए। स्वतन्त्रता आंदोलन के दौरान अधिकांश राष्ट्रव्यापी गतिविधियों का माध्यम हिन्दी भाषा रही थी और यह जनमानस की आम बोलचाल की भाषा भी थी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी समेत कई महापुरुषों ने हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिए जाने का पक्ष लिया। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए संविधान सभा ने सर्वसम्मति से 14 सितंबर, 1949 को हिन्दी को संघ के शासकीय प्रयोजन हेतु देश की राजभाषा का दर्जा दिया। 26 जनवरी, 1950 से प्रभावी देश के संविधान में राजभाषा हिन्दी से संबंधित महत्वपूर्ण उपबंधों का विस्तृत विवरण अग्रलिखित है :–

’ संविधान के भाग 5, अध्याय 1 (संघ) में उपबंध

(1) अनुच्छेद 120: देश की संसद के दोनों सदनों में कार्यवाही हिंदी में या अंग्रेजी में संचालित की जाएगी। परंतु, यदि कोई संसद सदस्य अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करना चाहे तो उस सदन के अध्यक्ष (राज्य सभा के सभापति और लोक सभा के स्पीकर) की अनुमति से ऐसा करने का प्रावधान है।

’ संविधान के भाग 6 (राज्य) में उपबंध

(2) अनुच्छेद 210: राज्यों के विधान–मंडलों (विधान सभा एवं विधान परिषद) में कार्यवाही संबंधित राज्य की राजभाषा या राजभाषाओं में या हिंदी में या अंग्रेजी में संचालित की जाएगी। परंतु, यदि कोई विधायक अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करना चाहे तो उस सदन के अध्यक्ष की अनुमति से ऐसा करने का प्रावधान है।

’ संविधान के भाग 17, अध्याय 1 (राजभाषा) में उपबंध

(3) अनुच्छेद 343: संघ की राजभाषा– इस अनुच्छेद में यह उपबंधित है कि संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी तथा संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्रा ट्रीय रूप होगा।

(4) अनुच्छेद 344: राजभाषा के संबंध में आयोग और संसदीय समितिदृ यहां उपबंधित है कि राष्ट्रपति, आदेश द्वारा, एक आयोग गठित करेगा जिसमें एक अध्यक्ष और 8वीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट विभिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले अन्य सदस्य सम्मिलित होंगे। यह आयोग संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी भाषा के अधिकाधिक प्रयोग, अंग्रेजी भाषा के प्रयोग पर निर्बंधनों, संघ की राजभाषा एवं संघ व किसी राज्य के बीच या एक राज्य से दूसरे राज्य के बीच पत्राचार की भाषा, भारत की औद्योगिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक उन्नति, लोक सेवाओं के संबंध में अहिंदी भाषी क्षेत्रों के व्यक्तियों के न्यायसंगत दावों/हितों का सम्यक ध्यान, आदि मदों पर राष्ट्रपति को रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा।

एक संसदीय समिति गठित की जाएगी जिसमें तीस संसद सदस्य शामिल होंगे। इन तीस सांसदों में लोक सभा से बीस सांसद और राज्य सभा से दस सांसद होंगे जो इन सदनों के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित किए जाएंगे। यह समिति राजभाषा आयोग की सिफारिशों की परीक्षा करके राष्ट्रपति को प्रतिवेदन प्रस्तुत करेगी।

’ संविधान के भाग 17, अध्याय 2 (प्रादेशिक भाषाएं) में उपबंध

(5) अनुच्छेद 345: राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं– यहां उपबंधित है कि किसी राज्य का विधानमंडल, विधि द्वारा, उस राज्य में प्रयोग होने वाली भाषाओं में से किसी एक या अधिक भाषाओं को या हिंदी को उस राज्य के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा या भाषाओं के रूप में अंगीकार कर सकेगा। किन्तु ऐसी किसी भाषा को अंगीकार न

करने पर उस राज्य के शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग होता रहेगा।

(6) अनुच्छेद 346: एक राज्य से दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्राचार की राजभाषा– संघ में शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने के लिए प्राधिकृत भाषा, एक राज्य से दूसरे राज्य के बीच और किसी राज्य एवं संघ के बीच पत्राचार की राजभाषा होगी। परंतु, यदि दो या अधिक राज्य यह करार करते हैं कि उन राज्यों के बीच पत्राचार की भाषा राजभाषा हिंदी होगी तो ऐसे पत्राचार के लिए हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जा सकेगा।

(7) अनुच्छेद 347: किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध – यदि इस संबंध में मांग किए जाने पर राष्ट्रपति का यह समाधान हो जाता है कि किसी राज्य की जनसंख्या का पर्याप्त भाग यह चाहता है कि उसके द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राज्य द्वारा मान्यता दी जाए तो वह निदेश दे सकेगा कि ऐसी भाषा को भी उस राज्य में शासकीय मान्यता दी जाए।

’ संविधान के भाग 17, अध्याय 3 (न्यायालयों की भाषा) में उपबंध

(8) अनुच्छेद 348: उच्चतम न्यायालय तथा उच्च न्यायालयों में और अधिनियमों, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा– यहां उपबंधित है कि जब तक संसद विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक उच्चतम न्यायालय और प्रत्येक उच्च न्यायालय में सभी कार्यवाहियां अंग्रेजी भाषा में संचालित होंगी।

संसद के प्रत्येक सदन या किसी राज्य के विधानमंडल के प्रत्येक सदन में पुरःस्थापित किए जाने वाले सभी विधेयकों या उनके प्रस्तावित संशोधनों के, संसद या किसी राज्य के विधानमंडल द्वारा पारित सभी अधिनियमों और राष्ट्रपति या किसी राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित सभी अध्यादेशों के, और संविधान के अधीन अथवा संसद या किसी राज्य के विधानमंडल द्वारा बनाई गई किसी विधि के अधीन बनाए गए सभी आदेशों, नियमों, विनियमों और उपविधियों के प्राधिकृत पाठ अंग्रेजी भाषा में होंगे।

किसी राज्य का राज्यपाल, राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से, उस उच्च न्यायालय की कार्यवाहियों में, जिसका मुख्य स्थान उस राज्य में है, हिन्दी भाषा का या उस राज्य के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाली किसी अन्य भाषा का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा। यदि किसी आदेश, नियम, विनियम या उपविधि में प्रयोग के लिए अंग्रेजी भाषा से भिन्न कोई भाषा विहित है वहां उस राज्य के राजपत्र में उस राज्य के राज्यपाल के प्राधिकार से प्रकाशित अंग्रेजी भाषा में उसका अनुवाद इस अनुच्छेद के अधीन उसका अंग्रेजी भाषा में प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

(9) अनुच्छेद 349: भाषा से संबंधित कुछ विधियां अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया– इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि के दौरान, अनुच्छेद 348 के खंड (1) में उल्लिखित किसी प्रयोजन के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा के लिए उपबंध करने वाला कोई विधेयक या संशोधन संसद के किसी सदन में राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी के बिना पुरःस्थापित या प्रस्तावित नहीं किया जाएगा और राष्ट्रपति किसी ऐसे विधेयक को पुरःस्थापित या किसी ऐसे संशोधन को प्रस्तावित किए जाने की मंजूरी अनुच्छेद 344 के खंड (1) के अधीन गठित आयोग की सिफारिशों पर और उस अनुच्छेद के खंड (4) के अधीन गठित समिति के प्रतिवेदन पर विचार करने के पश्चात ही देगा, अन्यथा नहीं।

’ संविधान के भाग 17 के अध्याय 4 (विशेष निदेश) में उपबंध

(10) अनुच्छेद 350: व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा–प्रत्येक व्यक्ति किसी व्यथा के निवारण के लिए संघ या राज्य के किसी अधिकारी या प्राधिकारी को, यथास्थिति, संघ में या राज्य में प्रयोग होने वाली किसी भाषा में अभ्यावेदन देने का हकदार होगा।

प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएं– प्रत्येक राज्य और राज्य के भीतर प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी भाषाई अल्पसंख्यक वर्गों के बालकों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा और राष्ट्रपति किसी राज्य को ऐसे निदेश दे सकेगा जो वह ऐसी सुविधाओं का उपबंध सुनिश्चित

कराने के लिए आवश्यक या उचित समझता है।

भाषाई अल्पसंख्यक वर्गों के लिए विशेष अधिकारी– भाषाई अल्पसंख्यक वर्गों के लिए एक विशेष अधिकारी होगा जिसे राष्ट्रपति नियुक्त करेगा। विशेष अधिकारी का यह कर्तव्य होगा कि वह इस संविधान के अधीन भाषाई अल्पसंख्यक वर्गों के लिए उपबंधित रक्षा उपायों से संबंधित सभी विषयों का अन्वे ाण करे और उन विषयों के संबंध में ऐसे अंतरालों पर राष्ट्रपति को प्रतिवेदन दे और राष्ट्रपति ऐसे सभी प्रतिवेदनों को संसद के प्रत्येक सदन के समक्ष रखवाएगा और संबंधित राज्यों की सरकारों को भिजवाएगा।

(11) अनुच्छेद 351: हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश– संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। साथ ही आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं के विकास का भी उचित ध्यान रखा जाए। हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए परस्पर उनके शब्द भंडार में समृद्धि सुनिश्चित करे।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा दिया जाए। संविधान में विनिर्दिष्ट और अन्य स्थानीय भाषाओं के सामासिक विकास का प्रावधान है। इस दिशा में केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में हिन्दी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा/माह का आयोजन किया जाता है। राजभाषा के प्रचार–प्रसार में विभागीय पत्रिकाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। राजभाषा के विकास की दिशा में केंद्र सरकार नियमित अंतराल पर विश्व हिन्दी सम्मेलन, अंतरराष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन, अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन जैसे विभिन्न समारोहों का आयोजन करती है।

****

विक्रम सिंह
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

पछतावा

एक मेहनती और ईमानदार नौजवान बहुत पैसे कमाना चाहता था क्योंकि वह गरीब था और बदहाली में रहा था। उसका सपना था कि वह मेहनत करके खूब पैसे कमाए और एक दिन अपने पैसे से एक कार खरीदे। जब भी वह कोई कार देखता तो उसे अपनी कार खरीदने का मन करता।

कुछ साल बाद उसकी अच्छी नौकरी लग गयी। उसकी शादी भी हो गयी और कुछ ही वर्षों में वह एक बेटी का पिता बन गया। सब कुछ ठीक चल रहा था मगर फिर भी उसे एक दुख सताता था कि उसके पास अपनी कार नहीं थी। धीरे–धीरे उसने पैसे जोड़ कर एक कार खरीद ली। कार खरीदने का उसका सपना पूरा हो चुका था और इससे वह बहुत खुश था। वह कार की बहुत अच्छी तरह देखभाल करता था और उसमें शान से घूमता था।

एक दिन रविवार को वह कार को रगड़–रगड़ कर धो रहा था। यहाँ तक की गाड़ी के तारों को भी चमका रहा था। उसकी 5 वर्षीय बेटी भी उसके साथ थी। बेटी भी पिता के आगे–पीछे घूम–घूम कर कार को साफ होते देख रही थी। कार धोते–धोते अचानक उस आदमी ने देखा कि उसकी बेटी कार के बोनट पर किसी चीज के खुरच–खुरच कर कुछ लिख रही है। यह देखते ही उसे बहुत गुस्सा आया। वह अपनी बेटी को पीटने लगा। उसने उसे इतनी ज़ोर से पिटा की बेटी के हाथ की उंगली ही टूट गयी। दरअसल वह आदमी अपनी कार को बहुत चाहता था और वह बेटी की शरारत को बर्दाश्त नहीं कर सका। बाद में उसका गुस्सा कुछ कम हुआ तो उसने सोचा कि जा कर देखू की कार पर कितनी खरोच आई है, कार के पास जाकर देखने पर उसके होश उड़ गए। उसे खुद पर बहुत गुस्सा आ रहा था। वह फुट–फुट कर रोने लगा। कार पर उसकी बेटी ने खुरच कर लिखा था – *Papa I Love you-*

यह कहानी हमे यह सिखाती हैं कि किसी के बारे में कोई गलत राय रखने से पहले या गलत फैसला लेने से पहले हमें जरूर सोचना चाहिए कि उस व्यक्ति ने वह काम किस नियत से किया हैं।

दक्षिता सिंह
रक्षा सम्पदा निदेशालय, जयपुर

हमारी मौली

मेरा 16 साल का बेटा दोपहर की चिलचिलाती धूप में हाथों में कुदाल लिए मेरे घर के अहाते में स्थित छोटे से गार्डन में गड्डा खोद रहा था (उसका सारा शरीर पसीने से तर–बतर था। हाथ, पैर और कपड़े मिट्टी से लथपथ हो चुके थे, और उसकी आँखों से लगातार आँसू बहे जा रहे थे। आंसुओं से आँखों में धुंधलापन आ रहा था इसलिए वह बार–बार उन्हे पोंछता और फिर से गड्डा खोदने में लग जाता। उसकी इच्छा अनुसार गड्डा खुदने के बाद उसने एक लंबी सी साँस लिया, नन्ही से मौली को हसरत और दुख भरी नजरों से जी भर कर देखा, फिर थरथराते हाथों से धीरे से सुला दिया और दोनों हाथों से मिट्टी डाल कर उसे हमेशा के लिए दफन कर दिया।

जैसे ही उसकी हथेली से मिट्टी का अंतिम कण छूटा उसके सब्र का बांध भी टूट गया। वह तेजी से दौड़ते हुए 'मम्मा' कहते हुए मुझ से ज़ोर से लिपट कर बेतहाशा सिसकियाँ आंसुओं में बदल कर गालों को नम करने लगी। मैं निःशब्द थी क्या समझाऊँ ? कैसे समझाऊँ उसको और खुद को ? क्या कहूँ ? उम्मीद की कौन सी झलक दिखाऊँ कि उसका दुख कुछ कम हो जाए। उसके और मेरे दोनों हाथों से फिसलकर मौली हमेशा के लिए इस दुनिया को छोड़ कर जा चुकी थी। आज जो भी हुआ इतना अचानक हुआ कि कुछ समझ ही नहीं आया। ऐसा लग रहा था जैसे आज के दिन ने न जाने हमारा क्या–क्या छीन लिया। थोड़ी देर बाद उसकी सिसकियाँ कम हो गई लेकिन मैं और मेरा बेटा वही बरामदे में बैठे उस जगह को निहारते रहे, जहां कुछ समय पहले मौली को सुलाए थे। मेरी गोद में मेरे बेटे का सर था, मैं प्यार और सांत्वना से उसके बालों में हाथ फेरते हुए सोचने लगी.... समय कितनी जल्दी पंख लगा कर उड़ जाता हैं ....

आज से लगभग ढाई साल पहले मौली हम सबकी जिंदगी में आई थी। उस दिन मेरा जन्म–दिन था। कई मेहमान घर पर आए हुए थे, खाने–पीने का बढ़िया इंतजाम था, कहकहो का शोर था, कुछ लोग बतियाने में लगे थे, मैं हल्के गुलाबी रंग की साड़ी में लिपटी सजी संवरी हुई बड़ी शुभकामनाएं दे रहे थे, उनको तोहफे भी मिल रहे थे कुछ बहुत कीमती भी थे। लेकिन उन सब में सबसे हसीन तोहफा मुझे मौली के रूप में मिला था। मेरी एक दोस्त ने जब भेंट स्वरूप एक छोटी सी, सुंदर सी सजी हुए बास्केट मेरे हाथों में थमाई तो पहले तो में कुछ समझ न पाई, लेकिन जैसे ही बास्केट का ढक्कन खोला तो मेरी आंखे खुशी से चमक उठी और अनायास ही मुंह से निकल पड़ा अतिसुन्दर। उस बास्केट में दो प्यारी–प्यारी बिल्लियाँ थी। जिनकी उम्र लगभग एक महीना रही होगी, वो बड़ी खूबसूरत और चंचल थी। इस दृष्टि के रचनाकार की बेहतरीन कृति।

दूसरे दिन की सुबह बड़ी ही अद्‌भुत व चमत्कारिक लग रही थी। छोटे–छोटे दो नए मेहमान घर के सभी लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे। घर के अन्य सदस्यों के साथ–साथ मैं उनकी भी जरूरतों को पूरा करने में लग गई। यूं तो मुझे घर का बहुत काम होता था, फुर्सत के पल नसीब से ही मिलते थे, कभी–कभी झुंझलाहट भी होती थी, लेकिन इनकी सेवा करते हुए मुझे परम आनंद का अनुभव हो रहा था। समय धीरे–धीरे सरकने लगा, अब वह बिल्लियाँ नहीं रह गई थी बल्कि परिवार की खास सदस्य बन चुकी थी। इसलिए उनका कोई नाम होना जरूरी था, इस विचार के आते ही मुहिम शुरू हुई उनके नामकरण की। नाम रखना भी कोई आसान काम तो नहीं हैं और नाम भी ऐसा जो सबसे अनोखा होना चाहिए तो यह कार्य और ज्यादा चुनौती पूर्ण हो जाता है। इन बिल्लियों का नाम उसी तरह ढूंढा जा रहा था जिस तरह हम इंसान अपने बच्चों के लिए सबसे प्यारा और अलग सा नाम रखना चाहते हैं कि जिस नाम का अर्थ भी सबसे बेहतरीन हो। उसी तरह से बेटे ने भी सबसे अच्छा नाम ढूँढने के लिए इंटरनेट पर खूब खोजबीन की। जिस नाम का चुनाव उसने अपनी बिल्ली के लिए किया वह खूबसूरत सा नाम था 'मौली' जिसका अर्थ था 'एंजेल' और दूसरी बिल्ली का नाम रखा 'लिंक्स'। दरअसल मौली और लिंक्स भाई–बहन थे।

जैसे–जैसे दिन बीतने लगे हमारी एक महीने की नन्ही सी मौली और लिंक्स साथ–साथ बड़े होने लगे। दोनों एक साथ बहुत खेलते थे। लिंक्स बहुत शैतान, शरारती और जिज्ञासु था, जबकि मौली बहुत ज्यादा शांत बिल्ली थी। उसे किसी भी चीज में कोई खास दिलचस्पी नहीं होती थी। वह खाती थी, सोती थी और बहुत सारा खेलती थी। मौली को आम के पेड़ पर चढ़ना बहुत पसंद था। जब भी उसका मन हो वह आम के पेड़ पर चढ़ जाती थी लेकिन उसे उतरना नहीं आता था। बार–बार मेरे बेटे को पेड़ पर चढ़ कर उसे सावधानी से नीचे लाना पढ़ता था लेकिन वह उस पर कभी गुस्सा नहीं होता था, क्योंकि मौली का चेहरा बड़ा भोला–भाला और मासूम सा था। जब भी वह देखती थी तो ऐसा लगता था जैसे

वह हमसे ढेर सारी बाते करना चाहती हैं मौली के साथ मेरा कौनसा गहरा रिश्ता था यह में आज भी नहीं समझ पाई। वैसे तो मौली बड़ी सीधी–साधी बिल्ली थी ज्यादा म्याऊँ–म्याऊँ भी नहीं करती थी लेकिन खाने के मामले में थोड़ी नख़रेबाज़ थी। उसका खान–पान अन्य बिल्लियों से अलग था। उसको चिकन नहीं पसंद था। वह केवल मछली खाती थी वह भी सिर्फ बांगड़ा।

मौली को इंसान बहुत थे। अकेले रहना अच्छा नहीं लगता था, जहां परिवार के लोग होते थे वह वहीं जा कर बैठती थी। मैं जब भी रसोई घर मैं होती मौली वहाँ मेरी साथी बन कर हमेशा मौजूद रहती थी। कभी बैठे–बैठे गलती से उसको झपकी आ भी जाए, तो वह तुरंत आँख खोल कर देखती थी कि कही में वहाँ से चली तो नहीं गई। अब वह हमारे परिवार कि सबसे प्रिय सदस्य थी। सभी लोग, खास तौर पर मेरा बेटा उसकी हर छोटी – बड़ी बात का बहुत ख्याल रखता था। इसी बीच वह एक बार माँ भी बनी। उसने तीन प्यारे बच्चों को जन्म दिया था। वह बहुत अच्छी माँ थी, वह अपने बच्चों का बहुत ख्याल रखती थी। उन्हे समय समय पर खाना खिलाती थी, कही भी जाने नहीं देती थी वह गलती से भी रास्ता न भटक जाएँ इस बात का पूरा ध्यान रखती थी। जब उसके बच्चे थोड़ा बड़े हुए तो इधर–उधर पड़ोस का घरों में चले जाते थे तब वह बहुत परेशान होती थी, सारे घरों में जा कर अपने बच्चे ढूंढती थी और उन्हे बुला कर लाती थी।

ढाई साल मौली के साथ कैसे बीते पता ही नहीं चला। इस अवधि में उसे काफी चोटें आई, कई बार जख्मी हुई, बीमार हुई, एक बार ऊपर से भी गिरी परंतु हर बार ईश्वर ने उसे जीवन दान दिया। लेकिन 7 अप्रैल को रात 9 बजे के करीब जब वह यूं ही घर के बाहर खड़ी थी न जाने कैसे? कब? वह कहाँ चली गई? कुछ पता ही न चला। और जब कुछ समय बाद वह वापस आई तो बुरी तरह जख्मी थी कुत्तों ने न केवल उसे काटा था बल्कि उसके पेट के पास की सारी खाल खींच दी थी। वो बेइंतहा दर्द में थी लेकिन मुह से उफ़्फ़! भी नहीं कर रही थी। रात के 10 बज चुके थे। सारे क्लीनिक बंद हो चुके थे। हम रात भर उसे सहलाते रहे और न सिर्फ उसे बल्कि खुद को भी तसल्ली दे रहे थे कि मौली को कुछ नहीं होगा। इस बार भी कोई चमत्कार होगा और मौली ठीक हो जाएगी। रात कटे नहीं कट रही थी, दिल अप्रिय घटना की आशंका से बैठा जा रहा था, मगर मौली खामोश थी। वह बहुत सहनशील थी इसलिए इतने दर्द को भी वह चुपचाप सहे जा रही थी।

सुबह की किरणों से न केवल नए दिन की शुरुआत हुई बल्कि हमें उम्मीद की नई रोशनी भी मिली कि अब हम मौली को अस्पताल ले जा सकेंगे उसका इलाज कर सकेंगे। सुबह दस बजे तक हम तैयार हो कर अस्पताल की ओर चल पड़े। बड़ी उम्मीद से हमने वहाँ की दहलीज पर कदम रखे थे, जल्दी ही डॉक्टर साहब आ गए और मौली को अंदर ले गए हम बाहर बैठे उसके स्वस्थ होने की दुआ करे लगे। लेकिन उसे जांच करने के बाद डॉक्टर ने बताया कि उसे टांके (*stitch*) नहीं लगाए जा सकते। कुत्तों ने इतनी जगह काटा हैं और इतने बुरी तरह काटा है कि इसका बचना नामुमकिन हैं। यह सुन कर दिल धक से रह गया। मैं और मेरा बेटा रो पड़े, किसी तरह हमने खुद को संभाला और दिल पर पत्थर रख कर डॉक्टर के दिए फॉर्म पर साइन कर दिए। एक इंजेक्शन के साथ ही मौली कि साँसे थम गई और वो ज़िंदगी कि जंग हार गई। उसके मुंह से जो अंतिम शब्द निकला था वो था "म्याऊँ"।

कुछ ही समय में डॉक्टर ने हमेशा के लिए खामोश हो चुकी मौली को हमे सौंप दिया। बड़े भारी मन से हम अपने घर की ओर चल पड़े। आज छोटी सी मौली इतनी भारी–भरकम लग रही थी कि उसका वजन संभालें नहीं संभल रहा था। घर पहुँच कर ऐसा लग रहा था जैसे हमारे परिवार का सबसे खूबसूरत हिस्सा खत्म हो गया हैं। एक अजीब सी खामोशी थी, एक अजीब सा सन्नाटा था, हर तरफ मायूसी सी पसर गई थी।

आज मौली को गए हुए पंद्रह दिन बीत चुके हैं, फिर भी ऐसा लगता है वह हर जगह मौजूद हैं। कभी खाते हुए, कभी खेलते हुए, कभी चलते हुए, कभी बैठे हुए तो कभी सोते हुए। मौली को भूलना हमारे लिए आसान नहीं होगा वो मेरे व्यस्त जीवन का सुकून थी। कभी उसके नन्हें बच्चों में मौली की झलक दिख जाती हैं। वैसे तो बहुत बिल्लियाँ देखी हैं हमने, पाली भी हैं, लेकिन सबसे प्यारी, सबसे मासूम, सबसे सुंदर, सबसे अनोखी और सबसे अलग थी "हमारी मौली"

सौ. निशात शेख
छावनी बोर्ड देहूरोड

पूर्णावतार श्रीकृष्ण

मृत्युलोक में अत्याचारियों का जब–जब बड़ा अत्याचार
श्री हरि तब अवतरित हुए लेकर रूप बारम्बार
द्वापर युग में अधर्मियों का करने को अंत
और विश्व को देने को गीता का मंत्र
मथुरा के कारागार में जन्मे कान्हा
जिनकी अद्‌भुत शक्तियों को विश्व ने माना

बालकृष्ण के रूप में उन्होंने अद्‌भूत रूप दिखाए
कंस के भेजे सभी असुरों को यमलोक पहुंचाए
माखन खाकर, मुरली बजाकर गायों को चराए
मुरली की मधुर धुन पर गोपियों को नचाए
वृंदावन में राधा संग प्रेम–रास रचाए
बाल मनोहर छवि से सबका मन हर्षाए
सखा सुदामा से आजीवन मित्रता निभाए

बलराम, सुदामा के साथ उज्जैन में जाकर
विद्यार्जन किया सांदीपनी गुरु को पाकर
अत्याचारी कंस का करके अंत
माँ–देवकी, पिता–वसुदेव को किया स्वतंत्र
जरासंध और कलयवान जैसे दुष्टों से टकराए
बुद्धि–विवेक के बल पर उन्हे स्वर्गलोक पहुंचाए

पांडव के बन मार्गदर्शक, उन्हे धर्म का मार्ग दिखाया
द्रौपदी की रक्षा कर अपना फर्ज़ निभाया
शांतिदूत बनकर शांति का पैगाम पहुंचाया
दुर्योधन को नहीं हुआ जब यह प्रस्ताव स्वीकार
अधिकार के लिए प्रबल हो गई तब युद्ध की दरकार

महाभारत के युद्ध की तब घड़ी आई
कौरव–पांडव ने एक–दूजे पर बस कर दी चढ़ाई
अपनों के बन विरोधी जब अपने सम्मुख आए
और मोह में पड़कर अर्जुन ने जब शस्त्र नहीं उठाए
सारथी बन श्रीकृष्ण ने तब विराट रूप दिखाए
अर्जुन को तब गीता के अनमोल वचन सुनाए

मोह, भय को त्यागकर निष्काम कर्म का पाठ
अपनों के विरोधी होने पर भी न्याय की बात
आत्मा की अमरता और ईश्वर में विश्वास

सुनकर यह संदेश तब अर्जुन ने गांडीव उठाया
महाभारत के युद्ध में फिर विरोधियों को हराया

कर्मयोगी बन अर्जुन ने अपना कर्तव्य निभाया
श्रीकृष्ण की कृपा से उसने उत्तम जीवन पाया
64 कलाओं के स्वामी जिन्होंने संदेश सुनाया
अनुकरणीय हैं उनका जीवन, अद्भुत उनकी माया
मन के मोह–भय और दूर करने की तृष्णा
हैं जरूरी हर पल मन में 'जय श्रीकृष्ण' जपना

भटकी हुई चिड़िया

कल रात घर पर जब मैं बना रहा था खाना
और टेलीविज़न पर आ रहा था पुराना गाना
तभी अचानक एक नन्ही चिड़िया कही से उड़कर आई
चीं–चीं–चीं करते हुए वह कमरे में चक्कर लगाई
हैरत हुई उसे मुझे देखकर जब अपना घर न पाई
कभी कपड़े पर कभी पंखे पर उसने नजर घुमाई
ढूंढ रही हो मानो वह अपने घर की परछाई

उसे देखकर मन में यह तुरंत विचार आया
इस नन्हें प्राणी की है अपनी नन्ही काया
बिछड़कर अपने साथियों से अपने को यहाँ पाया
कब पहुंचेगी अपने घर, उसे समझ न आया
बैठकर पंखे पर उसने चीं–चीं, शोर मचाया
मेरे मन में तब उसकी सुरक्षा का ख्याल आया
पंखे को रख बंद उसे दना–पानी देना चाहा
डरती रही वह मुझसे हर पल जब मैंने कदम बढ़ाया

पंखे से उड़ फिर पंखे पर जा बैठी
मानो उसकी नजरे मुझसे हर पल हों यह कहती,
"रात्रि का पहर हैं यह पर मुझे हैं बाहर जाना,
हैं यह सुंदर कक्ष पर घोंसला हैं मेरा ठिकाना"
मन में आई बातों को तब मैंने मोल दिया,
उस नन्ही चिड़िया के लिए आँगन द्वार खोल दिया

चीं–चीं करते हुए वह फुर्र से बाहर उड़ गई
मानो बाहर उड़ते ही उसे मंजिल मिल गई
जाते–जाते नन्ही चिड़िया ने यह सबक सिखाया
धैर्य, दृढ़ता और साहस से हर मुश्किल छट जाए
राहगीर जो कभी–कभी मंजिल से भटक जाते हैं
वक्त और हालत हर पल उनके होसले आजमाते हैं
धैर्य और दृढ़ता से जो हर पल कदम बढ़ाते हैं
मंजिल को पाकर जग में एक आदर्श बन जाते हैं।

मनीष कुमार श्रीवास्तव
रक्षा सम्पदा निदेशालय, पुणे

माँ ये बता

(शहीद फ़ौजी का मासूम बेटा अपनी माँ से प्रश्न करता हुआ)

माँ, मैं समझ न पाया हूँ
ओढ़ कर तिरंगा पापा क्यों घर आए हैं ?
पहले पापा, बेटा–बेटा' कहते आते थे
चॉकलेट और खिलौना साथ लाते थे
गोदी में उठाकर खूब खिलाते थे
सर पर हाथ फेर प्यार भी जताते थे

पर न जाने आज क्यों वो चुप हो गए
लगता है कि थक कर गहरी नींद में सो गए
नींद से उठो, पापा, मुन्ना तुम्हें बुलाये है,
ओढ़ के तिरंगा पापा क्यों घर आए हैं ?
फौजी अंकलों की भीड़ घर क्यों आई है ?
पापा का सामान साथ में क्यों लाई है ?
चाचा, मामा, दादा– दादी चींख क्यों रहे हैं ?

माँ तू बता, वो सर पीट क्यों रहे हैं ?
गाँव वाले पापा को 'शहीद' क्यों बताए हैं ?
ओढ़ कर तिरंगा पापा क्यों घर आए हैं ?
माँ तू क्यों रोती हैं ये बता मुझे
होश क्यों हर पल खोती हैं ये बता मुझे
तेरे माथे का सिंदूर क्यों हैं दादी पोछती ?
लाल चूड़ी हाथ से क्यों हैं बुआ तोड़ती ?

माँ तेरा ये रूप मुझे तनिक न भाए हैं
ओढ़ कर तिरंगा पापा क्यों घर आए हैं ?
पापा अब कहाँ जा रहे हैं, ये तो बताओं माँ
चुपचाप से आँसू बहकर यूं न मुझे सताओं माँ
पापा की राह में सबने क्यों फूल ये सजाए हैं ?
ओढ़ कर तिरंगा पापा क्यों घर आए हैं ?
क्यों लकड़ियों के बीच में पापा कांधे पर उठाए हैं ?
सब कह रहे हैं पापा को लेने राम खुद आए हैं

माँ, दादा बोल रहे पापा को, कैसे चिता सजाऊँ मैं
पाल–पोस जिसे बड़ा किया, उसे कैसे जलाऊँ मैं
इस प्रश्नों के उत्तर माँ मुझे नहीं मिल पाए हैं
ओढ़ कर तिरंगा पापा क्यों घर आए हैं ?

अनुज कुमार
रक्षा सम्पदा निदेशालय, पुणे

श्री जी एस राजेस्वरन द्वारा महानिदेशक, रक्षा सम्पदा के रूप में नियमित पदभार ग्रहण *(01/03/2023)*

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, *2023 (21/06/2023)*

सर्वाधिक जनसंख्या : चुनौतियाँ एवं अवसर

सृष्टि के प्रारम्भ के पश्चात सर्वाधिक चिंतनशील प्राणी मनुष्य का तीव्रगति से विकास हुआ। विकास के इस क्रम में मनुष्य ने एकाकी जीवन से हटकर समूह में रहना प्रारम्भ किया। इस प्रयास में मानव की जनसंख्या दिन–ब–दिन बढ़ती गई और अब धरती पर लगभग जनसंख्या विस्फोट की स्थिति पैदा हो गई हैं। लगभग 73 वर्ष बाद चीन पूरी दुनिया में आबादी के मामले में पिछड़ गया हैं। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष की रिपोर्ट के मुताबिक भारत की आबादी अब चीन से 29 लाख अधिक हो गई हैं। रिपोर्ट में कहा गया हैं कि वर्तमान में भारत की जनसंख्या 142 करोड़ 86 लाख और चीन की जनसंख्या 142 करोड़ 57 लाख हैं।

हालांकि, ऐसा इसलिए नहीं हैं क्योंकि भारत ने अपनी जनसंख्या नीति को सफलतापूर्वक लागू नहीं किया हैं, बल्कि इसलिए कि चीन की प्रजनन क्षमता अनुमान से कम रही हैं।

इस रिपोर्ट में हाँग–काँग तथा ताइवान के आंकड़ों को शामिल नहीं किया गया हैं, जिसे चीन अपना हिस्सा बताता हैं। संयुक्त राष्ट्र जनसख्या कोष ने रिपोर्ट में कहा हैं कि भारत में आबादी अगर इसी अनुपात में बढ़ती हैं तो 2050 तक यह आँकड़ा 166 करोड़ के पास जाएगा। वर्तमान में भारत में करीब 80 फीसदी आबादी 50 साल से कम उम्र की हैं। रिपोर्ट के मुताबिक भारत की 25 प्रतिशत आबादी 0 से 14 वर्ष के आयु वर्ग की हैं। 18 प्रतिशत जनसंख्या 10 से 19 वर्ष, 26 प्रतिशत जनसंख्या 10 से 24 वर्ष तथा शेष 24 वर्ष से ऊपर की हैं तथा यहा जीने की औसत आयु एक पुरुष की 71 वर्ष व एक महिला की 74 वर्ष हैं। जबकि चीन में यह आँकड़ा 80 के करीब हैं। सिर्फ 10 बड़े राज्यों – उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, गुजरात, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में यह आबादी लगभग 90 करोड़ हैं तथा भारत जनसंख्या घनत्व के मामले में भी बांग्लादेश के बाद दूसरे स्थान पर हैं।

थॉमस रोबर्ट माल्थस के जनसंख्या वृद्धि के सिद्धांत के अनुसार, "मानव आबादी उस दर की तुलना में बहुत तेज दर से बढ़ती हैं जिस पर मानव निर्वाह के साधन विशेष रूप से भोजन, कपड़े तथा अन्य कृषि आधारित उत्पाद भी बढ़ते हैं।" इसलिए मानवता हमेशा के लिए गरीबी में रहने के लिए अभिशप्त हैं क्योंकि कृषि उत्पाद की वृद्धि हमेशा जनसंख्या वृद्धि से आगे निकाल जाएगी। कामकाजी उम्र की आबादी में वृद्धि से बढ़ती बेरोजगारी, आर्थिक और सामाजिक जोखिमों को बढ़ावा मिल सकता हैं। उच्च जनसंख्या वृद्धि भी संसाधनों की कमी को प्रभावित करती हैं। रिपोर्ट के अनुसार विश्व स्तर पर, पाँच में एक कामकाजी उम्र का व्यक्ति भारत में रहेगा। चुनौती यह हैं कि एक बड़ी कामकाजी उम्र का व्यक्ति भारत में रहेगा। चुनौती यह है कि महिलाओं की अनुपस्थिति से हमारे श्रम बल का आकार विवश हैं। 15 वर्ष या उसे अधिक आयु की लगभग 30 प्रतिशत महिलाए परिवार के खेतों और व्यवसायों में मजदूरी के काम में लगी हैं कारखानों, परिवहन क्षेत्र और कुशल ब्लू–कॉलर कार्य में महिलाओं की अनुपस्थिति हड़ताली हैं।

निकट भविष्य में भारत की दो तिहाई आबादी नगरों में रहने लगेगी और तब ऊर्जा, पानी, आवास तथा अन्य चीजों की मांग और तेजी से बढ़ेगी। भारत में बढ़ती आबादी के बढ़ते खतरों को इसी से बखूबी समझा जा सकता है कि दुनिया की कुल आबादी का करीब छठा हिस्सा विश्व के महज ढाई फीसदी भू–भाग पर ही रहने को अभिशप्त हैं। जाहिर है कि किसी भी देश की जनसंख्या तेज गति से बढ़ेगी तो वहाँ उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव भी उसी के अनुरुप बढ़ता जाएगा। आकड़ों पर नजर डालें तो आज दुनियाभर में करीब एक अरब लोग भुखमरी के शिकार है और अगर आबादी इसी प्रकार बढ़ती रही तो भुखमरी की समस्या एक बहुत बड़ी वैश्विक समस्या बन जाएगी। जिससे निपटना आसान नहीं होगा। बढ़ती आबादी के कारण ही आज तेल, प्राकृतिक गैसों, कोयला, इत्यादि ऊर्जा के संसाधनों पर अत्यधिक दबाव बढ़ गया हैं। जो भविष्य के लिए बहुत बड़े खतरे का संकेत हैं। जिस अनुपात में भारत में आबादी बढ़ रही हैं, उस अनुपात में उनके लिए भोजन, पानी, स्वास्थ्य, चिकित्सा इत्यादि सुविधाओं की व्यवस्था करना किसी भी सरकार के लिए आसान नहीं हैं।

विगत दशकों में यातायात, चिकित्सा, आवास इत्यादि सुविधाओं में व्यापक सुधार हो रहे है, लेकिन तेजी से बढ़ती आबादी के कारण ये सभी सुविधाएं भी बहुत कम पड़ रही हैं। जनसंख्या वृद्धि की वर्तमान की स्थिति कि भयावहता को मद्देनजर रखते हुए पर्यावरण विशेषज्ञों की इस चेतावनी को भी नजरंदाज नहीं किया जा सकता हैं कि यदि जनसंख्या वृद्धि

की रफ्तार में अपेक्षित कमी लाने में सफलता नहीं मिली तो निकट भविष्य में एक दिन ऐसा आएगा, जब अन्य सुविधाएं तो दूर, रहने के लिए भी धरती कम पड़ जाएगी।

इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पॉप्युलेशन साइन्स के अनुसार बेरोजगारी की समस्या तभी पैदा होगी जब कौशल विकास की रफ्तार जनसंख्या के अनुपात में नहीं बढ़ेगी। जैसा कि रिपोर्ट में बताया गया वर्तमान में भारत में युवा आबादी का प्रतिशत सर्वाधिक हैं। जिसे हमारे देश की रीढ़ भी कहा जा सकता है, को उनकी शिक्षा, कौशल और स्वास्थ्य विकल्पों के मामले में सशक्त बनाने केलिए दूरदर्शी नीतियों और कार्यक्रमों को अपनाकर अविश्वसनीय आर्थिक विकास हासिल किया जा सकता हैं। बढ़ती युवा आबादी भारत के विकास का एक बड़ा अवसर प्रदान करती हैं, जो पथ – प्रदर्शक नवाचार की संभावना से परिपूर्ण हैं। वर्तमान में बढ़ती युवा पीढ़ी का अगर सभी दिशा में उपयोग करने व अन्य सभी क्षेत्रों में सक्षम होंगे। इससे उच्च कर राजस्व प्राप्त होगा जिसे सार्वजनिक वस्तुओं जैसे स्वास्थ्य देखभाल, पर्यावरण परियोजनाओं तथा अन्य महत्वपूर्ण दिशाओं में सुधार हेतु खर्च किया जा सकता हैं।

बढ़ती जनसंख्या से खेती और उद्योग पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं से लाभान्वित होने में सक्षम होंगे। जिसका अर्थ हैं कि जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ती हैं, खाद्य उत्पादन और विनिर्माण उत्पादन जनसंख्या वृद्धि की तुलना में तेजी से बढ़ने में सक्षम होते हैं। उच्च आबादी लोगों के एक महत्वपूर्ण समूह को अधिक जीवंत समाज बनाने में सक्षम बना सकती हैं। जब जनसंख्या बढ़ती हैं तो यह व्यापक सांस्कृतिक श्रेणी की गतिविधियों के समर्थन को सक्षम कर सकती हैं।

जनसंख्या का आकार राष्ट्रों, क्षेत्रों और पीढ़ियों के बीच सबन्धों को आकार देनेवाली शक्ति गति से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ हैं। हालांकि, यह एक दोधारी तलवार की तरह हैं जिसे कुशलता से चलाने की आवश्यकता है।

संजय कुमार
रक्षा सम्पदा निदेशालय, पुणे

गुप्त दान : असली दान

एक नगर में रामदास नामक सेठ जी रहते थे जो ईश परायण थे तथा अपने व्यवसाय के अलावा भगवद सेवा व समाज के जरूरत मंद लोगों की सेवा करते रहते थे। इनके पास आने वाला प्रत्येक याचक खुश होकर जाता था। ये प्रत्येक सेवा कार्य को शुभ भी रखते थे। इनके मुख्य सेवा कार्य अनाथ कन्याओं का विवाह सम्पन्न करवाना, भूखे परिवार को अन्न दिलवाना, प्यासे हेतु पानी की व्यवस्था करवाना, रुग्ण लोगों हेतु दवा आदि की व्यवस्था करवाना व धार्मिक आयोजन में यथाशक्ति दान देना थे।

इसी नगर में रामदास जी के मोहल्ले में ही एक अन्य सेठ जी रहते थे। उनका नाम मोहन लाल था। उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी थी। उनका व्यवसाय बहुत फलफूल रहा था। उनके 5 पुत्र थे जो परदेश में अपना धंधा करते थे। प्रतिदिन लाखो रुपए की आय थी। लेकिन मोहनलाल जी दानपुण्य करने में विश्वास नहीं रखते थे। लोग उन्हें कंजूस सेठ के नाम से जानते थे। उनके पास कोई याचक भूल से आ भी जाता तो वे उसे बिना कुछ दिए भगा देते थे। ज्यादा ही याचना की जाती तो यह कह कर पल्ला झाड़ लेते कि मेरे पास देने को क्या हैं? जाओ रामदास के पास चले जाओ। इस नगर में वही एक धन्ना सेठ हैं लोग समझते की यह कंजूस सेठ रामदास जी से ईर्ष्या करता हैं। इसलिए वहाँ भेज रहा था। लोग वहाँ जाते और उनका कार्य पूरा हो जाता।

एक दिन ऐसा आया कि रात्री करीब 8 बजे कंजूस सेठ मोहनलाल जी को दिल का दौरा पड़ा और भगवान को प्यारे हो गये। यह खबर रामदास जी तक पहुंची तो वे शव की सुरक्षा एवं रात्रि रखवाली हेतु कुछ सज्जनों के पास गए लेकिन उनके साथ कोई नहीं आया। उन्होनें कुछ मजदूरों को बुलाकर शव की रक्षा करवाई तथा स्वयं भी शव के पास बैठ गए तब तक उनके पुत्रों को सूचना हुई और वे भी आ गए।

सुबह जब शवयात्रा रवाना हुई तो उस धन्ना सेठ की अंतिम यात्रा में मात्र 15–20 लोग थे तथा वे भी अनमने भावों से शव को अग्नि दे दी गई। नगर में सेठ जी की मृत्यु के समाचार को कोई विशेष स्थान नहीं दिया गया। 12 दिनों कि सारी रस्म पूरी हो गई।

तेरहवें दिन एक याचक रामदास जी के पास अपनी पुत्री के विवाह में आर्थिक सहयोग की याचना लेकर आया तो सेठ जी ने जो कुछ कहा उसे सुनकर नगरवासियों को आश्चर्य हुआ और उनकी भावना श्री मोहनलाल जी के प्रति निष्ठा में बदल गई।

उन्होंने बताया कि मैं आज तक जो भी सेवा कार्य करता था उसके पीछे दानवीर सेठ मोहनलाल का ही हाथ था। सारा धन वे ही उपलब्ध करवाते थे तथा अपना नाम न बताने की शर्त पर ही व्यय करते थे। इसके अलावा उन्होंने मुझे एक सौगन्ध दिलवा रखी थी कि तुम्हें गंगा मैया कि सौगन्ध है कि जब तक मेरा देहांत न हो जाए, मेरी अन्त्येष्टि न हो जाए तथा मेरे 12 दिन न हो जाए तब तक मेरे द्वारा किए गए कार्यों का उल्लेख कहीं भी नहीं करोगे। इसलिए मैंने अंतिम समय तक इस राज को छुपाए रखा। उनके पुत्रों को जब इस बात का पता चला तो वे भी आश्चर्यचकित रह गए और पिताजी के नाम पर करोड़ो रुपए का दान पुण्य किया।

मुकेश
रक्षा सम्पदा निदेशालय, जयपुर

चिड़िया के घोंसले

मेरा नाम राजकुमार हैं और मुझे स्कूल में दिए गए कार्यों में बड़ी रुचि रहती थी। इस साल स्कूल में गर्मी कि छुट्टियाँ पड़ने से पहले हमारी टीचर ने सभी को विभिन्न पक्षियों के चित्र दिखाकर चिड़ियाँ पर निबंध लिखने के लिए कहा था। सभी बच्चों को स्कूल खुलते ही निबंध टीचर को दिखाना था। पक्षियों की रंग–बिरंगी किताब मुझे बहुत पसंद थी। जब टीचर ने बताया कि उन पर निबंध लिखना है और सबसे अच्छा लिखने वाले को इनाम में वह किताब मिलेंगी, तो मैं खुश हो गया। टीचर ने सभी पक्षियों से जुड़ी कुछ कहानियाँ भी बच्चों को सुनाई। उसके बाद स्कूल की गर्मियों की छुट्टियाँ पड़ गई यूं तो मैं हर साल अपनी गर्मी की छुट्टियाँ बिताने के लिए कही–न–कही जाता था, लेकिन इस साल की छुट्टियों में मैं रोज पास के ही बगीचे में जाकर पक्षियों और उनके घोंसले देखने लगा।

उस बगीचे में गौरेया, दर्जिन, लवा जैसे बहुत–से पक्षी आते थे और मैं बगीचे में आने वाली हर चिड़ियाँ को पहचानने की कोशिश करता और उन्हें गौर से देखता।

मैं देखता था कि हर चिड़ियाँ एक–एक घास, पत्ती, पंख, आदि को जोड़कर कैसे अपना घोंसला बना रही है। मैं सोचता था कि चिड़ियाँ को घोंसला बनाने के लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है। मैं चाहता था कि किसी तरह से उन पक्षियों की मदद करू।

एक दिन मैंने देखा कि पास के बगीचे में बदमाश लड़को ने लवा चिड़ियों का घोंसला तोड़ दिया है। मुझे यह देखकर बहुत दुख हुआ। मैंने सोचा कि क्यों न मैं इनके लिए खुद एक–दो घोंसले बना दूँ। शायद ये इसका इस्तेमाल कर लेंगी।

मुझे लगा कि में कुछ ही देर मैं घोंसला बनाकर तैयार कर दूंगा। लेकिन मैं पूरा दिन तिनको और दूसरी चीजों से चिड़ियाँ का घोंसला बुनता रहा बड़ी मुश्किल से जब घोंसला तैयार हुआ, तो घोंसले को पेड़ पर टिकाने के लिए कुछ मिला नहीं।

मेरी माँ यह सब देख रही थी। तभी मैंने माँ को बताया, "देखिये न, मैंने चिड़ियाँ के लिए एक घोंसला बनाया हैं। मगर यह उतना सुंदर नहीं हैं, जितना चिड़िया बनाती हैं। मैंने सोचा था आसानी से एक सुंदर घोंसला बन जाएगा। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। यह घोंसला अंदर से काफी कठोर बन गया हैं। क्या आप इसे मुलायम बना देंगी?''

किसी तरह से मेरी माँ ने उस घोंसले को थोड़ा ठीक किया। उसके बाद मैंने उस घोंसले को धागे की मदद से पेड़ पर टिका दिया।

अब मैं बगीचे में बैठकर लवा पक्षी के आने का इंतजार करने लगा। वो पक्षी बगीचे में आए तो लेकिन मेरे द्वारा बनाया गया घोंसला उन्होने इस्तेमाल नहीं किया। मेरे साथ मेरी माँ भी बगीचे में आई थी, मेरी माँ ने मुझे उदास देखकर कहा, तुम परेशान मत होना, अभी चिड़िया घोंसले पर आ जाएगी"।

तभी एक लवा पक्षी ने आकर मेरे द्वारा बनाए गए घोंसले को तोड़ दिया। अब मैंने मुँह लटका लिया तब मुझे मेरी माँ ने समझाया कि तुम्हें दुखी नहीं होना चाहिए देखों, तुम्हारे द्वारा इस्तेमाल की गई चीजों से ही लवा पक्षी अपना घोंसला बना रहे हैं। हो सकता है कि इन्हें दूसरों का बनाया हुआ घोंसला पसंद नहीं आता हो। मैंने कहा," माँ मैं अपने स्कूल के निबंध में यह सब कुछ लिखुंगा।

तभी मैंने देखा और अपनी माँ को बताया कि देखो लवा पक्षी अपना घर झाड़ियों में बना रहे हैं। "जवाब में मेरी माँ बोली, "हाँ बेटा, मैंने सुना था कि लवा पक्षी अपना घोंसला किसी के घर के रोशनदान या पेड़ पर ही बनाते हैं। आज यह नई बात पता चली हैं।"

थोड़े ही दिनों में स्कूल कि गर्मियों की छुट्टियाँ खत्म हो गई। मैंने स्कूल जाकर लवा पक्षी के बारे में लिखा और

निबंध प्रतियोगिता जीत ली। इनाम में मनपसंद चिड़ियों वाली किताब मिलने पर में खुश हो गया।

प्रतियोगिता जीतने के बाद भी मैं रोज चिड़ियों कि चहचहाहट सुनने के लिए उस बगीचे में जाकर घंटों बैठता था मानो मेरी चिड़ियों के साथ दोस्ती हो गई हो।

कहानी से सीख

चिड़ियाँ के घोंसले की कहानी से यह सीख मिलती है कि छोटी–छोटी बात पर मन दुखी नहीं करना चाहिए। साथ ही आसपास की चीजों पर गौर करने से हमें काफी कुछ नया जानने को मिलता हैं।

राजकुमार मीना
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

संसार के दो मेहमान...

ज्येष्ठ का महीना था, दोपहर का समय था और सूर्य की तपन शरीर को जला रही थीं। गाँव के कुएं पर एक वृद्ध पनिहारिन पानी भर रही थी। वही पास से एक तपस्वी ऋषि गुजर रहा था, जो खुद को सब से बड़ा ज्ञानी ओर और तर्कवान मानता था। गर्मी और प्यास के कारण तपस्वी ऋषि का बुरा हाल था।

तपस्वी ऋषि कुएं के पास जा के वृद्ध पनिहारिन से बोले : माते! पानी पिला दीजिये बड़ा पुण्य होगा।

पनिहारिन बोली : मुनिवर, मैं तुम्हें जानती नहीं। अपना परिचय दो। मैं पानी पिला दूँगी।

तपस्वी ऋषि ने कहा : मैं मेहमान हूँ, कृपया पानी पिला दें।

पनिहारिन बोली : तुम मेहमान कैसे हो सकते हो? संसार में दो ही मेहमान हैं–पहला धन और दूसरा यौवन। इन्हे जाने में समय नहीं लगता। सत्य बताओ कौन हो तुम?

(तर्क से पराजित तपस्वी ऋषि अवाक् रह गए।)

तपस्वी ऋषि बोले : मैं सहनशील हूँ, अब आप पानी पिला दें।

पनिहारिन ने कहा : नहीं, सहनशील तो दो ही हैं – पहली, धरती जो पापी–पुण्यात्मा सबका बोझ सहती हैं, उसकी छाती चीरकर बीज बो देने से भी अनाज के भंडार देती है, दूसरे पेड़ जिनको पत्थर मारो फिर भी मीठे फल देते हैं। तुम सहनशील नहीं। सच बताओ तुम कौन हो?

(तपस्वी ऋषि मूर्छा की स्थिति में आ गए और तर्क–वितर्क से झल्ला उठे।)

तपस्वी ऋषि बोले : मैं हठी हूँ।

पनिहारिन बोली : फिर असत्य। हठी तो दो ही हैं– पहला नाखून और दूसरे केश (बाल), कितना भी काटो, बार–बार निकल आते हैं। सत्य कहे कौन हैं आप ?

(तपस्वी ऋषि अपमानित और पराजित हो चुके थे)

तपस्वी ऋषि ने कहा : फिर तो मैं मूर्ख ही हूँ।

पनिहारिन ने कहा : नहीं, तुम मूर्ख कैसे हो सकते हो? मूर्ख दो ही हैं– पहला राजा जो बिना योग्यता के भी सब पर शासन करता हैं दूसरा दरबारी पंडित जो राजा को प्रसन्न करने के लिए गलत बात पर भी तर्क करके उसको सही सिद्ध करने की चेष्टा करता हैं।

(कुछ बोल ने सकने की स्थिति में तपस्वी ऋषि वृद्ध पनिहारिन के पैर पर गिर पड़े और पानी की याचना में गिड़गिड़ाने लगे)

वृद्ध पनिहारिन ने कहा : उठो वत्स !

(आवाज सुनकर तपस्वी ऋषि ने ऊपर देखा तो साक्षात माता सरस्वती वहाँ खड़ी थी, तपस्वी ऋषि पुनः नतमस्तक हो गए)

माता सरस्वती ने कहा : शिक्षा से ज्ञान आता हैं न की अहंकार से। तुमने शिक्षा के बल पर प्राप्त मान और प्रतिष्ठा को ही अपनी उपलब्धि मान लिया और अहंकार कर बैठा इसलिए मुझे तुम्हारे चक्षु खोलने के लिए ये स्वांग करना पड़ा।

तपस्वी ऋषि को अपनी गलती समझ में आ गई और भरपेट पानी पीकर वे आगे चल पड़े।

सीख : विद्वता पर कभी घमंड न करें। घमंड विद्वता को नष्ट कर देता हैं।

आकाश
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

एक और आखिरी प्रयास

किसी गाँव में एक व्यापारी रहता था तथा उसकी भगवान में बड़ी आस्था थी। एक बार व्यापारी किसी दूसरे शहर से अपने घर लौट रहा था। बस से उतरकर वह पैदल अपने घर के रास्ते पर जा रहा था, तभी रास्ते में उसे एक बड़ा सा चमकीला पत्थर दिखा। उस पत्थर की ओर व्यापारी आकर्षित हो गया और उसने सोचा की क्यों न इसे अपने साथ ले जाऊँ? इस पत्थर से अपने घर के लिए शानदार भगवान की मूर्ति बनवाऊंगा।

व्यापारी ने पत्थर उठा लिया और रास्ते में ही एक प्रसिद्ध मूर्तिकार की दुकान पर रुका और उसे कहा– इस पत्थर की एक खूबसूरत सी देवी माँ की प्रतिमा बना दीजिये।

मूर्तिकार ने कहा – ठीक हैं बन जाएगी, आप कुछ दिन बाद आकार ले जाइएगा।

अब मूर्तिकार ने उस पत्थर को तराशने का काम शुरू किया और अपने औज़ार लेकर पत्थर को काटने में जुट गया। जैसे ही मूर्तिकार ने पहला वार किया उसे पता चला कि पत्थर बहुत ही कठोर है। मूर्तिकार ने एक बार फिर से पूरे जोश के साथ प्रहार किया लेकिन पत्थर टस से मस भी नही हुआ। अब तो उसको पसीना छूट गया। वो लगातार हथौड़े से प्रहार करता रहा लेकिन पत्थर तोड़ने में नाकाम रहा।

कुछ दिन बाद जब व्यापारी मूर्तिकार से अपनी मूर्ति लेने आया, तब मूर्तिकार ने उसे सारी बात बताते हुए कहा की इस पत्थर से मूर्ति नहीं बन सकती। इस पत्थर को लेकर वह वहाँ से चला गया। आगे जाकर उसके किसी दूसरी दुकान के मूर्तिकार को वही पत्थर मूर्ति बनाने के लिए दे दिया।

अब इस मूर्तिकार ने अपने औज़ार उठाए औए पत्थर काटने में जुट गया। जैसे ही उसने पहला हथौड़ा मारा पत्थर टूट गया, चूंकि पत्थर पहले मूर्तिकार की चोटों से काफी कमजोर हो गया था। व्यापारी यह देखकर बहुत खुश हुआ और देखते ही देखते मूर्तिकार ने देवी माँ की सुंदर प्रतिमा बना दी। व्यापारी मन ही मन पहले मूर्तिकार की दशा सोचकर मुस्कुराया की उस मूर्तिकार ने 99% मेहनत की लेकिन आखिर में थक गया। काश! उसने एक आखिरी प्रहार और भी किया होता तो वो सफल हो जाता।

सीख :

दोस्तो, यही बात हम में से कई लोगों पर भी लागू होती है। बहुत से लोग जिन्हें लगता है कि कठिन प्रयासों के बावजूद वे सफल नहीं हो पा रहे, लेकिन सच तो यह है कि वो आखिरी प्रयास से पहले ही थक जाते हैं। लगातार कोशिश करते रहिए। क्या पता आपका अगला प्रयास ही वो आखिरी प्रयास हो, जो आपका जीवन बदल दें।

मुनेश कुमार मीना
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

मनहूस कौन

राजा कृष्णदेव राय के राज्य में चेलाराम नाम का एक व्यक्ति रहता था। वह राज्य में इस बात के लिए प्रसिद्ध था कि अगर कोई सुबह–सवेरे उसका चेहरा सबसे पहले देख ले तो उसे दिन भर खाने को कुछ नहीं मिलता। लोग उसे मनहूस कहकर पुकारते थे। बेचारा चेलाराम इस बात से दुखी तो होता, लेकिन फिर भी अपने काम में लगा रहता। एक दिन यह बात राजा के कानों तक जा पहुँची। राजा इस बात को सुनकर बहुत उत्सुक हुए। वह जानना चाहते थे कि क्या चेलाराम सच में मनहूस है? अपनी इस उत्सुकता को दूर करने के लिए उन्होने चेलाराम को महल में हाजिर होने का बुलावा भेजा।

दूसरी और चेलाराम इस बात से अंजान खुशी–खुशी महल के लिए चल पड़ा। महल पहुँचने पर जब राजा ने उसे देखा तो वे सोचने लगे कि यह चेलाराम तो दूसरो की भांति सामान्य प्रतीत होता हैं, यह कैसे दूसरे लोगों के लिए मनहूसियत का कारण हो सकता हैं। इस बात को परखने के लिए उन्होंने आदेश दिया कि चेलाराम को उनके शयनकक्ष के सामने वाले कमरे में ठहराया जाए।

आदेशानुसार चेलाराम को राजा के कमरे के सामने वाले कमरे में ठहराया गया। महल के नरम बिस्तर, स्वादि ट खानपान व राजसी ठाठ–बाठ को देखकर चेलाराम बहुत खुश हुआ। उसने भरपेट खाना खाया और रात को जल्दी ही सो गया।

अगली सुबह जल्द ही उसकी आँख खुल गई, लेकिन वह बिस्तर पर ही बैठा रहा। इतने में राजा कृष्णदेव राय उसे देखने के लिए कमरे में आए। उन्होंने चेलाराम को देखा और फिर अपने हर रोज के जरूरी काम के लिए चले गए।

उस दिन संयोगवश ही राजा को सभा के लिए जल्दी जाना पड़ा, इसलिए उन्होंने सुबह का नाश्ता नहीं किया। सभा की बैठक दिन भर इतनी लंबी चली कि सुबह से शाम हो गई, लेकिन राजा को भोजन करने का समय न मिला। थके–हारे, भूखे राजा शाम को भोजन के लिए बैठे ही थे कि परोसे हुए खाने में मक्खी पड़ी देखकर उन्हें बहुत गुस्सा आया व उन्होंने भोजन न करने का निर्णय किया। भूख व थकान से राजा का बुरा हाल तो था ही, ऐसे में गुस्से में आकर उन्होंने इस बात का दोषी चेलाराम को ठहराया। उन्होंने स्वीकार कर लिया कि वह एक मनहूस व्यक्ति है तथा जो कोई भी सुबह–सुबह उसका चेहरा देख ले तो उसे दिन भर अन्न का एक निवाला भी नसीब नहीं होता।

उन्होंने गुस्से में आकर चेलाराम को मृत्युदंड की सजा सुनाई और कहा कि ऐसे व्यक्ति को राज्य में जीने का कोई अधिकार नहीं हैं। जब यह बात चेलाराम को पता चली तो वह भागा–भागा तेनालीराम के पास पहुंचा। उसे मालूम था कि इस सजा से उसे केवल तेनालीराम ही बचा सकते हैं। उसने उन्हें अपनी पूरी व्यथा सुनाई। तेनालीराम ने उसे आश्वासन दिया और कहा कि वह न डरे और जैसा वो कहते हैं बिल्कुल वैसा करें। अगले दिन फांसी के समय चेलाराम को लाया गया। उससे पूछा गया कि क्या उसकी कोई आखिरी इच्छा हैं? जवाब में चेलाराम ने कहा, हां वह राजा समेत पूरी प्रजा के सामने कुछ कहने की अनुमति चाहता है।

इतना सुनते ही सभा का ऐलान किया गया। जब चेलाराम सभा में पहुंचा तो राजा ने उससे पूछा,"बोलो चेलाराम, तुम क्या कहने कि अनुमति चाहते हो?"

चेलाराम बोला,"महाराज, मैं केवल यह कहना चाहता हूँ कि अगर मैं इतना मनहूस हूँ कि जो कोई मुझे सुबह देख ले तो उसे दिन भर भोजन नसीब नहीं होता, तो आप भी मेरी तरह एक मनहूस हैं।"

यह सुन सभी उपस्थित लोग भौचक्के रह गए और राजा की और देखने लगे। राजा ने भी क्रोधित स्वर में कहा, "तुम्हारी ये मजाल, तुम ऐसी बात कैसे और किस आधार पर कह सकते हो?"

चेलाराम ने जवाब दिया ,"महाराज, उस दिन सुबह सबसे पहले मैंने भी आप ही का चेहरा देखा था और मुझे मृत्युदंड की सजा सुनाई गई। इसका अर्थ तो ये हुआ कि आप भी मनहूस हैं, जो कोई सुबह सबसे पहले आपका चेहरा

देख ले उसे मृत्युदंड मिलना तय हैं।"

चेलाराम की यह बात सुनकर महाराज का गुस्सा शांत हुआ और उन्हें यह एहसास हुआ कि चेलाराम निर्दोष हैं। उन्होंने शीघ्र ही उसे रिहा करने का आदेश दिया और उससे माफी मांगी। उन्होंने चेलाराम से पूछा कि उसे ऐसा कहने के लिए किसने कहा था?"

चेलाराम ने जवाब दिया, "तेनालीराम के अलावा कोई और मुझे इस मृत्युदंड से नहीं बचा सकता था। इसलिए मैंने उनके समक्ष जाकर अपने प्राणों की गुहार लगाई थी।"

यह सुनकर महाराज अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने तेनालीराम की खूब प्रशंसा की। उनकी बुद्धिमानी को देख महाराज ने उन्हें रत्नजड़ित सोने का हार इनाम स्वरूप दिया।

सीख : इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती हैं कि बिना सोचे–विचारे हमें किसी की भी बातों में नहीं आना चाहिए।

अमन कुमार
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

जादुई हथौड़े

मनसा गाँव में एक लोहार रामगोपाल रहता था। उसका एक भरा–पूरा परिवार था, जिसका लालन–पालन करने के लिए उसे कई बार दिन रात काम करना पड़ता था। रोज की तरह अब भी काम पर जाने से पहले रामगोपाल ने अपना डिब्बा बांधने के लिए अपनी पत्नी से कहा। पत्नी जब डिब्बा लेकर आई तो रामगोपाल ने कहा, "मुझे आज आने में देर हो जाएगी। शायद में रात को ही आऊँ।" इतना कहकर रामगोपाल अपने काम पर निकल गया। काम पर जाने का रास्ता एक जंगल से होकर गुजरता था। वहाँ जैसे ही रामगोपाल पहुंचा उसे कुछ आवाज सुनाई दी। जैसे ही रामगोपाल कुछ पास गया, तो उसने देखा कि एक साधु भगवान का मंत्र जपने के साथ ही हँस रहा हैं।

हैरान होकर रामगोपाल ने पूछा, "आप ठीक हैं?"

उस साधू को रामगोपाल नहीं जानता था, लेकिन साधू ने एकदम से उसका नाम लेकर कहा, "आओ रामगोपाल बेटा, मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था। मैं भूखा हूँ, मुझे अपने खाने के डिब्बे से कुछ खिला दो।"

बाबा से अपना नाम सुनकर रामगोपाल हैरान था। लेकिन उसने कोई सवाल नहीं किया और सीधा अपना खाने का डिब्बा निकालकर उन्हें दे दिया।

देखते–ही–देखते बाबा ने रामगोपाल का सारा खाना खा लिया। उसके बाद उस साधु ने कहा, "बेटा मैं तो सारा खाना खा गया, अब तुम क्या खाओगे। मुझे माफ करना।"

रामगोपाल ने कहा, "कोई बात नहीं बाबा, मैं काम के लिए बाज़ार जा रहा हूँ, तो मैं वही कुछ खा लूँगा।"

यह सुनकर उस साधू ने रामगोपाल को खूब आशीर्वाद दिया और भेंट के तौर पर एक हथौड़ा दे दिया। रामगोपाल ने कहा, "आपका आशीर्वाद काफी हैं। मैं इस हथौड़े का क्या करूंगा? इसे आप ही रखिए।"

साधु ने जवाब देते हुए कहा, "बेटा, यह मामूली हथौड़ा नहीं हैं। यह जादुई हथौड़ा हैं, जो मेरे गुरु ने मुझे दिया था और अब मैं तुझे दे रहा हूँ, क्योंकि तुम्हारा दिल साफ हैं। इसका इस्तेमाल अच्छे कामों के लिए ही करना और किसी दूसरे के हाथ में इसे कभी मत देना। इतना कहकर वह बाबा वहाँ से अदृश्य हो गए।"

रामगोपाल अपने हाथो में हथौड़ा लेकर बाज़ार काम करने के लिए चला गया। औज़ार बनाने से पहले उसके दिमाग में आया कि आज इसी हथौड़े से लोहा पीटता हूँ जैसे ही उसने लोहे पर हथौड़े से चोट मारी वो सीधा औज़ार बन गया। दूसरी चोट में लोहे के बर्तन बन गए।

रामगोपाल समझ गया कि यह सही में जादुई हथौड़ा हैं। वो जो बनाने की सोच के साथ लोहे पर चोट मारता, लोहा सीधा वही बन जाता। जादुई हथौड़े कि वजह से रामगोपाल का काम जल्दी खत्म हों गया और वो अपने साथ ही उस जादुई हथौड़े को घर ले आया। इसी तरह रोज रामगोपाल उस हथौड़े से जल्दी काम खत्म कर लेता और कई बार ज्यादा बर्तन बनाकर उन्हें गाँव के लोगों को भी बेच देता था। धीरे–धीरे उसके घर के हालत पहले से कुछ ठीक होने लगे।

एक दिन गाँव का मुखिया उसके घर आया और बोला, "हम गाँव वालों को शहर जाने में बहुत ज्यादा समय लगता हैं। क्या तुम अपने हथौड़े से गाँव और शहर के बीच आने वाला एक पहाड़ तोड़ने में मदद करोगे? इससे बीच में एक सड़क बना लेंगे और गाँव से शहर का सफर आसान और छोटा हो जाएगा।"

मुखिया की बात सुनकर रामगोपाल ने उस जादुई हथौड़े से उस पहाड़ को तोड़ दिया। मुखिया और गाँव के लोग बहुत खुश हुए और उसे खूब शाबाशी दी।

पहाड़ तोड़ने के बाद घर लौटते समय लोहार के मन में हुआ की इस जादुई हथौड़े से मेरा काम जल्दी हो जाता

है, लेकिन कुछ ज्यादा फायदा तो हो नहीं रहा है। इसी सोच में डूबे हुए लोहार घर जाने की जगह दुखी होकर जंगल की तरफ चला गया।

उस जंगल में वही साधु बाबा लोहार को दोबारा दिखा। लोहार ने उन्हे अपने मन की सारी बाते बता दी। साधु ने कहा, "इसका उपयोग सिर्फ औज़ार और बर्तन बनाने व पहाड़ तोड़ने तक सीमित नही हैं। इससे तुम अपने मन का कुछ भी बना सकते हो और किसी भी कठिन चीज को आसानी से तोड़ सकते हो। रामगोपाल ने साधु बाबा से उस जादुई हथौड़े को इस्तेमाल करने का तरीका सीखा। उसके बाद रामगोपाल ने बहुत धन कमाया। आज रामगोपाल एक अमीर आदमी बन गया हैं। अभी भी वो जब जरूरत महसूस होती है उस जादुई हथौड़े का इस्तेमाल कर लेता हैं।

सीख : चाहे कोई वस्तु हो या दिमाग, इनका इस्तेमाल पूरी तरह से करना चाहिए। साथ ही अपने पास मौजूद समान का मोल समझना जरूरी है। व्यर्थ हताश होने से काम नही बनता।

रवि कुमार
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

भारत में हृदय रोग : एक 360 डिग्री सिंहावलोकन

परिचय

गैर–संचारी रोगों में आमतौर पर हृदय रोग (सीवीडी), विभिन्न कैंसर, पुरानी सांस की बीमारियाँ, मधुमेह आदि शामिल हैं, जो सभी मौतों का लगभग 60% हिस्सा होने का अनुमान हैं, सीवीडी जैसे इस्केमिक हृदय रोग और सेरेब्रोवास्कूलर जैसे स्ट्रोक 17.7 मिलियन मौतों के लिए जिम्मेदार हैं और प्रमुख कारण हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, दुनिया भर में इन मौतों का पांचवा हिस्सा भारत में होता है, खासकर युवा आबादी में। ग्लोबल बर्डन ऑफ डीजीज स्टडी के नतीजे भारत में प्रति 100000 जनसंख्या पर 272 की आयु–मानकीकृत सीवीडी मृत्यु दर का अध्ययन करते हैं जो 235 के वैश्विक औसत से बहुत अधिक हैं। सीवीडी पश्चिमी आबादी की तुलना में एक दशक पहले भारतीयो को प्रभावित करता हैं।

हम भारतीयों के लिए, सीवीडी में चिंता के विशेष कारण शुरुआती उम्र, तेजी से प्रगति और उच्च मृत्यु दर हैं। भारतीयों को उच्चतम कोरोनारी धमनी रोग (सीएडी) दरों के लिए जाना जाता हैं, और पारंपरिक जोखिम कारक इस बढ़े हुए जोखिम की व्याख्या करने में विफल रहते हैं। भारतीय उपमहाद्वीप में हृदय संबंधी मृत्यु दर और रुग्णता के बारे में कोई संकलित डेटा संग्रह विधियाँ नहीं हैं, और मृत्यु का सही कारण जाने बिना अधिकांश मौतें घर पर भी होती हैं। अस्पताल–आधारित सीवी रुग्णता के बारे में कोई संकलित डेटा संग्रह विधियाँ नहीं हैं, और मृत्यु दर डेटा समग्र सीवी रोग बोझ का प्रतिनिधि नहीं हो सकता हैं। 2016 में भारत में, *CVDs* ने कुल मौतों में 28.1% और कुल विकलांगता–समायोजित जीवन वर्षों (डालयस) में 14.1% का योगदान दिया, जबकि 1990 में यह क्रमशरू 15.2% और 6.9% था।

भारत के भीतर, सीवीडी की दरें केरल, पंजाब और तमिलनाडु राज्यों में उच्चतम के साथ स्पष्ट रूप से भिन्न हैं। इसके अलावा, इन राज्यों में बढ़े हुए कोलेस्ट्रॉल स्तर और रक्तचाप का भी उच्चतम प्रसार हैं। वर्तमान में, भारत में एक और महत्वपूर्ण समस्या उच्च रक्तचाप से ग्रस्त हृदय रोग हैं, जिसमें 2013 में 261,694 मौते हुए (1990 की तुलना में 138% की वृद्धि)। रुमेदित हृदय रोग प्रति 1000 व्यक्तियों पर 1.5–2 के अनुमानित प्रसार के साथ भारत में महामारी के अनुपात में बना हुआ हैं। प्रवासी एशियाई भारतीयों में मूल आबादी की तुलना में सीएडी का 3 गुना अधिक प्रसार हैं। अन्य जातीय समूहो की तुलना में भारतीयों को सीएडी की जटिलताओं के लिए 2–4 गुना अधिक बार अस्पताल में भर्ती होने की संभावना होती हैं। और 40 साल से कम उम्र की आबादी के लिए प्रवेश दर 5–10 गुना अधिक हैं। भारत में रहने वाले भारतीयों में सीएडी का प्रसार मधुमेह रोगियों के लिए 21.4% और गैर–मधुमेह रोगियों के लिए 11% हैं। देश के ग्रामीण हिस्सा में सीएडी का प्रसार शहरी आबादी की तुलना में लगभग आधा हैं।

जोखिम

माना जाता है कि उच्च रक्तचाप, मधुमेह, मेलिटस डिसलिपिडेमिया, धूम्रपान, मोटापा जैसे पारंपरिक जोखिम कारक भारतीयों में सीएडी के बढ़ते प्रसार से जुड़े हैं। इंटर हार्ट अध्ययन में, नौ सामान्य जोखिम कारकों (जिसमें शारीरिक निष्क्रियता, फलों और सब्जियों का कम सेवन और मनोसामाजिक तनाव भी शामिल हैं) ने दक्षिण एशियाई लोगों में 90% से अधिक तीव्र रोधगलन (एएमआई) की व्याख्या की। हालांकि, ये सभी जोखिम कारक अभी भी भारतीयों में सीएडी कि शुरुआत की व्यापकता या कम उम्र की पूरी तरह से व्याख्या नहीं कर सकते हैं। भारतीय आबादी में पारंपरिक जोखिम कारकों का समग्र बोझ तेजी से बढ़ रहा है।

धूम्रपान

2016 तक, चीन के बाद, भारत तंबाकू का दूसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता था। हालांकि, जून 2017 में ग्लोबल अडल्ट टोबैको सर्वे –2 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में वयस्कों (>15 वर्ष) के बीच तंबाकू के उपयोग के प्रसार में 6% की गिरावट आई थी। 3 पुरुषों में धूम्रपान की दर 1995–1996 से 2016–2017 तक लगातार गिर रही थी और अवधि में महिलाओं

में 2.9% से 2% तक गिरावट आई थी। 3 पुरुषों में वर्तमान तंबाकू धूम्रपान का प्रसार (23.6%) वैश्विक प्रसार (22%) से अधिक हैं। सीवीडी के कारण तंबाकू का उपयोग सबसे बड़ा परिवर्तनीय और प्रतिवर्ती जोखिम कारक हैं।

मधुमेह

भारतीयों में 18 वर्ष की आयु के प्रत्येक दस व्यक्तियों में से एक का रक्त ार्करा का स्तर बढ़ा हुआ हैं। 2017 में भारत में मधुमेह के 73 मिलियन से अधिक मामले थे जो दुनिया भर में किसी भी देश में सबसे अधिक हैं। 20 और 70 वर्ष के आयु वर्ग में 8.8% के प्रसार के साथ भारत में मधुमेह एक चुनौती बन गया है।

पवन कुमार तिवारी
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

प्यारा हिन्दी पखवाड़ा

अपने शब्दो को स्वर माला में ढाल कर
हम कविता बनाकर लाते हैं।

मिलकर सभी सहकर्मी
हिन्दी पखवाड़े में सुनाते हैं।

अपनी कविताओं के जरिए हम
हिन्दी का प्रचार फैलाते हैं।

अपने शब्दो को स्वर माला में ढाल कर
हम कविता बनाकर लाते हैं।

मिलकर सभी सहकर्मी हम
हिन्दी पखवाड़े में सुनाते हैं

अपनी प्रतिभा दिखाने का मंच
हम हिन्दी पखवाड़े को मनाते हैं।

मंच संचालक, निर्णायक मण्डल
अपनी–अपनी अहम भूमिका निभाते हैं

अपने शब्दो को स्वर माला में ढाल कर
हम कविता बनाकर लाते हैं।

मिलकर सभी सहकर्मी
हिन्दी पखवाड़े में सुनाते हैं।

हिन्दी शब्दों को मित्रों
हम हर धड़कन तक पहुंचाते हैं।

इनाम जीतकर सहकर्मी एक दूजे का
प्रेम से उत्साह बढ़ाते हैं।

प्यार भरे इस पखवाड़े को हम अपनी
कविताओं से सजाते हैं।

नरेंद्र चौहान
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

जनसंख्या विस्फोट

जनसंख्या विस्फोट का अर्थ है किसी विशेष प्रजाति में व्यक्तियों की संख्या में अचानक वृद्धि। इस शब्द का प्रयोग दुनिया की मानव आबादी को संदर्भित करने के लिए किया जाता हैं। भारत में जनसंख्या विस्फोट एक गंभीर चिंता का विषय बन गया है क्योकि जनसंख्या में वृद्धि में गरीबी और निरक्षरता बढ़ती हैं। इस स्थिति में, देश की अर्थव्यवस्था के साथ जनसंख्या की तीव्र वृद्धि का सामना करना मुश्किल हैं। भारत सरकार अब इस मामले को गंभीरता से देख रही है, और कई राज्यों ने जनसंख्या विस्फोट की समस्या से निपटने के लिए कानून बनाए हैं।

जनसंख्या विस्फोट के प्रमुख कारण

1. जन्म दर में वृद्धि

जनसंख्या वृद्धि के लिए जिम्मेदार प्रमुख कारणों में से एक उच्च जन्म दर हैं। 1891–1990 की अवधि के दौरान, भारत में जन्म दर 45.8 प्रति हज़ार से गिर गई, लेकिन इसे अभी भी उच्च माना जाता हैं। इसलिए, दुर्भाग्य से भारत में, परिवार नियोजन, जनसंख्या शिक्षा, अभियान आदि के संदर्भ में कानून बनाने के बावजूद जन्म दर संख्या में कमी नही देखी गई हैं।

2. मृत्यु दर में कमी

हाल के वर्षों में, मृत्यु दर में कमी जनसंख्या की तीव्र वृद्धि में योगदान देने वाला एक अन्य कारक हैं। 2001 में भारत में मृत्यु दर लगभग 8.5 प्रति हज़ार थी। चिकित्सा क्षेत्र में प्रगति के कारण मृत्यु दर में कमी देखी गई हैं। उदाहरण के लिए, टाइफाइड, चिकनफॉक्स आदि जैसी पुरानी बीमारियाँ अब भयानक नहीं हैं। यहाँ तक कि उचित स्वच्छता सुविधाओ, साफ–सफाई और बेहतर प्रसवपूर्व और प्रसवोत्तर देखभाल के कारण शिशु मृत्यु दर में भी कमी आई है।

3. जल्दी विवाह

शीघ्र विवाह भी जनसंख्या में तीव्र वृद्धि में योगदान देने वाला एक आवश्यक कारक हैं। भारत में एक लड़की की शादी की उम्र 18 साल हैं, जो अन्य देशों की तुलना में बहुत कम हैं, जो लगभग 23 से 25 साल हैं। यह प्रजनन की लंबी अवधि की ओर जाता हैं और बच्चो में बढ़ता हैं।

4. धार्मिक और सामाजिक कारण

भारत में विवाह को एक अनिवार्य सामाजिक संस्था माना जाता हैं और प्रत्येक व्यक्ति को विवाह करना चाहिए। संयुक्त परिवार में प्रत्येक व्यक्ति समान ज़िम्मेदारी लेता हैं और उपभोग के समान स्तर तक उसकी पहुँच होती है। इसलिए लोग संयुक्त परिवार में, अपने परिवार का आकार बढ़ाने से नहीं हिचकिचाते। भारत में ज्यादातर लोग सोचते हैं कि बच्चा जरूरी है और एक पुरुष बच्चा पाने की उम्मीद में वे परिवार का आकार बढ़ाते हैं।

5. गरीबी

जनसंख्या विस्फोट का एक अन्य प्रमुख कारण गरीबी हैं। अधिकतर परिवारों में बच्चे आय का जरिया बनते हैं। बहुत कम उम्र से ही बच्चे स्कूल जाने के बजाय अपने परिवार के लिए काम करना शुरू कर देते

हैं और वे परिवार के लिए एक अनमोल संपत्ति बन जाते हैं। तो, प्रत्येक व्यक्ति परिवार के लिए एक कमाने वाला सदस्य और अतिरिक्त आय बन जाता हैं।

6. जीवन स्तर

यह देखा गया हैं की निम्न जीवन स्तर वाले लोग अतिरिक्त बच्चे पैदा करना चाहते हैं क्योंकि यह उनके लिए एक

दायित्व के बजाय एक संपत्ति होगी। जैसा की हम जानते हैं, भारत की अधिकांश आबादी अशिक्षित हैं, इसलिए वे परिवार नियोजन के महत्व को नहीं समझते हैं। वे इस बात से अंजान हैं कि वे एक छोटे परिवार के साथ बेहतर जीवन का आनंद ले सकते हैं।

7. निरक्षरता

भारत में, 60% आबादी या तो निरक्षर हैं या उसके पास न्यूनतम शिक्षा हैं, जिससे रोजगार के न्यूनतम अवसर मिलते हैं। इसलिए, उच्च निरक्षरता दर और सामाजिक रीति–रिवाजों में विश्वास के कारण, बाल विवाह और एक पुरुष बच्चे के लिए वरीयता अभी भी बनी हुई हैं। नतीजतन, भारत में तेजी से जनसंख्या वृद्धि हो रही है।

जनसंख्या विस्फोट के प्रभाव

1. बेरोजगारी की समस्या

जनसंख्या में वृद्धि से श्रम बल की एक विशाल सेना बन जाती हैं। लेकिन, पूंजी संसाधनों की कमी के कारण इतनी व्यापक श्रम शक्ति को नियोजित करना मुश्किल हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में, प्रच्छन्न बेरोजगारी और शहरी क्षेत्रों में, खुली बेरोजगारी भारत जैसे अविकसित देश की मूलभूत कमियां हैं।

2. भूमि पर अधिक दबाव

अधिक जनसंख्या भूमि पर अधिक दबाव बनाती हैं। यह देश के अधिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालता हैं। एक ओर जहां प्रति व्यक्ति भूमि की उपलब्धता कम होती जा रही हैं वहीं दूसरी ओर उपविभाजन एवं जोतों के विखंडन की समस्या बढ़ती जा रही हैं।

3. पर्यावरण क्षरण

प्राकृतिक संसाधनों का व्यापक उपयोग और तेल, प्राकृतिक गैस और कोयले का ऊर्जा उत्पादन ग्रह पर नकारात्मक प्रभाव डालता हैं। जनसंख्या में वृद्धि से वनों की कटाई भी होती है, जो सीधे पर्यावरण को प्रभावित करती हैं, और यह मिट्टी के पो ाण मूल्य को भी कम करती है और भूस्खलन और ग्लोबल वार्मिंग का कारण बनती हैं।

निष्कर्ष

इसलिए, अंत में, हम यह कहते हुए निबंध को समाप्त कर सकते हैं कि अधिक जनसंख्या को मानवता के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक माना जाता हैं।

दीपक कुमार तिवारी
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

शायद

हमने कई बार चाहा
की ज़िंदगी को घूंट–घूंट पिऊ
वक्त के मीठे पलों को
बड़े चाव से खाऊ
ज़िंदगी की सेहत ऐसी बनाऊं
की खुशी की उम्र कभी न ढले

रात की चारपाई पे इस तरह
सो जाऊ कि सुनहरे ख्वाबों की
मासूम परियाँ मीठे गीत गा कर
पलको पर ही ठहर जाए

हर 'दिन' मासूम बच्चे की तरह
मेरे दरवाजे पर आकर मुझे
आवाज दे और कहे....
की चल.... आज उजालों के साथ
कुछ डुबकी लगाए

वापस लौटते वक्त कुछ
किरणों के मोती मुट्ठी में भरकर
बिखेर दूँ दुनिया के आँगन में।

काश। मैं कभी बड़ा न होता, तो शायद
आज ये हसरतें सच्चाई बन जाता
शायद...... नहीं....... यकीनन

नितिन गणपत शिंदे
छावनी बोर्ड खड़की

अपनी किस्मत पर

कॉलेज से हर रोज
लौटते वक्त
भरी दुहपरी
चिलचिलाती धूप की
गर्मी में
दुबले पतले मजदूरों को
किसी भवन
सड़क पर
जी तोड़ मेहनत करते हुए
देखता हूँ
तो,
घर पर रखा
रूखा–सूखा खा पी कर
पंखे की गरम
हवाओं को
ीतल समझकर
सुकून के साथ
चुपचाप सो जाता हूँ
और फिर
जब उठता हूँ तो
मुझे अपनी किस्मत पर
थोड़ा भी पछतावा नहीं होता हैं।

प्रमोद
रक्षा सम्पदा निदेशालय, जम्मू

आत्म-मुग्धता

आत्म–मुग्धता क्या हैं ?

1. आत्म–मुग्धता का निकटतम अंग्रेजी शब्द '*Narcissism*' हैं जो कि ग्रीक भाषा से लिया गया हैं। इसका तात्पर्य आत्मा–केन्द्रित व्यक्ति के गुण से हैं जो अन्य व्यक्तियों को अपने से निम्न समझता हो एवं अपने आप को सबसे श्रेष्ठ। इस कुवृति के नामकरण में एक ग्रीक साहित्य की कहानी का सीधे तौर पर ताल्लुक है, जिसमें नदियों के देवता का पुत्र नारसिसस (*Narcissus*) अपने ही रूप–यौवन पर अतिमुग्ध होकर आत्महत्या कर लेता हैं। नारसिसस (*Narcissus*) को अपने सौंदर्य पर इतना घमंड था कि वह दूसरों का तिरस्कार करता था। एक दिन एक जंगल में शिकार के वक़्त नारसिसस (*Narcissus*) रास्ता भटक गया और उसे एको (*echo*) नाम कि एक अप्सरा मिली। एको(*echo*) को भी अपने सौन्दर्य पर बहुत नाज था। 'एको' ने नारसिसस (*Narcissus*) से अपने प्रेम का इजहार किया परंतु नरसिसस ने अपने रूप–यौवन के घमंड में उसे भी तिरस्कृत कर दिया। इस बात से क्रोधित होकर 'एको' ने अपनी कुल–देवी से प्रार्थना की। उस देवी ने नारसिसस (*Narcissus*) को शाप दिया कि उसके अपने ही रूप– यौवन के कारण उसका जीवन समाप्त हो जाएगा। एक दिन नारसिसस जब पानी पीने के लिए तालाब में झुका तो वह अपनी ही प्रतिबिंब को देखकर इतना मुग्ध हो गया कि उस प्रतिबिंब के प्रेम में पागल होकर उसे ढूँढने लगा। जब वह उस प्रतिबिंब रूपी प्रेम को नहीं प्राप्त कर सका तो अपने जीवन को व्यर्थ समझकर समाप्त कर लिया। नारसिसस से ही *Narcissism* (आत्म–मुग्धता) शब्द का प्रादुर्भाव हुआ।

2. आज के परिपेक्ष्य में इस शब्द का बहुत ही गहरा सामाजिक संदर्भ हैं। इस वृति को आमतौर पर हम अति आत्म–विश्वास से भी जोड़कर देखते हैं। परंतु आत्म–विश्वास से भी जोड़कर देखते हैं। परंतु आत्म–विश्वास में सकारात्मकता भाव झलकता हैं जबकि आत्म–मुग्धता में नकारात्मकता का भाव होता हैं और यदि दूसरे शब्दों में कहे तो हम यह समझ सकते हैं कि जन किसी व्यक्ति का आत्म–विश्वास उनकी चरम सीमा को पार कर दूसरे व्यक्ति के लिए संभावित खतरा या हानि का वातावरण पैदा करता हैं तो वह आत्म–मुग्धता में परिवर्तित हो जाता हैं। आत्म–विश्वास एवं आत्म–मुग्धता के बीच की रेखा उतनी ही पतली हैं जितनी दोस्ती और प्यार के बीच की रेखा तथा धर्म एवं सांप्रदायिकता के बीच की रेखा। उस रेखा को समझना एवं पहचानना बहुत जरूरी हैं।

आत्म–मुग्धता का सामाजिक/सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

3. आमतौर पर बच्चों में आत्मकेंद्रण (*ego-centrism*) की भावनाएँ पाई जाती हैं जिसे उसके माता–पिता उनका मनोबल बढ़ाने हेतु, उनमें प्रोत्साहन के रूप में, आत्म – विश्वास के फर्क को नहीं समझ पाते हैं और उसके माता–पिता भी प्रोत्साहनों के रूप में परिवर्तन नहीं लाते तो उनमें यह नकारात्मकता की भावना पैदा करता हैं। यही भावनाएँ जब अपनी सीमा रेखा को पार कर जाती हैं तो यह आत्म–मुग्धता का रूप ले लेती हैं।

4. विभिन्न दर्शनिकों ने इस वृति को अपने–अपने तरह से परिभाषित किया हैं। जहां शेक्सपीयर ने 'सॉनट (*Sonnet*)' की कविताओं में इसे 'आत्म–प्रेम' कहा हैं, वहीं फ्रांसीसी बैकन (*Francis Bacon*) ने इसे 'स्व–प्रज्वलित अग्नि' कहा हैं। 19वी शताब्दी में रोमन दार्शनिक बायरन(*Byron*) ने इस वृति को 'स्व–प्रेम' का एक ऐसा 'सर्प' करार दिया जो सबको, यह तक कि अपने–आप को भी डस लेता हैं। 20वी शताब्दी में *Narcissism* (आत्म–मुग्धता) को व्यापक रूप से परिभाषित किया गया। आस्ट्रेलिया के महान वैज्ञानिक 'ओटो रैंक रोसेनफेल्ड (*Otto Rank Rosenfeld*)' ने 1911 में इस विषय पर अपना पहला मनोविश्लेषिक शोध पत्र प्रकाशित किया था। उन्होने इस वृति को 'अहंकारयुक्त आत्म–प्रशंसा' (*vanity of self-admiration*) का नाम दिया था।

5. 20वीं शताब्दी के मध्यांतर के 30–40 सालों में पश्चिम के देशों में आत्म–मुग्धता की समस्या बहुत बढ़ी हैं। 1962 में, अमेरिका के लगभग 12% बच्चों में आत्म–मुग्धता की समस्या पाई गई थी और यही वृति 1990 में 77% बच्चों में पाई गई थी जिसे उस समय के चिंतकों ने गंभीर समस्या के रूप में लिया गया था। पश्चिमी समाज वर्तमान में 'आत्म–मुग्धता' की महामारी से गुजर रहा हैं। 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' (*WHO*) ने इसकी प्रसार एवं परिणाम की व्यापकता को समझते हुए इसे 'आत्म–मुग्धित व्यक्तित्व व्यतिक्रम' (*Narcissistic Personality Disorder&NPD*) एक मनोविकार', के रूप में

दर्ज किया हैं।

6. हालांकि, भारतीय संस्कृति में इस वृति का प्रादुर्भाव पश्चिमी सभ्यता की अपेक्षा कम रहा हैं परंतु जब हम इसका तुलनात्मक अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि जहां पश्चिम में व्यक्तिवादी विचारधारा का महत्व ज्यादा होता हैं वही भारत में इसे एक समाज, प्रथा एवं संस्कृति से जोड़कर देखते हैं। इस तरह भारतीय परंपरा में आत्म–श्रेय लेना अपनी महानता को कम करना समझ जाता हैं, और यह विचारधारा हमारे सामाजिक ताने–बाने में इस तरह जुड़ें हुए है कि इस तरह के व्यक्तित्व व्यतिक्रमों का प्रादुर्भाव कम पाया जाता हैं। हिन्दू सभ्यता के सबसे महान काव्य ग्रंथ के रचियता श्री तुलसीदास जी अपने काव्य में यह कहते हैं कि :–

"कबित विवेक एक नहीं मोरे, सत्य कहू लिखी कागद कोरे"

यानि तुलसीदास जी आत्म–प्रशंसा से परहेज करते हुए अपनी क्षमता को अति–सूक्ष्म आँकते हैं और इसे ईश्वर की अनुकंपा समझते हैं। रहीम ने भी अपने एक दोहे के माध्यम से आत्म–प्रशंसा के दोष को उजागर किया हैं :–

"बड़े बड़ाई न करे, बड़े न बोले बोल।
रहिमन हीरा कब कहे, लाख टाका मो मोल।।"

यानि, जिस प्रकार लाखों का हीरा अपना मूल्य नहीं बताता उसी प्रकार बड़प्पन का भाव रखने वाले व्यक्ति अपनी प्रशंसा नहीं करते हैं, वे अपने कर्मों के द्वारा अपनी महनता को सिद्ध करते हैं। भारतीय दर्शन के प्रणेता 'कबीर' ने तो इसकी व्याख्या एक कदम और आगे बढ़कर की हैं जिसमें उन्होंने अपने महान विचारों को भी ईश्वर को समर्पित कर दिया हैं।

"तुम जिन जन्यों गीती हैं, वह निज ब्रम्हा विचार"

यानि कि आप जिन्हें मेरा गीत समझ रहे हैं वह तो मात्र एक ईश्वरीय विचार हैं। यह उन्होंने अपने आप को गौण एवं भगवान के महत्व को श्रेष्ठ माना हैं। भारतीय परंपरा में बड़प्पन की पहचान अपने बारे में कुछ न कहने से होती हैं

प्रमुख लक्षण

7. आत्म–विश्वास एवं आत्म–मुग्धता के बीच की निर्णायक रेखा को समझना बहुत ही जरूरी हैं। यही रेखा लक्षणों का स्पष्टीकरण करती हैं। आमतौर पर यदि हम किसी व्यक्ति में निम्नलिखित लक्षण देखते हैं तो यह समझ लेना चाहिए कि वह व्यक्ति आत्म–मुग्धता से ग्रसित हो चुका हैं।

क. अहंकार का भाव (*sense of self-importance*)**:** जब किसी व्यक्ति पर अहंकार इतना हावी हो जाए और वह यह समझने लगे कि उसके बिना उसका परिवार, उसका समाज यह यह दुनिया नहीं चल सकती, तो समझ लेना कि वह आत्म–मुग्धता से ग्रसित हो चुका हैं। फिल्म "*Sacred Games*" का नायक 'नवाजूद्दीन सिद्दकी' जब कहता हैं कि "कभी–कभी तो लगता हैं की अपूनीच ही भगवान हैं", तो यह 'अहंकार की भावना' जिसे दूसरे शब्दों में 'गॉड कॉम्प्लेक्स' कहते हैं, को परिलक्षित करता हैं।

ख. संवेदना का अभाव (*Lack of Empathy*)**:** आत्म– मुग्धता के विकार से पीड़ित व्यक्ति संवेदनहीन हो जाता हैं। उसे दूसरे के दुखरूदर्द से कोई वास्ता नहीं होता हैं बल्कि अपने स्वार्थ से मतलब होता हैं। यदि कोई डॉक्टर कहे या सोचे कि सब लोग बीमार पड़े ताकि उसका व्यापार खूब चले, तो आप समझ सकते हैं कि वह 'आत्म–मुग्धता' का शिकार हैं।

ग. परपीड़न (*Sadism*)**:** जब किसी व्यक्ति के स्वार्थ कि भावना इतनी प्रबल हो जाए कि दूसरों को दुखीरू देकर उसे खुशी मिलती हैं तो बेशक वह आत्म–मुग्ध हैं। सड़क किनारे सो रहे कुत्ते को एक व्यक्ति बेवजह ज़ोर से पत्थर मारता हैं, और उसकी असह्य दर्द को देखकर खुश होता हैं, ऐसे व्यक्ति को आत्म–मुग्धता नहीं कहेंगे तो और क्या कहेंगे?

घ. प्रति–आलोचना : एक व्यक्ति, हालांकि, दूसरे की आलोचना करता फिरता हैं लेकिन जब कोई उसकी आलोचना कर दे तो बर्दाश्त नहीं कर पता। ऐसी स्थिति में आप समझ लीजिए कि वह आत्म–मुग्धता का स्तर प्राप्त कर चुका हैं।

ङ. अत्यधिक हावी हो जाना : प्रायः अपने आसपास हम देखते हैं कि एक पति/पत्नी अपनी पति/पत्नी के ऊपर उतना ही हावी रहता हैं कि दूसरा पक्ष अपराध बोध (हनपसज मिमसपदह) से ग्रसित हो जाता हैं और कुंठा (क्मचतमेपवद) के स्तर पर चला जाता/जाती हैं। इस प्रकार के भावों के अति–प्रबलता को आत्म–मुग्धता समझ सकते हैं।

आत्म–मुग्धता के प्रकार

8. एक स्तर तक आत्म–मुग्धता स्वस्थ मानसिकता हो सकती हैं, परंतु जब यह उस स्तर से आगे बढ़ आए तो वह खतरनाक हो जाता हैं, वैसे तो आत्म–मुग्धता के विशेष प्रकारों को समझना और उसे वर्गीकृत करना बहुत मुश्किल हैं, लेकिन आत्म–मुगधित व्यक्ति के हाव–भाव व लक्षणों को देखकर आत्म–मुग्धता के विभिन्न प्रकारों को समझ सकते हैं :–

क. शारीरिक आत्म–मुग्धता (*somatic Narcissism*): कब किसी व्यक्ति को उसके अपने शरीर पर बहुत ही ज्यादा घमंड हो जाता हैं और वह इसे अनावश्यक प्रदर्शित करता हैं तो यह समझा जा सकता हैं कि वह शारीरिक आत्म–मुग्धता का शिकार हैं।

ख. प्रज्ञात्मक आत्म–मुग्धता (*Cerebral Narcissism*): जब कोई व्यक्ति यह समझने लगे की वह दुनिया का सबसे समझदार, प्रज्ञावान तथा बुद्धिमान (*Intelligent*) व्यक्ति हैं तो आप इसे प्रज्ञात्मक आत्म–मुग्धता समझ सकते हैं।

ग. आध्यात्मिक आत्म–मुग्धता (*Spiritual Narcissism*): हमारे समाज में अक्सर हम देखते हैं कि तथाकथित बाबा (आध्यात्मिक गूरु) अपने–आपको भगवान के स्वरूप समझने लगते हैं तथा शिष्यों से उनी पूजा करने की वाकालत भी करते हैं। ऐसे बाबाओं का असली चेहरा तो तब समझ में आता हैं जब वो किसी कुकर्म के जुर्म में सलाखों के पीछे होते हैं। यह आत्म–मुग्धता का ही परिणाम हो सकता हैं कि आशाराम, राम रहीम एवं निर्मल बाबा जैसे तथाकथित आध्यात्मिक गुरुओं को जेल की हवा खानी पड़ती हैं।

घ. स्वस्थ आत्म–मुग्धता (*Healthy Narcissism*): जब एक माँ अपने बच्चे को खाना खिलाने के लिए उसकी प्रशंसा करती हैं "मेरा बेटा/बेटी दुनिया का सबसे ताकतवर बच्चा हैं", की वह खुश होकर खाना खा लेता हैं, तो इसे स्वस्थ आत्म–मुग्धता समझ सकते हैं। किसी बड़े सामाजिक कार्य के लिए किया गया त्याग भले ही आत्म–मुग्धता के स्तर का हो, परंतु उसे एक स्वस्थ आत्म–मुग्धता ही कहा जाएगा। भगत सिंह के बलिदान को कुछ लोगों ने तो अतिवाद भी कहा हैं, लेकिन उनका सर्वोच्च बलिदान उस समय के युवाओं के लिए स्वतंत्रता–संग्राम में भागीदारी हेतु क्रांतिकारी उतेजना का कार्य किया और आज भी यह युवाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं।

आत्म–मुग्धता के कारण

9. किसी भी समस्या के कारण में ही उसका समाधान निहित होता हैं। आत्म–समाधान की समस्या से निजात पाने के लिए उसके कारणों को जानना बहुत जरूरी हैं। वैसे तो इसके बहुत से कारण हो सकते हैं लेकिन उनमे से प्रमुख कारण ाें का उल्लेख किया जा रहा हैः

क. परवरिश (*Parenting*)**:** किसी भी बच्चे में उसके व्यक्तित्व का निर्माण मुख्यतरू उसकी परवरिश पर निर्भर करता हैं। माता–पिता जिन आदर्शों एवं नैतिक मूल्यों का आचरण करते है वही आचरण प्राथमिक रूप से बच्चे भी अनुसरण करते हैं। एक बच्चा भी अपने पारिवारिक वातावरण के अनुरूप अपने–आप को ढालता हैं तथा अपने व्यक्तित्व को अपने समाज में प्रतिस्थापित करता हैं। बहुत ही गौरतलब बात हैं जिसे किसी ाायर ने संजीदगी से कहा हैं, "लहजे बयान कर देते हैं, परवरिश हुई हैं या सिर्फ पाले गए है"।

ख. सामाजिक संरचना (*Social Fabric*)**:** अमेरिका में आत्म–मुग्धता के विकार का सबसे ज्यादा पाया जाना

वहाँ की व्यक्तिवादी सामाजिक संरचना (*Individualistic Social Setup*) की और संकेत करता हैं। एकल परिवारों का ज्यादा होना भी इसका एक घटक हो सकता हैं। एकल परिवार में पालित बच्चों की सामंजस्य क्षमता कम होती हैं क्योंकि उनको अपने एवं रिश्तेदारों के साथ सामंजस्य बढ़ाने का कोई अनुभव नहीं होता।

ग. समकक्ष समूह (*Peer Group*) का प्रभाव : प्रत्येक बच्चे की पृष्ठभूमि अलग होती हैं। उस पृष्ठभूमि का प्रभाव भी एक–दूसरे पर पड़ता हैं। आमतौर पर देखा जाता हैं कि किशोरावस्था में बच्चे अपने माँ–बाप के साथ बगावती तेवर अपनाते हैं, उसी समकक्ष समूह का प्रभाव होता हैं, जो उम्र एवं अनुभव के साथ कम हो जाता हैं।

10. यह बहुत जरूरी हैं कि कोई व्यक्ति एक सफल इंसान बने परंतु इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण हैं कि वह एक अच्छा और समझदार इंसान बने। जिस प्रकार से वैश्विक आर्थिक एवं औद्योगिक विकास हुआ हैं, मानव समाज में परस्पर निर्भरता कम होती गई हैं। परस्परता के अभाव में आत्म–निर्भरता अपने चरम को जाती हैं जिससे और मानवता का ह्रास होता हैं। 'आत्म–मुग्धता' एक विकारात्मक उत्पाद हैं। सही समय पर यदि इसका समाधान नहीं ढूंढा गया तो मानव समाज की भयावह स्थिति ज्यादा दूर नहीं होगी। जो भी मेरे इस प्रयास को पढ़ रहे हैं। उनसे मेरा नम्र निवेदन हैं कि आप थोड़ा–सा समय निकालकर स्व–विश्लेषण करे तथा स्वयं के साथ–साथ अपने आस–पास के लोगो को भी इस नव–चर्चित मनोविकार से अवगत कराएं।

परमेश्वर कुमार सिंह
रक्षा सम्पदा निदेशालय, चंडीगढ़

आपसी फूट पड़ी महंगी

प्राचीन समय में एक विचित्र पक्षी रहता था। उसका धड़ एक ही था, परंतु सिर दो थे। नाम था उसका भारुंड। एक शरीर होने के बावजूद उसके सिरों में एकता नहीं थी और न ही था तालमेल।

वे एक–दूसरे से बैर रखते थे। हर जीव सोचने–समझने का काम दिमाग से करता है और दिमाग होता हैं सिर में। दो सिर होने के कारण भारुंड के दिमाग भी दो थे, जिनमें से एक पूर्व जाने की सोचते तो दूसरा पश्चिम। परिणाम यह होता था कि भारुंड की टांगे एक कदम पूर्व की और चलती, तो अगला कदम पश्चिम की ओर। और भारुंड स्वंय को वही खड़ा पाता था। भारुंड का जीवन बस दो सिरों के बीच रस्सा कस्सी बनकर रह गया था।

एक दिन भारुंड भोजन की तलाश में नदी तट पर घूम रहा था कि एक सिर को नीचे गिरा एक फल नजर आया। उसने चोंच मार कर उसे चखकर देखा तो जीभ चटकाने लगा – 'वाह! ऐसा स्वादिष्ट फल तो मैंने आज तक कभी नहीं खाया। भगवान ने दुनिया में क्या–क्या चीजें बनाई हैं।

'अच्छा! जरा मैं भी चखकर देखूँ।' कहकर दूसरे ने अपनी चोंच उस फल की ओर बढ़ाई ही थी कि पहले सिर ने झटककर दूसरे सिर को दूर फेंका और बोला, 'अपनी गंदी चोंच इस फल से दूर ही रख। यह फल मुझे मिला हैं और इसे मैं ही खाऊँगा।

'अरे! हम दोनों एक ही शरीर के भाग हैं। खाने–पीने की चीजें बांटकर ही खानी चाहिए।' दूसरे सिर ने दलील दी।

पहला सिर कहने लगा, 'ठीक! हम एक शरीर के भाग हैं। पेट हमारे एक ही हैं। मैं इस फल को खाऊँगा तो वह पेट में ही तो जाएगा और पेट तेरा भी हैं।'

दूसरा सिर बोला, 'खाने का मतलब केवल पेट भरना ही नहीं होता भाई। जीभ का स्वाद भी तो कोई चीज हैं। तबीयत को संतुष्टि तो जीभ से ही मिलती हैं। खाने का असली मजा तो मुंह से ही हैं।'

पहला सिर तुनककर चिढ़ने वाले स्वर में बोला, 'मैंने तेरी जीभ और खाने के मजे का ठेका थोड़े ही ले रखा हैं। फल खाने के बाद पेट से डकार आएगी। वह डकार तेरे मुंह से भी निकलेगी। उसी से गुजारा चला लेना। अब ज्यादा बकवास न कर और मुझे शांति से फल खाने दे।' ऐसा कहकर पहला सिर चटकारे ले–लेकर फल खाने लगा।

इस घटना के बाद दूसरे सिर ने बदला लेने की ठान ली और मौके की तलाश में रहने लगा। कुछ दिन बाद फिर भारुंड भोजन की तलाश में घूम रहा था कि दूसरे सिर की नजर एक फल पर पड़ी। उसे जिस चीज कि तलाश थी, उसे वह मिल गई थी। दूसरा सिर उस फल पर चोंच मारने ही जा रहा था कि पहले सिर ने चीखकर चेतावनी दी, 'अरे,अरे! इस फल को मत खाना। क्या तुझे पता नहीं कि यह विषैला फल हैं ? इसे खाने पर मृत्यु भी हो सकती हैं।'

दूसरा सिर हंसा, 'हे हे हे! तू चुपचाप अपना काम देख। तुझे क्या लेना– देना हैं कि मैं क्या खा रहा हूँ? भूल गया उस दिन की बात?'

पहले सिर ने समझाने की कोशिश की, 'तूने यह फल खा लिया तो हम दोनों मर जाएंगे। लेकिन दूसरा सिर तो बदला लेने पर उतारू था।

बोला, 'मैंने तेरे मरने–जीने का ठेका थोड़े ही ले रखा हैं? मैं जो खाना चाहता हूँ, वह खाऊँगा चाहे उसका नतीजा कुछ भी हो। अब मुझे शांति से विषैला फल खाने दे।'

दूसरे सिर ने सारा विषैला फल खा लिया और भारुंड तड़प–तड़प कर मर गया।

सीखः आपस की फूट सदा ले डूबती हैं।

बबलू कुमार सैनी
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

आम के बारें में कुछ रोचक तथ्य

– मुथुलमाड़ा केरल में किसान एकमात्र भारतीय आम उगाते हैं जो जनवरी में बोया जाता हैं। क्षेत्र में दक्षिण का अल्फ़ान्सो भी उगाया जाता हैं, जिसकी कीमत 250–350 र प्रति किलो होती हैं।

– मियाजाकी (*Miyazaki*) आम हैं, जिसकी कीमत लगभग दुनिया का सबसे महंगा आम तीन लाख रुपए किलो हैं। ये आम अब पश्चिम बंगाल और देश के अन्य भागों में भी उगाया जाने लगा हैं।

– केरल के मुथुलमाड़ा शहर में उगाया जाने वाला आम जनवरी में तैयार होता है को मौसम के अनुरूप केवल लैटिन अमेरिकी देश पेरु और बोलिविया में उगाया जाता हैं।

– कर्नाटक का बादामी और तमिलनाडू का मलगोवा भी दक्षिण के अल्फ़ान्सो की उपाधि रखते हैं।

– बंगाल को मुर्शिदाबाद जिला राज्य का आम सेंट्रल भी माना जाता हैं, कोहीचूर, रानीपसंद, सरेंगा, बिमली, अनारस, चंदनकोसा इत्यादि आम श्रेणियों का गढ़ हैं।

इसकी फसल उगाने वालों का मानना हैं कि आम की इन क़िस्मों की उपज जिस स्वाद और सुंगंध क` साथ इन इलाकों में होती हैं,कही अन्य जगह पाया जाना मुश्किल हैं।

अगर आम कि किस्म की बात की जाए तो अल्फ़ान्सो के अलावा भी बेहतरीन आम हैं जो हमेशा से ही राजाओं और नवाबों की पसंद रहे हैं। उदाहरण के लिए कोहिथूर की बात की जाए, तो इसे इतना नाजुक माना जाता हैं कि प्रत्येक फल को कपडे में लपेटकर स्टोर करना होता हैं। यह सिराजुद्दोला बंगाल के अंतिम स्वतंत्र नवाब का मनपसंद आम था।

लाल रंग के आम का मोल अनमोल हैं। प्रसिद्ध और महंगा आम मियाजाकी रंग में लाल होता हैं। इसी की यू पी का श्रेष्ठ आम हुस्न–ए–एरा भी अपने लाल और पीले रंग के कारण 600–700 रु. प्रति किलो बिकता हैं।

– सुदूर असम जिसे पहले–पहल आम का इलाका नही माना जाता, अपने स्थानीय नाम वाले आम की क़िस्मों के कारण बड़े शहरों के लोगों को अपने स्वाद से चमत्कृत कर सकते हैं राज्य संदूरी, केथुरी, माथि–मीठा, ठेंगा, लीसु जैसी आम की किस्में सभी की मनपसंद बन सकती हैं।

इन सब तथ्यों का सार सिर्फ यही बताना हैं कि आमों की प्रचलित किस्में के अलावा एक बड़ा दायरा ऐसे आमों का भी हैं जो कम प्रचलित होने के कारण उभर नहीं पाते पर अपने रंग–रूप और सुगंध में कही पीछे नहीं हैं मलीहाबाद, बाराबंकी और सीतापुर जैसे इलाकों की आम की किस्में उपभोक्ताओं की प्लेटों तक नहीं पहुँच पाती।

– आम की क़िस्मों के *survival* की यदि बात की जाए तो कई क़िस्मों अब खतरे में हैं। इन्हे उगाने में सावधानी और ध्यान की जरूरत हैं, बदलती परिस्थितियों में कही धीरे–धीरे कम होते जा रहे हैं।

– आम हमेशा से राजा महाराजों की पहली पसंद रहा हैं। भारत में आने वाले प्रथम मुगल बाबर को भारत बहुत पसंद नहीं था, हालांकि अपने 'बाबरनामा' में उसने लिखा हैं 'अच्छा आम हिंदुस्तान का सबसे बढ़िया फल हैं'

उसके पड़पोते जहांगीर को भी आम बहुत पसंद थे

भारत में पाई जाने वाली लगभग 1500 आम की किस्में

गुजरात	–	केसर
उत्तर प्रदेश	–	दशहरी, चौसा, श्रेष्ठ हुस्न–ए–एरा, लंगड़ा
महाराष्ट्र	–	अल्फ़ान्सों, रत्नागिरी, पैरी
गोवा	–	मनकुरद (*Mankurad*)

कर्नाटक	–	बादामी नीलम, रसपुरी
तमिलनाडू	–	मालगोवा, इमाम पसंद
आन्ध्रप्रदेश	–	सिंदूरा, चाइना, रसालु, पंचकरधारकलासा (*Panchadharakalasa*) बानागनापल्ली (*Banaganapalli*)
बिहार	–	जरदालू
असम	–	सिंदूरी, केतुरी, मठी–मीठा , ठेंगा

ये कुछ किस्में और इन्हे उगाने के लिए राज्य इनके अलावा उत्तराखंड, जैसे राज्यों में उगाया जाने वाला अगस्त सितंबर माह तक पककर तैयार हो जाता हैं।

चारू तिवारी
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

भारत में गिग (GIG) इकोनॉमी का उदय

गिग इकोनॉमी क्या हैं?

गिग इकोनोमी एक मुफ्त बाज़ार प्रणाली हैं जिसमें आम तौर पर अस्थाई कार्य अवसर मौजूद होते हैं और विभिन्न संगठन अल्पकालिक संलग्नताओं के लिए स्वतंत्र कर्मियों के साथ अनुबंध करते हैं इस प्रणाली में कर्मी एक साथ कई कंपनियों या एजेंसियों से जुड़ कर मुक्त रूप से कार्य कर सकते हैं।

गिग इकोनोमी कैसे काम करती हैं

भारत में 'गिग' (*GIG*) से अभिप्राय लोगों द्वारा प्रायः उबर, ओला, स्वीगी और जमैटो जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्मो के माध्यम से अस्थाई या लचीली प्रकृति की नौकरियों से हैं। हाल के वर्षों में इस प्रकार के कार्य की लोकप्रियता बढ़ी है क्योंकि यह कर्मियों के लिए लचीलापन एवं स्वतंत्रता प्रदान करता हैं और व्यवसायों के लिए एक लागत प्रभावी समाधान हो सकता हैं।

हालांकि, गिग इकोनोमी कर्मियों के लिए नौकरी की सुरक्षा और लाभों की कमी को लेकर चिंताएँ भी मौजूद हैं। अनुमान है कि भारत में भविष्य में गिग इकोनोमी का विस्तार होगा और इसलिए यह गिग कर्मियों के अधिकारों कि रक्षा और उनके प्रति उचित व्यवहार सुनिश्चित करने के लिए सरकारी नियमों एवं नीतियों द्वारा समर्थित होना चाहिए। भारतीय कर्मी संघ (*Indian Staffing Federation*) के 2019 के रिपोर्ट के अनुसार, भारत कार्मिक लचीलापन में विश्व में 5वां स्थान रखता हैं। एक अनुमान के अनुसार गिग अर्थव्यवस्था भारत में लगभग 56% रोजगार उपलब्ध करने की क्षमता रखता हैं।

गिग इकोनोमी व्यापक रूप से टेक्नोलोजी और इंटरनेट एक्सेस पर निर्भर करती हैं। वर्तमान समय में मोबाइल के माध्यम से इंटरनेट की सुविधा लगभग सभी के पास उपलब्ध हैं। उन लोगों के लिए बहुत ही फायदेमंद हो सकती हैं जिनके पास बड़े बड़े तकनीकी उपकरणों की कमी हैं क्योंकि वे मोबाइल के माध्यम से ही जुड़कर अपना कार्य कर सकते हैं।

भारत में गिग इकोनोमी के संबंध में डेटा और शोध की कमी के कारण नीति–निर्माताओं के लिए इनके दायरे, अर्थव्यवस्था एवं कार्यबल पर प्रभाव को समझना कठिन हैं।

भारत में गिग कर्मियों को नियमित कर्मचारियों की तुलना में कम भुगतान किया जाता हैं और उन्हें कोई कानूनी सुरक्षा भी प्राप्त नहीं होती। जिस के कारण कुछ कंपनियाँ करों के भुगतान से बचने के लिए स्वतंत्र ठेकेदारों को गलत तरीके से वर्गीकृत कर उनका शोषण करती हैं।

गिग इकोनोमी के विकास में सहायक चालक

स्मार्टफोन का व्यापक इस्तेमाल और हाई–स्पीड इंटरनेट की उपलब्धता ने कर्मियों एवं व्यवसायों के लिए ऑनलाइन प्लेटफार्म से जुड़ना आसान बना दिया हैं जिससे गिग इकोनोमी के विकास में मदद मिलती हैं। भारत सरकार की आर्थिक उदारीकरण संबंधी नीतियों ने प्रतिस्पर्धा और खुले बाज़ारों को बढ़ावा दिया हैं, जिससे गिग इकोनोमी के विकास को प्रोत्साहित किया हैं।

गिग इकोनोमी भारतीय कामगारों के लिई विशेष रूप से आक र्कि हैं जो लचीली कार्य व्यवस्था की मांग रखते हैं जहां उन्हे अपने व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन को संतुलित करने का अवसर मिलता हैं। गिग इकोनोमी युवा, शिक्षित एवं महत्वाकांक्षी भारतीयों की बड़ी और बढ़ती संख्या से भी प्रेरित हैं, जो अतिरिक्त आय के सृजन के साथ अपनी आजीविका में सुधार की इच्छा रखते हैं।

भारत में ई–कामर्स के तेजी से विकास के कारण डिलीवरी एवं उपस्कर (लॉजीस्टिक) सेवाओं की मांग में उल्लेखनीय भागीदारी हुई हैं, जिसके कारण इन क्षेत्रों में गिग इकोनोमी का विकास हुआ हैं।

वर्तमान में स्टार्ट–अप परंपरा के आने एवं भारतीय सकल घरेलू उत्पादकता में इसकी महत्वपूर्ण भागीदारी से भारतीय अर्थ व्यवस्था को बल मिलता हैं। गिग कार्य–बल के लचीलापन एवं सस्ता होने के कारण स्टार्ट–अप परंपरा को अप्रत्याशित लाभ मिलेगा जो कि अंततः हमारी समृद्ध अर्थव्यवस्था का एक द्योतक हो सकता हैं।

गिग इकोनोमी से जुड़े कर्मियों को नुकसान

भारत में इस तरह के गिग कामगार श्रम–संहिता के दायरे में नहीं आते हैं और स्वास्थ्य बीमा एवं सेवानिवृत योजनों जैसे लाभों तक उनकी पहुँच नहीं हैं। गिग कर्मियों को प्रायः आघात या बीमारी की स्थिति में भी काम करना पड़ता हैं उन्हे नियमित कर्मचारियों के समान उस स्तर की सुरक्षा प्राप्त नहीं होती हैं।

गिग कर्मियों में लिंग के आधार पर मजदूरी विषमता भी पाई जाती हैं जो कि कहीं–न–कहीं महिलाओं को इस तरह के कार्यों के प्रति कम रुझान को प्रदर्शित करता हैं।

गिग इकोनोमी में सुधार हेतु

भारत सरकार को गिग इकोनोमी के लिए स्पष्ट नीतियाँ स्थापित करनी चाहिए ताकि गिग कर्मियों की सुरक्षा सुनिश्चित हो और कंपनियों को जवाबदेह ठहराया जा सके।

सरकार को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि गिग कर्मियों को पेंशन योजनाओं और स्वास्थ्य बीमा जैसी सुरक्षा का लाभ प्राप्त हो सके ।

सरकार को गिग कर्मियों के कौशल में सुधार और उनकी वित्तीय स्थिति में सुधार के लिए शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में निवेश करना चाहिए।

सरकार को नि पक्ष व्यापार अभ्यासों को प्रवर्तित कर और ऐसे नियम बनाकर नि पक्ष प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित कर सकती हैं।

शशि गोदवाल
रक्षा सम्पदा निदेशालय, चंडीगढ़

जी-20

G–20 का गठन साल 1999 में हुआ था। इसको ग्रुप ऑफ ट्वेंटी भी कहा जाता हैं। यूरोपियन यूनियन और 19 देशों का एक अनौपचारिक समूह हैं। G–20 शिखर सम्मेलन में इसके नेता हर साल जुडते हैं और वैश्विक अर्थव्यवस्था को बढ़ाने पर चर्चा करते हैं।

G–20 का गठन: शुरुआत में यह वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंको के गवर्नरों का संगठन हुआ करता था। पहला सम्मेलन दिसंबर 1999 जर्मनी की राजधानी बर्लिन में हुआ था। 2008 में दुनिया ने भयानक मंदी का सामना किया था। इसके बाद इसे शीर्ष नेताओं के संगठन में तब्दील कर दिया गया। इसके बाद यह तय किया गया कि साल में एक बार G–20 राष्ट्र के नेताओं की बैठक की जाएगी। दुनियाभर का 85 प्रतिशत कारोबार G–20 सदस्य देशों में ही होता हैं।

G–20 में शामिल देश: अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राज़ील, कनाडा, चीन, यूरोपियन यूनियन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इन्डोनेशिया, इटली, जापान, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण कोरिया, तुर्की, यूनाइटेड किंगडम और सयुंक्त राज्य अमेरिका शामिल हैं।

G–20 लोगो: G–20 लोगो भारत के राष्ट्रीय ध्वज के जीवंत रंगों केसरिया, सफ़ेद, हरे और नीले रंग से प्रेरित हैं। इससे भारत के राष्ट्रीय पुष्प कमल को पृथ्वी ग्रह के साथ प्रस्तुत किया गया हैं जो चुनौतियाँ के बीच विकास को दर्शाता हैं।

G–20 थीम: भारत का G–20 अध्यक्षता का विषय "वसुधैव कुटुम्बकम" या "एक पृथ्वी – एक कुटुंब – एक भविष्य हैं"। इसे महाउपनिषद के प्राचीन संस्कृत पाठ से लिया गया हैं।

फाइनेंस ट्रैक : G–20 का नेतृत्व सदस्य देशों के वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों द्वारा किया जाता हैं। दोनों ट्रैक के अंदर विषयों से जुड़े कार्य समूह हैं जिनमें सदस्य देशों से संबन्धित मंत्रालयों के साथ–साथ आमंत्रित/अतिथि देशों और विभिन्न अतराष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधि भाग लेते हैं।

आर्थिक विकास : G–20 भारत को दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के साथ जुडने और अपने आर्थिक हितों को बढ़ावा देने के लिए एक मंच प्रदान करता हैं। भारत निवेश और व्यापार को आकर्षित करने के लिए G–20 मंच पर भरपूर लाभ उठा सकता है, जो इसके आर्थिक विकास को गति दे सकता हैं।

वैश्विक मुद्दे : भारत के लिए G–20 जलवायु परिवर्तन गरीबी और असमानता जैसे वैश्विक मुद्दों को संबन्धित करने का एक महत्वपूर्ण मंच हैं। भारत इस मुद्दों का समाधान खोजने और सतत व समावेशी आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए अन्य G–20 देशों के साथ सहयोग कर सकता हैं।

भारत G–20 की अध्यक्षता 01 दिसंबर 2022 से 30 नवम्बर 2023 तक कर रहा हैं। अगले साल सितंबर में होने वाले अंतिम नई दिल्ली शिखर सम्मेलन में प्रतिनिधि मंडलों के 43 प्रमुख जो कि G–20 में अब तक की सबसे ज्यादा संख्या हैं, भाग लेंगे।

21वीं सदी के लिए बहुपक्षीय संस्थान : भारत की G–20 प्राथमिकता में सुधार के साथ बहुपक्षवाद पर ज़ोर देना जारी रहेगा जो अधिक जवाबदेह समावेशी, न्यायसंगत और प्रतिनिधित्व वाला बहुध्रुवीय अंतराष्ट्रीय प्रणाली बनाता हैं जो 21वीं सदी में चुनौतियों का हल देने के लिए उपयुक्त हैं।

महिलाओं के हित में विकास :– भारत उम्मीद करता हैं वो G–20 फोरम का इस्तेमाल महिला सशक्तिकरण और उनके प्रतिनिधित्व के साथ समावेशी विकास और प्रगति को रेखांकित करे। इसमें एसडीजी की उपलब्धियों और सामाजिक आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए महिलाओं को आगे लाने और उन्हे अग्रणी पदों पर पहुंचाने पर ध्यान केन्द्रित करना शामिल हैं।

भारत ने सांस्कृतिक पहलुओं की एक श्रृंखला के साथ अपनी अध्यक्षता कार्यालय के एजेंडे को शुरू किया जिसमें जनभागीदारी की विभिन्न गतिविधियां देश भर के 75 शेक्षणिक संस्थानों के साथ एक विशेष यूनिवर्सिटी कनैक्ट कार्यक्रम,

जी–20 लोगो के साथ एएसआई के 100 स्मारकों को रोशन करना और नागालैंड व हॉर्नबिल उत्सव में *G*–20 का प्रदर्शन शामिल हैं। रेत से भारत के *G*–20 लोगो की कलाकृति बनाने वाले सुदर्शन पटनायक ने ओडिशा की पूरी समुद्र तटपर रेत से भारत के *G*–20 लोगो की कलाकृति भी बनाई। साल भर में कई अन्य कार्यक्रमों, युवाओं कि गतिविधियां सांस्कृतिक प्रदर्शनों और संबन्धित शहर आयोजन स्थलों की जगहों और परम्पराओं को प्रदर्शित करने वाली सैस कि भी योजना बनाई गई हैं।

उपसंहार : *G*–20 दुनिया की 20 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं का समूह हैं, जो वैश्विक अर्थव्यवस्था की दिशा और दशा तय करता हैं, *G*–20 शिखर सम्मेलन के दौरान एजेंडे तय किए जाते हैं, ये समूह रूप से ग्लोबल इकॉनमी आर्थिक स्थिरता, जलवायु परिवर्तन के मुद्दे, सतत विकास इत्यादि प्रक्रियाओं पर काम करता हैं।

रीना ठाकुर
रक्षा सम्पदा निदेशालय, चंडीगढ़

विश्व पर्यावरण दिवस *(05/06/2023)*

*77*वें स्वतंत्रता दिवस का आयोजन *(15/08/2023)*

इतना वक्त कहाँ से लाऊं

संग तुम्हारे हंस हसाऊँ
इतना वक्त कहाँ से लाऊँ,

दस बजते ही दफ्तर जाना
और फाइलों में बतियाना
हारे –थके हुए कदमों से
शाम ले घर वापिस आना
सोचो जरा विवशता मेरी,
मैं तुमको कैसे समझाऊँ
इतना वक़्त कहाँ से लाऊ,

कभी–कभी तो ये होता हैं
मैं जागता हूं, तन सोता हैं
हँसती हैं मुझ पर इच्छाएँ
और बेचारा मन रोता हैं,
रूठ गए, जो लोग अकारण
कैसे जाकर उन्हे मनाऊँ
इतना वक्त कहाँ से लाऊं,

मैं क्या जानु सेर सपाटे
जीवन भर ढोए सन्नाटे,
क्या बतलाऊँ कैसे–कैसे
मौसम मैंने कैसे काटे
चाबी भरी खिलोनों से मैं,
कब तक अपना मन बहलाऊँ
इतना वक्त कहाँ से लाऊं,

सुख ने जब जब की मनमानी
दुख ने अपनी चादर तानी,
पीड़ा के छविगृह में उभरी
छवियाँ कुछ जानी–पहचानी
मेरे पास नहीं कुछ ऐसा
जिस पर पल भरें भी इतराऊँ
इतना वक़्त कहाँ से लाऊँ,

प्रीति
रक्षा सम्पदा निदेशालय, चंडीगढ़

बचपन

एक बचपन का जमाना था
जिस में खुशियों का खजाना था
चाहत चाँद तारों को पाने की थी
पर दिल तितलियों का दीवाना था
खबर न थी कुछ सुबह की
न शाम का ठिकाना था
थक कर आना स्कूल से
पर खेलने भी जाना था
माँ की कहानियाँ थी
परियों का फसाना था
बारिश में कागज की नाव थी
हर मौसम सुहाना था
वो बचपन का जमाना था
जिस में खुशियों का खजाना था

रेखा

यहाँ सब कुछ बिकता हैं

ठहाकों में दबकर मन के अंदर का जज़्बात बिकता हैं,
महज चंद रुपयों की खातिर लोगों का विश्वास बिकता हैं।
तीनों ही लोकों में प्रचुरता से फैला हैं पानी,
बोतलों में बंद होकर वो भी बिकता हैं।
कण–कण में व्यापक हैं वो, सब लोगों में वास हैं उसका,
फिर भी अंधविश्वास में पत्थरों का भगवान बिकता हैं।
सदा सत्य मार्ग पर चलने की शिक्षा देने वाला हैं जो,
मिठाई के बंद डब्बों में उसका भी ईमान बिकता हैं।
लोकतांत्रिक भारत के स्वतंत्र होने का प्रमाण वो कुर्सी,
नोटो में छापे गांधी के लिए उसका भी ताज बिकता हैं।
लोग बाते करते हैं बस ज़िंदों के बिकने की,
यहाँ तो कफन की आस में पड़ी निर्जीव लाश भी बिकती है।

अमित राज
रक्षा सम्पदा निदेशालय, चंडीगढ़

"चुनाव का मौसम"

चुनाव का मौसम आ गया,
मतदान का मौसम आ गया।
मतचिन्हों की भरमार हैं,
सर्व दलों के बहार हैं।
नेताजी दल बंधन में बंध गए
दलों के रंग में रंग गए।
पार्टी का घोषणा पत्र छा गया,
चुनाव का मौसम आ गया।
मतदाताओं की शान हैं,
लोकतंत्र की अपनी जान हैं
लोगों पर चल रही नेताजी के बाण हैं,
आज हर जन की अपनी पहचान हैं।
वोटर आईडी का महत्व बढ़ गया,
चुनाव का मौसम आ गया।
कहीं पर दल रैलियाँ हैं,
कहीं पर दल पताकाएँ हैं।
कहीं पर दल सभाएं हैं,
कहीं पर दल भोजनालय हैं।
बिरयानी, पूड़ी–सब्जी, पुलाव का महक छा गया,
चुनाव का मौसम आ गया।
नेताजी घोषणा कर रहे हैं, नेताजी भाषण दे रहे हैं।
वादों से समा बिखरा गया,
चुनाव का मौसम आ गया
पार्टी कार्यकर्ताओं में उत्साह हैं,
उनमें जीतने की एक चाह हैं
मतदाताओं की पड़ताल हुई,
मतदान केन्द्रों पर पुलिस तैनात हुई।
चुनाव आयोग का दायित्व बढ़ गया,
चुनाव का मौसम आ गया।
मतदान चरणों में बटने लगें
संदेह के बादल छटने लगे।
एग्जिट पोल का चलन बढ़ गया,
चुनाव का मौसम आ गया।
परिणाम का दिन आ गए,
नेताजी बहुत घबरा गए।
कितने बड़बोले असफल हुए,
कितने नेताजी सफल हुए।
जीत की खुशी मनाने का दिन आ गया,
चुनाव का मौसम आ गया।

योगेंद्र कुमार गुप्ता
रक्षा सम्पदा निदेशालय, चंडीगढ़

विनम्रता का महत्व

"स्वाभिमान भी वही श्रेष्ठ हैं जो विनम्रता को प्रथम स्थान पर रखता हैं।" — शेक्सपियर

फलदार वृक्ष ही सदा झुकते हैं। प्रकृति का यह तथ्य हमें हमारे जीवन में फलीभूत होता नजर आता हैं। जो व्यक्ति जितना गुणी होता हैं वह उतना ही विनम्र होता हैं। हमारे धार्मिक ग्रन्थों का एक मूल मंत्र हैं जो नम होकर झुकते हैं, वही ऊपर उठते हैं। विनम्रता एक ऐसा गुण हैं जो व्यक्ति को ऊंचाई के उस मुकाम तक पहुंचा देता हैं। विनम्रता न केवल हमारे व्यक्तित्व में निखार लाती हैं, बल्कि हमारी सफलता का मूल कारण भी बनती हैं। विनम्र व्यक्ति समाज में सम्मान का पात्र बंता हैं मन की कोमलता सदा रहती हैं परंतु कठोरता जल्द ही नष्ट हो जाती हैं। नदी की तेज धारा अपने साथ बड़े–बड़े पत्थर जड़–झखांड पेंडो को बहा ले जाती हैं, परंतु कोमल बेलों और नाजुक पौधों को नहीं बहाती। इसका कारण भी विनम्रता ही है कोमल पौधे तथा बेलों तेज बहाव के आगे झुक जाते हैं तथा पानी को रास्ता देते हैं। किन्तु इसका यह मतलब नहीं समझ लेना चाहिए कि हम हर स्थान पर झुकते रहें, बल्कि इसका यह अर्थ लेना चाहिए कि जहां करी विनम्रता से हो जाए वहाँ अनावश्यक उग्रता ककोई लाभ नहीं। महान कथाकार तथा उपन्यासकार प्रेमचंद के अनुसार,

"जहां नम्रता से काम निकल जाए, वहाँ उग्रता नहीं दिखानी चाहिए।"

यदि आप मर्यादा पूर्ण जीवन जीना चाहते हैं तो उसके लिए मानसिक स्वतंत्रता के साथ नम्रता का मेल होना आवश्यक हैं। विनम्रता के बिना स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं। नम्रता से आशय दब्बूपन से नहीं हैं। दब्बूपन में व्यक्ति का संकल्प व बुद्धि क्षीण होती हैं। वह त्वरित निर्णय नहीं ले पता। हर छोटे–छोटे निर्णयों के लिए वह दूसरों पर निर्भर रहता हैं। जबकि विनम्रता में व्यक्ति स्वतंत्र होता हैं। वह नेतृत्व करने वाला होता हैं। विनम्रता व्यक्ति को विकास व सफलता की ओर अग्रसर करती हैं। विनम्रता से दुनिया को हिलाया जा सकता हैं। दुनिया में एक अलग पहचान बनाई का सकती हैं। विनम्रता,सज्जनता कोई कमजोरी नहीं बल्कि श्रेष्ठ सद्गुण हैं। अब प्रश्न यह उठता हैं कि विनम्र कैसे बनें? उत्तर बेहद सरल हैं सदैव सकारात्मक विचारों से अपनी आत्मा को तृप्त रखें, सात्विक भोजन ग्रहण करें तथा प्रसन्नचित रहें।

संजय चन्द्र पराशर
रक्षा सम्पदा निदेशालय, चंडीगढ़

पर्वतों का महत्व

पर्वतों का महत्व हमारे जीवन में अत्यंत अहम हैं। पर्वतों के बिना जीवन कि कल्पना असंभव हैं। पर्वतों की सुंदरता और सौंदर्य को किसी भी अन्य जगह में ढूंढ पाना संभव नहीं हैं। पर्वतों में कई प्रकार के जीव जन्तु रहते हैं जो अन्य क्षेत्रों में नहीं मिल सकते हैं। पर्वतों में बहुत से विविध प्रकार के प्रकर्तिक संसाधन हैं जो देश के लिए लाभदायक उत्पाद उत्पन्न कर सकते हैं। हमारे देश में पर्वतों को सदैव प्रशंसा की गई हैं। ये संसार के सबसे शांत और सुंदर स्थानों में से एक हैं। ये हमारे देश के लगभग प्रत्येक राज्य में उपस्थित हैं, और हमारे देश को विभिन्न प्रकार की सुंदरता देते हैं। पर्वतों को सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय दृष्टि से बहुत महत्व दिया गया हैं। पर्वतों में रहने वाले जनजातियों का भी महत्व हैं। ये जनजातियों का भी महत्व हैं। ये जनजातियों अपनी संस्कृति और सांस्कृतिक विशेषताओं को बनाए रखने और इनके सुरक्षा के लिए पर्वत एक प्राकृतिक ढाल का काम करते हैं।

पर्वत हमारे जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ये आदिकाल से हमारे जीवन और पृथ्वी पर अपने अनन्त महत्व का प्रतीक रहे हैं। ये हमारे जीवन को अनेक प्रकार के विषयों से संबन्धित करते हैं। पर्वतों से ही हमारे जीवन को वास्तविक धरोहर मिलता हैं। ये हमारी आवाजों को आकृतिक और संगीतात्मक रूप देते हैं। पर्वतों को आक र्ण को स्त्रोत माना जाता हैं। ये प्राचीन काल से ही संस्कृति, साहित्य, व्यापार और विज्ञान के अनेक श्रेणियों का विश्वसनीय स्त्रोत रहे हैं। पर्वतों के कई उपयोग हैं, ये हमारे जीवन को अनेक प्रकार से सुधारते हैं। पर्वतों को सुरक्षित रखने का प्रयास जरूरी हैं ताकि हम आज और अगले पीढ़ी को समृद्ध और सुरक्षित जीवन दे सकें।

पर्वतों के महत्व पर लिखते समय हम इस सच्चाई को नहीं भूल सकते कि पर्वतों के बिना हमारा जीवन कठिन हो जाता हैं। पर्वतों में वनस्पतियों, जीव और प्राणी जैसे विभिन्न जीवन–रूपों के साथ एक गुणवत्ता को सुधार देते हैं और जल स्त्रोत को रोकते हैं। यह रोशनी और रासायनिक रूप से प्राकृतिक वातावरण को भी मजबूत बनाते हैं। पर्वतों का महत्व सामाजिक और आर्थिक तरीके से भी हैं। पर्वत अपने आस–पास लोगों को निवास करने और जीवित रहने के लिए उपयोगी प्राकृतिक स्वरूपों का उपयोग करने देता हैं। यह आस–पास लोगों को आर्थिक रूप से समृद्ध करने के लिए सामाजिक और आर्थिक रूप से उपयोगी स्त्रोतों से भी सहायता प्रदान करता हैं।

पर्वतों का महत्व राजनीतिक तरीके से भी हैं। वैश्विक राजनीति के क्षेत्र में, पर्वतों के बीच में सीमा की रक्षा करने के लिए सुरक्षा और राजनीतिक सुरक्षा के लिए पर्वतों का महत्व होता हैं। आधुनिक दौर में, पर्वतों के महत्व को बढ़ावा देने के लिए, पर्यावरण समझने के लिए, हमारे देश में विभिन्न पर्यावरण संरक्षण के आयोजन किए जाते हैं। तो हम समझ सकते हैं कि पर्वतों का महत्व सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय, राजनीतिक और सामाजिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण हैं हम सभी को इसे समझने और संरक्षण करने के लिए अपने भागीदारी का उपयोग करने की जरूरत हैं।

आदिल प्रताप सिंह
रक्षा सम्पदा निदेशालय, चंडीगढ़

कोरोना वायरस

प्रस्तावना :

कोरोना एक वायरस है जिसके संक्रमण से जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या होती है। कोरोना एक प्राण घातक रोग है और इससे बचाव ही इसकी दवा है। इस वायरस को पहले कभी नहीं देखा गया। यह एक ऐसी बीमारी है जो सीधे तौर पर आपके श्वसन तंत्र को प्रभावित करती है तथा इतनी प्रभावशाली है कि अगर इसका सही वक़्त पर इलाज नहीं किया गया तो मनुष्य के प्राण तक चले जाने की स्थिति बन जाती है। इसका प्रकोप केवल भारत में ही नहीं बल्कि समस्त विश्व में बुरे हालत बन गए। यहाँ तक कि विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लू.एच.ओ.) ने इसे महामारी घोषित कर दिया। इसके आरंभिक लक्षण फ्लू जैसे ही होते हैं जो धीरे–धीरे शरीर में फैलने लगता है तथा एक विकराल रूप धारण कर लेता है। कोरोना वायरस का आकार बहुत सूक्ष्म होता है, परंतु इस सूक्ष्म वायरस ने भारत समेत पूरे विश्व को हिला कर रख दिया। यह आग की तरह पूरे विश्व में फैल गया।

कोरोना की उत्पति :

कोरोना नामक वायरस प्रथम बार 1930 में मुर्गी में पाया गया था। इससे उस को सांस लेने में कठिनाई आई। सन 1940 तक यह वायरस अन्य जानवरों में फैल गया और 1960 में यह एक व्यक्ति को भी हो गया था। इसके बाद 2019 में यह वायरस चीन में आया और इस बार यह वायरस चमगादड़ के माध्यम फैला और सम्पूर्ण विश्व इसकी चपेट में आ गया। इस वायरस को पहली बार दिसंबर 2019 में चीन के वुहान जिले में देखा गया। इसलिए इसका नाम कोविड–19 रखा गया। कोरोना वायरस एक बहुत बड़ी महामारी है जिसकी चपेट में पूरा विश्व आ चुका है। इस वायरस का प्रमुख भागीदार चीन को माना जा रहा है। डबल्यूएचओ संगठन के अनुसार इस वायरस के मुख्य लक्षण– बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ, नाक बहना तथा गले में खराश आदि हैं। यह एक संक्रमित रोग है। यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में प्रवेश करता है। यह वायरस खांसी और छींक के माध्यम से फैलता है। कोरोना वायरस को चीन ने काफी समय तक नहीं फैलने दिया। परंतु इस वायरस को नष्ट नहीं कर पाए जिस वजह से यह वायरस अन्य देशों में भी फैल गया। चीन ने इस वायरस को अन्य देशों से छुपाया जिस वजह से आज पूरा विश्व इस महामारी में उलझा हुआ है। यह वायरस इतना खतरनाक साबित हुआ कि समस्त विश्व पर एक बहुत बड़ा संकट मंडरा गया तथा इसकी कोई दवाई भी नहीं थी। इस विकराल विश्वव्यापी महामारी के कारण लाखों लोगों ने अपनी जान गंवा दी और असंख्य लोग अभी भी संक्रमित हैं।

इस महामारी से बचाव हेतु संपूर्ण विश्व में जनता कर्फ्यू लगाया गया और सभी नागरिकों को घर में रहने का अनुरोध किया गया। प्राण धातक रोग कोरोना एक वायरस जनित रोग है जिसने अपने प्रभाव से पूरे विश्व को अपने कब्जे में ले लिया और जिसे रोक पाना नामुमकिन लग रहा था। इसलिए भारत सरकार ने अपने नागरिकों की जीवन रक्षा के लिए देश में संपूर्ण लॉकडाउन घोषित कर दिया।

लॉकडाउन :

कोरोना महामारी से बचने के लिए भारत समेत विश्व के अन्य कई देशों में लॉकडाउन लगाया गया। आपातकालीन स्थिति को लॉकडाउन कहते हैं जिसका सीधा अर्थ होता है तालाबंदी। इस स्थिति में घर से बाहर जाने पर रोक लगी होती है। जब लॉकडाउन बृहत्तर स्तर पर लागू होता है तो यह कर्फ्यू का रूप धारण कर लेता है। भारत में दिनांक 24 मार्च, 2020 को लॉकडाउन लगाया गया था। भारत के प्रधानमंत्री का यह एक ऐतिहासिक कदम था जो देश के लिए एक वरदान साबित हुआ। देश के नागरिकों के स्वास्थ्य तथा जीवन रक्षा के मद्देनजर पूरे देश में सम्पूर्ण लॉकडाउन लगाया गया जो मानव इतिहास में पहली बार घटित हुआ। धीरे–धीरे इसे कई बार बढ़ाया गया जिसके कारण कोरोना वायरस के प्रसार पर रोक लग पाई।

कोरोना वायरस के लक्षण :

तेज बुखार

लगातार खांसी

शरीर में थकान

बेचैनी

सांस लेने में तकलीफ

नाक का बहना

गले में दर्द

कई लोगो में तो इस वायरस के लक्षण दिखाई भी नहीं दिए जिसके कारण यह और तेजी से फैला। कोरोना में पहले बुख़ार होता है, फिर कुछ दिन बाद सूखी खांसी होती है तथा लगभग हफ्ते बाद सांस लेने में कठिनाई होती है। इन सब लक्षणों का सीधा अर्थ है– कोरोना का संक्रमण। इस रोग से संक्रमित होने पर कई परेशानियों का सामना करना पड़ा है। इससे बहुत से लोगों की मौत भी हुई है। इस वायरस के लक्षण स्वाइन फ्लू से मिलते–जुलते हैं। इसलिए उक्त लक्षण महसूस करने पर अपनी कोरोना जाँच अवश्य करवाएं। यदि किसी बूढ़े–बुजुर्ग को यह रोग होता है तो उसके जीवित बचने के आसार बहुत कम होते हैं।

कोरोना संक्रमण होने पर :

यदि किसी व्यक्ति ने कोरोना जांच कारवाई तथा उसकी रिपोर्ट कोरोना पोजिटिव आई है अर्थात वह इससे संक्रमित है, तो उसे घबराने की कोई जरुरत नहीं है। इस वक्त अपने आप पर संयम रखते हुए खुद को क्वारंटाइन कर लेना चाहिए। क्वारंटाइन से अर्थ है हमें किसी भी व्यक्ति के सम्पर्क में नहीं जाना है, किसी खुले कमरे में अकेले ही रहना है जंहा पर हर वस्तु की व्यवस्था हो। संक्रमित होने पर हमें लगातार 15 दिन तक अपने किसी परिवार जन या किसी अन्य व्यक्ति के संपर्क में नहीं आना है। इससे कोरोना किसी अन्य को नहीं हो पाएगा तथा खुद को क्वारंटाइन कर कोरोना के फैलाव को रोक सकते हैं। इस बीमारी से संक्रमित लोगों को अस्पताल में भर्ती किया जाता है तथा उन्हें नियमित दवाईयां दी जाती हैं जिसकी वजह से बिना वैक्सीन के 85 फीसदी लोग स्वस्थ हो रहे हैं। इसलिए यदि कोई कोरोना संक्रमित व्यक्ति है तो उसे बिना घबराए अस्पताल जाकर अपना इलाज करवाना चाहिए, जब तक आप स्वस्थ न हों तब तक दूसरे लोगों से दूर रहें ताकि यह रोग किसी और तक न पहुंच पाए।

कोरोना से बचाव के उपाय :

कोरोना वायरस पूरी दुनिया में बहुत तेजी से फैला। इससे बचाव के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय ने गाइडलाइन जारी की। हमें इन निर्देशों का पालन करना चाहिए। कोरोना संक्रमित क्षेत्र में न जाएं, किसी भी अनदेखी वस्तु को नहीं छूएं। घर से बाहर तब ही निकलें जब बहुत–ही जरूरी हो। सुबह–सुबह पानी को उबालकर पीएं। मुंह या नाक पर बार–बार हाथ न लगाएं। सेनेटाइजर का नियमित प्रयोग करें। जब भी घर से बाहर निकलें तो मुंह पर मास्क लगाकर ही निकलें। एक दूसरे से 2 गज की दूरी बनाए रखें। कोरोना काल मे मांस, अंडे व अन्य मांसाहारी वस्तुओं का सेवन न करें। बाजार से लाई गई हरी सब्जियों को पानी में उबालकर 2 बार धोएं जिससे कि उनके कीटाणु मर जाएं। हमें सरकार के निर्देशों का पालन करते हुए कोरोना महामारी को हराना है। हमारे देश में कोरोना से बचाव के लिए जनता कर्फ्यू लगाया गया तथा मास्क लगाना अनिवार्य किया गया। मास्क पहनने से कोरोना संक्रमण से बड़ा बचाव हुआ है। हमें चाहिए कि सभी नियमों का पालन करते हुए खुद को सुरक्षित रखें।

कोरोना वैक्सीन :

किन्तु एक अच्छी बात यह है कि मार्केट में कई वैक्सीन आने से आज इसका प्रसार और विस्तार धीरे–धीरे कम हुआ है। हमारे देश में को वैक्सीन, कोविशील्ड आदि कई वैक्सीन प्रचालन में हैं। वैज्ञानिकों के प्रयास के बाद काफी प्रभावशाली वैक्सीन का निर्माण हो पाया है। वैक्सीन से जनता की जान बच रही हैं। देश के लिए एक–एक व्यक्ति की जान महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

कई लोग इस वायरस पर विजय प्राप्त करके अपने घर, अपने परिवारों के पास आए हैं। इसलिए इस वायरस से डरने की जरुरत नहीं बल्कि सावधानी बरतने की जरूरत है। अपना एवं अपने परिवार का ख्याल रखें। सबसे अहम बात यह है कि आप अपने खान–पान पर ध्यान दें तथा अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करें। इस बीमारी से बचाव का यही मात्र उपाय है।

धर्मराज जाट
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

राजभाषा हिन्दी

वैसे तो भारत देश में बहुत सी भाषाएँ बोली जाती हैं परंतु हिन्दी भाषा का अपना एक अलग महत्व हैं जिसके कारण यह लोगों के हृदय में एक महत्वपूर्ण स्थान लिए हुए हैं।

हिन्दी भाषा का विकास अपभ्रंश की शोरसैनी, मागधी और अर्धमागधी रूपों से हुआ हैं। कवियों ने अपनी वाणी को जन–जन तक पहुचाने के लिए हिन्दी का सहारा लिया।

हिन्दी भाषा का इतिहास लगभग एक हज़ार वर्ष पुराना माना गया हैं। भारत की सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत हैं।

हिन्दी इस आर्य भाषा संस्कृत की उतराधिकारिणी मानी जाती हैं।

भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिन्दी हैं और इसे राजभाषा का दर्जा 14 सितंबर, 1949 को सविधान सभा द्वारा दिया गया था। अतः प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता हैं।

राजभाषा हिन्दी के कुछ मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं :–

अन्य भाषाओं के शब्द हिन्दी भाषा में समाहित हैं।
इस भाषा को समझना और सीखना बहुत आसान हैं।
इस भाषा को जैसा लिखा जाता हैं वैसा ही पढ़ा जाता हैं जो की इसकी मुख्य विशेषता हैं।
इस भाषा को संस्कृत भाषा की बेटी कहा जाता हैं।

प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाया जाता हैं। इस अवसर पर सरकारी, अर्धसरकारी तथा निजी संस्थानों में कही हिन्दी सप्ताह तो कही पखवाड़ा मनाया जाता हैं। इसके बावजूद राजभाषा का दर्जा प्राप्त कर हिन्दी भाषा लोगों के बीच कही न कही गायब होती जा रही हैं और अंग्रेजी ने अपना प्रभुत्व जमा लिया हैं। यदि स्थिति इसी प्रकार रही तो वो दिन ज्यादा दूर नहीं जब हिन्दी भाषा राजभाषा से हमारे बीच से ओझल हो जाएगी।

यदि हम सच में चाहते हैं कि हिन्दी भाषा राजभाषा के रूप में बना रहे तो हमें इसके प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देना होगा। सरकारी कामकाज में हिन्दी को प्राथमिकता देनी होगी तभी हिन्दी भाषा को जिंदा रखा जा सकता हैं एवं उसकी प्रमुखता को भी।

भारत में हर कागज पर जब हिन्दी लिखा जाएगा तभी हिन्दी दिवस का पावन लक्ष्य पूरा होगा।

जय हिन्द ..... जय हिन्दी

हिन्दी हैं हम वतन हैं हिन्दुस्ता हमारा

दीपक कुमार ऋषि
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

चंद्रयान 3 : अन्तरिक्ष में भारत की एक असाधारण उपलब्धि

भारत के तीसरे चंद्रमिशन अर्थात चंद्रयान–3 लांच व्हीकल मार्क (स्टड)–3 के रूप में सफलतापूर्वक लांच किया गया हैं जिसमें उपग्रह ने 14 जुलाई को दोपहर 14.35 बजे श्री हरीकोटा के सतीश धवन अन्तरिक्ष केंद्र के दूसरे लांच पैड से उड़ान भरी।

वर्ष 2019 में चंद्रयान–2 मिशन की आंशिक विफलता के बाद पुनः चंद्रमा की सतह पर सॉफ्ट लैंडिंग करने का भारत का यह दूसरा प्रयास हैं।

चंद्रयान – 3 अपने लांच के लगभग एक महीने बाद चंद्र कक्ष में पहुँच गया। इसके लैंडर (विक्रम) और रोवर (प्रज्ञान) में 23 अगस्त को चंद्रमा पर उतरना हैं। नवीनतम मिशन की लैंडिंग साइट लगभग चंद्रयान–2 के समान हैं जो 70 डिग्री अक्षांश पर चंद्रमा के दक्षिण के पास स्थित हैं।

चंद्रयान–3 चंद्रमा के दक्षिण ध्रुव के पास सॉफ्ट लैंडिंग भारत को सोवियत संघ, संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के साथ चंद्रमा पर सफलतापूर्वक अन्तरिक्ष यान उतारने वाला चौथा राष्ट्र बन गया हैं।

चंद्रयान 3

चंद्रयान–3 भारत का तीसरा चन्द्र मिशन हैं और चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग का दूसरा प्रयास हैं। चंद्रयान–2 की आंशिक विफलता के लगभग चार साल बाद चंद्रयान–3 का प्रक्षेपण हुआ हैं।

चंद्रयान–3 में एक प्रणोदन मॉड्यूल, लैंडर और रोवर शामिल हैं एक बार मॉड्यूल चन्द्र कक्षा में प्रवेश करने बाद, यह चंद्रमा की सतह से 60 मील ऊपर एक गोलाकार पथ को नेविगेट करेगा।इसमें पहले कि लैंडर सॉफ्ट टचडाउन के लिए अलग हो जाए। रोवर फिर 14 पृथ्वी दिनों के लिए चन्द्र इलाके का पता लगाएगा तथा वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए अमूल्य आंकड़े भेज रहा है।

रोवर खतरे का पता लगाने और बचाव प्रणालियों से लैंस हैं जो चंद्रमा कि एक सुरक्षित टैवर्सल (*Traversal*) सुनिश्चित करता हैं इसके अतिरिक्त लैंडर सुनिश्चित करने के लिए खतरे का पता लगाने और बचाव कैमरों जैसी उन्नत विशेषताएँ शामिल हैं। ये उन्नयन भारत के पिछले चन्द्र मिशन चंद्रयान–2 से सीखे गए सबक के आधार पर विकसित किए गए हैं।

लैंडर में चंद्रमा का सरफेस थर्मोफिजिकल एक्सेपरिमेंट हैं, जो चंद्रमा की तापीय चालकता और तापमान पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करेगा। चंद्रमा भूकंपीय गतिविधि के लिए उपकरण (*ILSA*) का उद्देश्य चंद्रमा के भूकंप का पता लगाना हैं, जो चन्द्र भूविज्ञान की हमारी समझ को और बढ़ाएगा। लैंगमुईर प्रोब (*Langmuir probe*) चंद्रमा के पर्यावरण में प्लाज्मा के घनत्व और भिन्नता का अनुमान लगाएगा, जबकि नासा से लेजर रेट्रोरिफ्लेक्टर ऐरे (*Laser Retroreflector Array*) लेजर तकनीक का उपयोग करके सटीक दूरी के मापन को सक्षम करेगा।

भारत के चंद्रमा मिशन का विकास

भारत के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 15 अगस्त, 2003 को अपने स्वतन्त्रता दिवस के भाषण में चंद्रयान –1 परियोजना की घोषणा की थी। यह मिशन भारत के लिए एक बहुत ही बड़ा प्रोत्साहन था।

चंद्रयान–1 चंद्रयान कार्यक्रम के तहत पहला भारतीय चन्द्र प्रोब था। इसे अक्तूबर, 2008 में भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन (*ISRO*) द्वारा लांच किया गया था और अगस्त 2009 तक संचालित किया गया था। मिशन में एक चन्द्र ओर्बिटर औयर एक इम्पैक्टर शामिल थे। भारत ने 22 अक्तूबर, 2008 को आंध्रप्रदेश के श्री हरीकोटा में सतीश धवन अन्तरिक्ष यान लांच किया था। यह मिशन भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए एक बड़ा बढ़ावा था, क्योंकि भारत ने चंद्रमा का पता लगाने के लिए स्वदेशी तकनीक पर शोध और विकास किया था। चंद्रयान–1 को 8 नवंबर 2008 को चंद्रमा के

कक्षा में उतारा गया था।

चंद्रयान – 2 भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन द्वारा विकसित दूसरा चन्द्र अन्वे ाण मिशन था। इस अन्तरिक्ष यान को 22 जुलाई 2019 को सतीश धवन अन्तरिक्ष केंद्र के लांच पैड से एलवीएम 3 एम–1 रॉकेट के जरिए लांच किया गया। इस चंद्रयान मिशन मे लैंडर (विक्रम) और रोवर (प्रज्ञान) शामिल था। मुख्य वैज्ञानिक उद्देश्य चन्द्र सतह को संरचना में भिन्नताओं के साथ–साथ चंद्रमा की सतह पर जल के स्थान का नक्शा और उसका अध्ययन करना था।

व्हीकल 20 संगठन 2019 को चंद्रमा की कक्षा में पहुंचा जिसने विक्रम लैंडर की लैंडिंग के लिए कक्षीय स्थिति प्राप्त करने से प्रक्रिया प्रारम्भ की लैंडर और रोवर को चंद्रमा के पास दक्षिण ध्रुवीय क्षेत्र में उतरने के लिए निर्धारित किया गया था। हालांकि लैंडर 6 सितंबर, 2019 को उतरने का प्रयास करते समय अपने इच्छित प्रक्षेपवक्र से भटक जाने से दुर्घटनाग्रस्त हो गया।

उपलब्धियां

14 नवंबर, 2008 को चंद्रयान–1 अन्तरिक्ष यान द्वारा ले जाया गया मून इम्पैक्ट प्रोब (*MIP*) नामक एक पैलोड अलग हो गया जो नियंत्रित तरीके से चंद्रमा के दक्षिण ध्रुव से टकरा गया। भारत तब चंद्रमा की सतह पर पानी (*H2O*) और हाइड्रोकिस्ल (*OH*) का पता लगाने में सबंधित खोज करने में सक्षम था।

चंद्रमा मिशन का महत्व

मिशन का प्राथमिक उद्देश्य चंद्रमा के निकट और दूर दोनों पक्षों का त्रि–आयामी एटलस तैयार करना, उच्च स्थानिक सकल्प के साथ पूरी चन्द्र सतह का रासायनिक और खनिज मानचित्रण तैयार करना। चंद्रयान–3 मिशन का मुख्य उद्देश्य क्षेत्र में भारत की बढ़ती तकनीकी क्षमताओं का प्रदर्शन करना और चंद्रमा पर एक सफल सॉफ्ट लैंडिंग कराना हैं।

इसरो द्वारा चंद्रमा पर मिशन भेजने का कारण

चंद्रमा पृथ्वी के सबसे निकटतम ब्रह्मडीय पिंड हैं जहां अन्तरिक्ष की खोज का प्रयास किया जाएगा। इसे इसे भविष्य के गहरे अन्तरिक्ष मिशनों के लिए तथा आवश्यक प्रोद्योगिकियों को प्रदर्शित करने के लिए एक आशाजनक परीक्षण बेड के रूप में भी वर्णित किया गया हैं।

निष्कर्ष : चंद्रयान–3 की सफलता का असर न केवल भारत के विज्ञान पर पड़ेगा, बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था और छवि पर भी पड़ेगा।

तेजराज सिंह
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

संवेदना

आनंद का दिल ज़ोरों से धडक रहा था। वो ऑपरेशन थिएटर के बाहर चहलकदमी करते हुए अपने नाखून चबा रहा था, उसकी नजर बार–बार ऑपरेशन थिएटर की ओर जा रही थी।

जब भी नर्स बाहर निकलती, वो उनकी तरफ आशा और चिंता भरी मिश्रित नजरों से देखता कि कब उसे खुशखबरी मिलेगी। इतनी बैचेनी तो उसे अपने नौकरी के साक्षात्कार के परिणाम को जानने की भी नही हुई थी। आखिरकार वो पल आ ही गया, नर्स ने उसे खुशखबरी दी–'मुबारक हो सर! आपको लड़का हुआ हैं।"

आनंद को लग रहा था कि मानो वो सातवें आसमान पर पहुँच गया है। कुछ समय बाद नर्स ने आनंद को उसकी धर्मपत्नी संजना से मिलने कि अनुमति दे दी। संजना और आनंद एक दूसरे को देखकर मुस्कुराए। संजना को एहसास हुआ कि मानो आज आनंद का मुख उसके नाम को चरितार्थ कर रहा हो। संजना की खुशी उसकी आँखों से निकलकर कब उसके गालों को चूमकर निकल गयी उसे पता भी ना चला। आनंद की माँ अपने पोते को गोदी मे लेकर दुलार कर रही थी। आखिर उनके द्वारा संजना को दिया गया 'पुत्रवती भवः' का आशीर्वाद सफल जो हो गया था। संजना को आखिर उन तानों से मुक्ति मिली जो उसकी माँ को पुत्र संतान प्राप्त न होने पर मिले थे।

समय का चक्र चलता रहा और पंद्रह साल बीत गये। इन पंद्रह सालों में ज़िंदगी में काफी उतार चढ़ाव आए जैसे आनंद की माँ का स्वर्गवास, आनंद को नौकरी में पदोन्नति मिलना। संजना और आनंद की आँख का तारा हर्ष भी अब किशोरावस्था में प्रवेश कर चुका था। एक दिन शाम को फूटबाल खेलकर लौटते समय हर्ष अपने साथ एक कुत्ते का बच्चा ले आया जिसके पैर में चोट लगी हुई थी। कुत्ते का बच्चा देखकर संजना थोड़ा परेशान हो गयी क्योंकि आनंद को तो कुत्तों से सख्त नफरत थी। लेकिन हर्ष की खुशी कि खातिर उसने आनंद को मनाने का जिम्मा उठाया, आखिर संजना अपने प्रयास में सफल हुई। हर्ष ने उस कुत्ते के बच्चे का नाम लकी रखा। स्कूल से आने के बाद हर्ष लकी की सेवा में लग जाता। हर्ष की सेवा का ही कमाल था कि लकी के पैर के घाव जल्द ही भर गए। लकी के ठीक होते ही संजना और आनंद ने हर्ष से लकी को वापस छोड़ आने को कहा, पर हर्ष ने ये बात सुते ही रोना शुरू कर दिया कि "मैं लकी को ऐसे कैसे बाहर छोड़ दूँ? वो बाहर कैसे रहेगा जहाँ किसी को भी नहीं जानता और लकी को मेरी आदत हो गयी हैं, वो मेरे बिना खुश नहीं रहेगा।" आखिर संजना और आनंद को बालहठ के सामने नतमस्तक होना ही पड़ा। हर्ष जहाँ जाता लकी को अपने साथ ले जाता, मानो कि वो इस छोटे से परिवार का एक सदस्य बन गया हो।

ऐसे ही समय बीतता गया हर्ष का कालेज खत्म हो गया था और ईश्वर कि कृपा से उसे एक मल्टीनैशनल कंपनी में नौकरी मिल गयी थी परंतु दुर्भाग्य इस बात का था कि इन खुशियों को साझा करने के लिए आनंद संजना के साथ ना था। आनंद के जाने के बाद संजना मानो टूट सी गयी, पर हर्ष की मुस्कुराहट के सहारे उसने अपने आगे का जीवन व्यतीत करने का निर्णय कर लिया। हर्ष अब 25 साल का हो चला था, इसके साथ ही हर्ष की शादी के लिए रिश्तों कि होड़ लग गयी। आखिर ऐसा हो भी क्यों न, रंग रूप में हर्ष सुंदर तो था ही साथ ही 50,000 रुपए तनख्वाह उसके व्यक्तिगत में चार चाँद लगा रही थीं। कई रिश्ते के बाद एक लड़की मानसी सबको पसंद आ ही गयी। सर्वसम्मति से अगले माह कि पाँचवी तारीख को विवाह का शुभ मुहूर्त निकला। विवाह के दिन संजना! तू तो बहुत किस्मत वाली हैं, एकदम चाँद का टुकड़ा लायी हैं तू अपने बेटे के लिए! "ये सब सुनकर संजना की आंखे मोतियों सी चमक उठती थी।

शादी के बाद शुरुआती दिन तो अच्छे से व्यतीत हुए परंतु दिन बीतने के साथ ही रिश्तों में बढ़ती हुई कड़वाहट संजना को महसूस हुई। हर्ष को तो जैसे अब अपनी माँ के लिए समय निकालना ही मुश्किल हो गया था। इस सब के पीछे का कारण जैसे संजना के लिए रहस्य हो गया था। आखिर एक दिन इस रहस्य से पर्दा उठ ही गया। हर्ष ने साफ सीधे शब्दों में कह ही दिया "माँ! आपके साथ रहने से मुझे और मानसी को प्राइवेट स्पेस नहीं मिल पर रहा हैं। इसलिए आप कुछ दिने के लिए वृद्धाश्रम में रह लो। सब ठीक होते ही हम आपको लेने आ जाएंगे। संजना के पैरो तले से जमीन खिसक गयी। अचानक ही उसकी आँखों के सामने उन बुजुर्ग औरतों के चेहरे आ गए जो आज भी इस आस में जी रही है कि एक दिन उनके बच्चे उन्हें आकर वापस ले जाएंगे। परंतु संजना ने ऐसी कोई आस लगानी उचित न समझी क्योंकि उसे इस बात का बखूबी इल्म था कि जिसे वापस आना होता है वो यूं छोड़कर नहीं जाते। हर्ष सपरिवार संजना को

वृद्धाश्रम छोड़ने कार से आया था—हर्ष, उसकी पत्नी मानसी और लकी (आखिर लकी भी तो उसके परिवार का सदस्य था)। हर्ष और मानसी संजना को वृद्धाश्रम के मुख्य दरवाजे तक छोड़ने आए, लकी कार कि पिछली सीट पर बैठा था। हर्ष ने जैसे ही वापस जाने के लिए कार स्टार्ट की, संजना की नजर कार कि पिछली सीट पर बैठे लकी पर गयी। संजना को लगा जैसे लकी उसका उपहास उढ़ाता हुआ मुस्कुरा रहा हो। संजना एकटक बस उसे निहारती रहीं जब तक संजना की आंखे धुंधला ना गयी। पता नहीं ये कार से उड़ती हुई धूम थी या उसकी आँखों से बहता पानी जो उसे कुछ भी साफ न देखने पर मजबूर कर रहा था। संजना की आँखों के सामने बस वो हर्ष आ गया जो सड़क से उठाकर लाए कुत्ते के बच्चे को वापस छोडने को राजी न था क्योंकि उस बालमन को इस बात का दुःख था कि कुत्ते का बच्चा उसके बिना कैसे रहेगा.......

धीरेंद्र तिवारी
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

दुआ

नित्या स्कूल से घर आई तो दादी ने तीखी आवाज में कहा, "खाना रखा हैं मेज पर, हाथ–मुंह धोकर खा लेना, और मैं सोने जा रही हूँ शोर मचा कर मुझे तंग न करना", इतना कहकर दादी अपने कमरे में चली गयी। नित्या और दादी की बस इतनी ही बात होती थी। माँ–पापा के कार दुर्घटना में चले जाने से नित्या के लिए उनकी कड़वाहट और बढ़ गयी थी। क्योंकि कही न कही वो इन सब का जिम्मेदार नित्या को ही ठहराती थी। उनका कहना था की नित्या के कदम उनके घर के लिए शुभ नहीं हो रहा हैं। और माँ–पापा के बाद से वो नित्या को और भी नापसंद करने लगी थी।

बीतता हुआ समय भी नित्या और दादी के बीच के इस फासले को कम न कर पाया। दादी ने अपने बेटे और बहू की इच्छानुसार नित्या की शादी एक अच्छे घर में करके अपनी ज़िम्मेदारी से मुक्ति पा ली। नित्या की शादी के बाद दादी, चाचा–चाची के पास चली गयी। जाते–जाते वो ये साफ कर गयी थी कि अब उनकी ज़िम्मेदारी पूरी हुई, अब नित्या का उनसे कोई वास्ता नहीं। इतना अकेलापन तो उसे अनाथालय में भी नहीं लगता था जितना उसे माँ–पापा के जाने के बाद लगा और धीरे–धीरे ये अकेलापन बढ़ता ही जा रहा था। उसे हमेशा से लगता था कि भगवान कभी भी उसकी नहीं सुनते वरना नित्या आज इस हालत में ना होती।

शादी के बाद भी उसके जीवन में कुछ खास बदलाव नहीं आया। बल्कि उसके पति की शराब की लत ने उसकी ज़िंदगी नरक बना रखी थी। जाती भी तो कहा जाती वो, उसके लिए तो जैसे भगवान ने सारे दरवाजे बंद कर दिये थे। किससे कहती अपना दुख, किसे दिखाती वो अपना जख्म जो उसके पति ने दिये थे। इस तपन भरी ज़िदगी में तभी एक ठंडी हवा का झोंका आया – उसकी बेटी कुहु। उसकी चहचहाहट और शैतानियों के बीच वो कही खो सी जाती। कुहु अपने पापा से बहुत डरती थी, शराब पीकर जब वो घर आकर नित्या को पीटते थे तब वो सहमकर कमरे में छिप जाती। ये सिलसिला कई सालों तक चलता रहा। अब कुहु पाँच साल की हो गयी थी।

कुहु की मुस्कुराहट नित्या के लिए मलहम का काम करती थी। नित्या और कुहु बस ये दोनों ही एक–दूसरे की दुनिया थे एक दिन शाम को नित्या और कुहु खेल रहे थे। खेलते–खेलते समय का अंदाजा नहीं रहा। कुहु आँखों में पट्टी बांधकर नित्या को ढूंढ रही थी। तभी नित्या के पति आ गए, वही अपनी चिरपरिचित अवस्था में–लड़खड़ाते हुए, शराब के नशे में धुत्त। कुहु जिसकी आँखों में अभी भी पट्टी बंधी हुई थी, अपने पापा को नित्या समझकर लिपट कर बोली, "मैं जीत गई, मैंने पकड़ लिया आपको"। शराब के नशे में धुत्त नित्या के पति को कुहु कि चहचहाहट भी कर्कश ध्वनि लग रही थी। वो चिल्लाये " जब देखो तब शोर–शराबा मचाती रहती हैं ये लड़की"। इतना कहकर उंसने कुहु को एक जोरदार थप्पड़ दिया। कुहु का सिर दीवार पर जाकर लगा और उसके सिर से खून बहने लगा। नित्या आवाज सुनकर दौड़कर आई, और बेहोश कुहु को अपनी गोदी में उठा लिया। कुहु को पूरे दो घंटे बाद होश आया। उस पूरी रात नित्या सो नहीं पायी। कुहु की चिंता में उसकी आंखे रो–रो कर सूज चुकी थी।

इस बात को एक हफ्ता बीत चुका था। नित्या पूरी कोशिश करती थी कि कुहु का उसके पापा से आमना–सामना ना हो ताकि फिर से ऐसी कोई घटना ना घटे।

दोपहर के तीन बजे थे। तभी फोन की घंटी बाजी। नित्या के पति के दफ्तर से फोन था, नित्या को फ़ौरन अस्पताल आने को कहा। नित्या अस्पताल गयी तो उसे पता चला कि उसके पति कि हालत बहुत गंभीर हैं। फैक्ट्री में दौरे पर गए उसके पति एक हादसे का शिकार हो गए। इस हादसे में दो और लोग जख्मी हुए थे परंतु उन्हे बस मामूली चोट आयी थी। थोड़ी देर बाद डॉक्टर ने उसके पति के इस दुनिया से चले जाने की खबर दी। नित्या बिलकुल स्तब्ध खड़ी थी। पत्थर हो गयी उसकी आंखो से आँसू निकल पड़े। नित्या की नजर पास लगी भगवान की फोटो पर गयी, नित्या को लगा जैसे वो तस्वीर उससे कह रही हो, "सुन ली आज मैंने तेरी, कर दिए दूर सारे दुख तेरे"।

नित्या के पति को गुजरे अब एक साल हो गया था। नित्या को उसके पति कि जगह पर मृतक आश्रित के आधार पर नौकरी मिल गयी थी। आज नित्या के पति की बरसी हैं। नित्या ने आज दफ्तर से छुट्टी ले रखी थी। नित्या ने सुबह ही ब्राह्मण भोज करा दिया था। तभी फोन की घंटी बजी। फोन नित्या के दफ्तर से था, किसी आवश्यक कार्य से उसे तुरंत

ही दफ्तर बुलाया गया था। नित्या तैयार होकर अपना पर्स उठाने लगी तो दो नन्ही बाहों ने उसे जकड़ लिया। और कहा, " जल्दी आना माँ! आज फिर हम दोनों शाम को छुपन–छुपाई खेलेंगे"। नित्या ने हाँ में सिर हिला दिया और मुस्कुराते हुए दफ्तर के लिए चल दी।

जितेंद्र डडवाल
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

प्रेरक प्रसंग

रामकृष्ण का विवेकानंद जी से बहुत अलग तरह का लगाव था क्योंकि वे विवेकानंद को अपना संदेश दुनिया तक पहुंचाने का एक जरिया मानते थे। यह काम रामकृष्ण खुद नहीं कर सकते थे। इसलिए वे विवेकानंद को अपने संदेशवाहक के रूप में देखते थे। रामकृष्ण के आसपास के लोग यह समझ नहीं पाते थे कि वे विवेकानंद को लेकर इतना पागल क्यों थे। अगर विवेकानंद एक भी दिन उनसे मिलने नहीं आते, तो रामकृष्ण उनकी खोज में निकल पड़ते क्योंकि वे जानते थे कि इस युवा के पास संप्रेषण की जरूरी समझ है। विवेकानंद भी रामकृष्ण परमहंस के लिए उतने ही पागल थे। उन्होंने कोई नौकरी नहीं ढूंढी, उन्होंने कोई ऐसा काम नहीं किया, जो उनकी उम्र के लोग आमतौर पर करते हैं। वह बस हर समय रामकृष्ण का अनुसरण करते थे। विवेकानंद के जीवन में एक बहुत अद्भुत घटना घटी।

एक दिन उनकी मां बहुत बीमार थी तथा मृत्युशैय्या पर थी। अचानक विवेकानंद के दिमाग में आया कि उनके पास बिल्कुल भी पैसा नहीं है और वह अपनी मां के लिए दवा या खाना नहीं ला सकते। यह सोचकर उन्हें बहुत गुस्सा आया कि वह अपनी बीमार मां का ध्यान भी नहीं रख सकते। जब विवेकानंद जैसे इंसान को गुस्सा आता है, तो वह गुस्सा वाकई भयानक होता है। वह रामकृष्ण के पास गए। वह कहीं और नहीं जा सकते थे, गुस्से में भी वह यहीं जाते थे। उन्होंने रामकृष्ण से कहा, 'इन सारी फालतू चीजों, इस आध्यात्मिकता से मुझे क्या लाभ है। अगर मेरे पास कोई नौकरी होती और मैं अपनी उम्र के लोगों वाले काम करता तो आज मैं अपनी मां का पूरा ख्याल रख सकता था। मैं उसे भोजन दे सकता था, उसके लिए दवा ला सकता था, उसे आराम पहुंचा सकता था। इस आध्यात्मिकता से मुझे क्या फायदा हुआ?'

रामकृष्ण काली के उपासक थे। उनके घर में काली का मंदिर था। वह बोले, 'क्या तुम्हारी मां को दवा और भोजन की जरूरत है? जो भी तुम्हें चाहिए, वह तुम मां से क्यों नहीं मांगते?' विवेकानंद को यह सुझाव पसंद आया और वह मंदिर में गए। एक घंटे बाद जब वह बाहर आए तो रामकृष्ण ने पूछा, 'क्या तुमने मां से अपनी मां के लिए भोजन, पैसा और बाकी चीजें मांगीं? ' विवेकानंद ने जवाब दिया, 'नहीं, मैं भूल गया।' रामकृष्ण बोले, 'फिर से अंदर जाओ और मांगो।' विवेकानंद फिर से मंदिर में गए और और चार घंटे बाद वापस लौटे। रामकृष्ण ने उनसे पूछा, 'क्या तुमने मां से मांगा?' विवेकानंद बोले, 'नहीं, मैं भूल गया।' रामकृष्ण फिर से बोले, 'फिर अंदर जाओ और इस बार मांगना मत भूलना।' विवेकानंद अंदर गए और लगभग आठ घंटे बाद बाहर आए। रामकृष्ण ने फिर से उनसे पूछा, 'क्या तुमने मां से वे चीजें मांगीं?' विवेकानंद बोले, 'नहीं, अब मैं नहीं मांगूंगा। मुझे मांगने की जरूरत नहीं है।'

रामकृष्ण ने जवाब दिया, 'यह अच्छी बात है। अगर आज तुमने मंदिर में कुछ मांग लिया होता, तो यह तुम्हारे और मेरे रिश्ते का आखिरी दिन होता। मैं तुम्हारा चेहरा फिर कभी नहीं देखता क्योंकि कुछ मांगने वाला मूर्ख यह नहीं जानता कि जीवन क्या है। मांगने वाला मूर्ख जीवन के मूल सिद्धांतों को नहीं समझता।' प्रार्थना एक प्रकार का गुण है। अगर आप प्रार्थनापूर्ण बन जाते हैं, अगर आप आराधनामय हो जाते हैं, तो यह होने का एक शानदार तरीका है। लेकिन यदि आप इस उम्मीद से प्रार्थना कर रहे हैं कि इसके बदले आपको कुछ मिलेगा, तो यह आपके लिए कारगर नहीं होगा।

तेजिंदर दत्त फुलारा
रक्षा सम्पदा कार्यालय, देहरादून

नव अंकुर

एक नव अंकुर जब उगता है,
सबसे पहले वो गलता है,
गलता है देखो सड़ता है,
फिर धीरे धीरे बढता है,
एक नव अंकुर जब उगता है,

आंधी सहता तुफान सहता,
गर्मी में भी वो है तपता,
कभी लडता, मरता, गिरता है,
कभी झुकता और संभलता है,
एक नव अंकुर जब उगता है,

बढता है बढता जाता है,
अपने यौवन को पाता है,
खुद को फूलों से महका कर,
फिर से अंकुर हो जाता है,
एक नव अंकुर जब उगता है

तेजिंदर दत्त फुलारा
रक्षा सम्पदा कार्यालय, देहरादून

आदित्य एल-1

आदित्य एल–1 भारत का कोरोनोग्राफी अन्तरिक्ष यान है। सूर्य का अध्ययन करने वाला भारत का यह पहला सूर्य मिशन है। साथ ही यह एल–1(लैग्रेज़) बिन्दु पर स्थापित होने वाला पहला भी भारतीय मिशन है। इसरो ने आदित्य एल–1 को पीएसएलवी–सी57 से दिनांक 02 सितंबर, 2023 को प्रातः 11:50 बजे आंध्र प्रदेश के ऐतिहासिक लॉन्चिंग स्टेशन श्री हरिकोटा स्पेस सेंटर से लांच किया। इसे पृथ्वी से करीब 15 लाख किलोमीटर की दूरी पर लैग्रेज़–1 प्वाइंट पर स्थापित किया जाएगा। आदित्य एल–1 को उस बिन्दु तक पहुँचने में लगभग 4 महीने का समय लगेगा। यह 16 दिनों तक पृथ्वी के सौरमंडल में चक्कर लगाएगा तथा आगे एल–1 बिन्दु पर पहुँचने के सफर में 109 दिन लेगा। यह सूर्य तक न जाकर एल–1 बिन्दु पर पहुँचेगा और होलो ओरबिट में घूमते हुए पाँच वर्ष तक सूर्य का अध्ययन करेगा। एल–1 बिन्दु पर गुरुत्वाक र्ण बल कार्य नहीं करता, इसीलिए सूर्य का अध्ययन करने के लिए एल–1 बिन्दु का चयन किया गया है।

सूर्यः सूर्य का व्यास पृथ्वी से लगभग 109 गुना ज्यादा है और वजन में यह 3,33,000 गुना भारी है। सूर्य के अंदर 1.3 मिलियन पृथ्वी समा सकती हैं। सूर्य के भीतर अलग–अलग परतें हैं। सबसे भीतर कोर परत (*Core layer*) होती हैं। इस परत के भीतर न्यूक्लियर फ्यूजन (छनबसमंत थ्नेपवद) के रिएक्शन होते हैं, जहां हाइड्रोजन एवं हीलियम गैस ऊर्जा में परिवर्तित होती हैं। यही ऊर्जा सूर्य की रोशनी की स्रोत होती है तथा इससे निकलने वाली ऊ मा धरती पर महसूस की जाती है। कोर परत का तापमान लगभग 15,000,000 डिग्री सेल्सियस तक जा सकता हैं।

अगली परत रेडियटिव जोन (*Radiative Zone*) है। सूर्य का 70ः व्यास (*Radius*) रेडियटिव जोन द्वारा बनाया जाता है। इसके बाद कन्वेक्टिव जोन (*Convective Zone*) होता है जिससे सूर्य का 30% व्यास बनता है। यहाँ कनवेक्शन (*Convection*) प्रक्रिया द्वारा ऊष्मा का अंतरण (*transfer*) होता है।

इस जोन के बाद फोटोस्फेयर (*Photosphere*) है जहाँ गर्म गैसें (*hot gases*) एवं प्लाज्मा (*Plasma*) मौजूद हैं। इसे सूर्य वातावरण की न्यूनतम परत (*lowest layer of atmosphere*) भी कहा जाता है। यहाँ तापमान समान्यतया 5,500 डिग्री सेल्सियस तक रहता है।

इसके बाद क्रोमोस्फ़ेयर परत (*Chromosphere* लेयर) होती है। यहाँ से तापमान में वृद्धि होने लगती है और यह 6,000 से 20,000 डिग्री सेल्सियस तक बना रहता है।

इसके ऊपर ट्रांजिशन क्षेत्र (*Transition Region*) नामक पतली परत मौजूद है। इस परत के बाद कोरोना परत (*Corona layer*) होती है जो सूर्य की सबसे बाहरी परत है। कोरोना परत में सबसे अधिक प्लाज्मा मौजूद है। यहाँ 1 से 3 मिलियन डिग्री सेल्सियस तक तापमान होता है।

आदित्य एल–1 सूर्य की तीनों परतों के बारे में अध्ययन करेगा। फोटोस्फेयर, क्रोमोस्फेयर और कोरोना परतों का अध्ययन सूर्य से लाखों किलोमीटर दूर रहकर किया जाएगा।

आदित्य एल–1 सूर्ययान में 7 उपकरण लगे हुए हैं जिन्हें सात पैलोड्स (7 *Payloads*) भी कहा जा सकता है। इन का विवरण इस प्रकार है :–

1. वीईएलसी (*Visible Emission Line Coronagraph*) :– यह कोरोना परत के बारे में अध्ययन करेगा और *Coronal mass ejection obserb* करेगा।

2. एसयूआईटी (*Solar Ultraviolet Imaging Telescope*): यह सूर्य के *Photosphere* और *Chromosphere* की *imaging* करेगा।

3. एसओएलईआरएस (*Solar Law Energy X-ray Spectometer*): ।

4. एचईएलआईओएस (*High Energy L1 Orbiting X-ray Spectometrs*) पैलोड्स 3 एवं 4 सूर्य से निकलने वाली एक्स–किरणों (*X-Ray*) का अध्ययन करेंगे।

5. एएसपीईएक्स (*Aditya Solar Wind Particle Experiment*)।

6. पीएपीए (*Plasma Analyser Package for Aditya*)।

पैलोड्स 5 एवं 6 सूर्य की हवाओं (*Solar winds*) का अध्ययन करेंगे।

7. एमएजी (*Magnetometer*): यह मैग्नेटिक क्षेत्रों (*Magnetic fields*) का अध्ययन करेगा।

उपरोक्त 7 में से 4 पैलोड्स सीधा सूर्य का अध्ययन करेंगे तथा शेष 3 आदित्य एल–1 के आसपास की वातावरण का अध्ययन करेंगे।

आदित्य एल–1 मिशन की कार्यक्षमता से विश्व के खगोल विज्ञान में क्रांति लाने और इसके दूरगामी परिणामों से इस क्षेत्र में कई जटिल समस्याओं का जवाब मिलने की उम्मीद है। आशा करते हैं कि चंद्रयान 3 के सफल कदमों पर चलते हुए आदित्य एल–1 न केवल इसरो (भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन) बल्कि विश्व के कई अन्य अन्तरिक्ष अनुसंधान केन्द्रों के लिए स्पेस क्षेत्र में भी आगे की राह प्रशस्त करेगा।

प्रतिभा पारूल
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

मित्रता

रामायण की चौपाई के माध्यम से समझते है मित्रता का अर्थ–

देत लेत मन संक न धरई। बल अनुमान सदा हित करई।
बिपति काल कर सतगुन नेहा। श्रुति कह संत मित्र गुण एहा।।

अर्थात देने–लेने में मन में शंका न रखेँ। अपने बल के अनुसार सदा हित करते रहें। विपत्ति के समय तो सदा सौगुना स्नेह करें। वेद कहते हैं कि ये संत (श्रेष्ठ) मित्र (लक्षण) होते हैं।

श्री रामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी, मित्रता को परिभाषित करते हुए कहते है कि सच्चा मित्र वह है जो अपने दुःख को कम और अपने मित्र के दुःख को भारी समझ कर उसके दुःख में साथ देता है। जो मित्र अपने मित्र के दुःख से दुःखी नहीं होते, उनका मुँह भी नहीं देखना चाहिए।

इसके आगे सुग्रीव को आश्वासन देते हुए भगवान श्री राम संत और मित्र के गुणों को एक करके यह बताना चाह रहे हैं कि वस्तुतः मित्रता का निर्वहन तो संत ही करता है, या फिर जो ऐसा करे, वह संत है। संत किसी वेश का नाम न कभी था, न ही है। वह तो चरित्र का नाम है। जो अपने मित्र के दोष को छुपाए और गुणों को सार्वजनिक करे, उसे कुपंथ से निकालकर श्रेष्ठ मार्ग पर लाने में पूरा सहयोग दे, ताकि मित्र का चरित्र सार्वजनिक करने में संकोच न हो।

उन्होने एक और बहुत महत्वपूर्ण बात भी कही कि मित्र को मित्र से कुछ लेने और देने में संकोच नहीं करना चाहिए। यदि एक मित्र हमेशा देता रहे और दूसरा लेता रहे, तो लेने वाले मित्र में हीनता का भाव आए बगैर नहीं रहेगा। इसलिए भगवान ने सुग्रीव को दिया भी और वे यदि सीता जी की खोज में कुछ योगदान दे सकते है और यदि उससे उनका स्वाभिमान बना रहता है, तो उनकी सेवा लेना राम और रामराज्य की विचारधारा के अंतर्गत है।

जितेंद्र डडवाल
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

ऋणानुबंध

मालवा के एक छोटे से गाँव का किसान प्रहलाद इस बार कुछ ज्यादा ही उत्साहित, पिछले वर्ष ठीक बुआई के समय एक बैल मर जाने से उसका सारा साल खराब हो गया था। इस बार वह साहूकार से ब्याज पर पैसे लेकर एक बड़ा सुंदर, पुष्ट और नौजवान बैल लेकर आया था, पर प्रहलाद का यह शायद दुर्भाग्य ही था कि सुंदर और पुष्ट बैल थोड़ी दूर चलकर फिर बैठ जाता, उठाए न उठता। सीधा–साधा प्रहलाद न चाहकर भी उसे पीटता था। आखिर बुआई करना उसके और उसके परिवार के लिए जीवन मरण का प्रश्न था।

एक दिन जब कठिन दोपहर में जब जेठ तप रहा था, प्रहलाद खेत में हल चलाता था। आदत से मजबूर बैल बैठ गया। खीज के मारे प्रहलाद उसे बुरी तरह पीटने लगा, संयोग वश उसी समय पास की सड़क से शहर के एक विख्यात मठ के महंत हाथी पर बैठे गुजर रहे थे। उनकी दृष्टि प्रहलाद और बैल पर पड़ी तो वे ज़ोर से चिल्लाकर बोले – भैया, उस बैल को मत मारो, रुको में आता हूँ।

कुछ भयभीत, कुछ आश्चर्य में प्रहलाद ने हल खोल दिया। मंहत जी हाथी से उतर कर आए। आश्चर्यचकित रह गया प्रहलाद। मंहत जी ने बैल को सादर प्रणाम किया, फिर उसके कान में कुछ कहा। बस, फिर क्या था, बैल तो बिजली की गति से उठ गया और चलने को भी तत्पर। सीधे सादे प्रहलाद ने मंहत जी को प्रणाम किया और कहा – बाबा, यह मंत्र मुझे भी बता दो। गाँव में कई। निठल्ले बैल है। पर प्रहलाद ने देखा मंहत जी की आंखो में आँसू है और वे बड़े दुखी भी लग रहे थे, बोले– बेटा, यह कोई मंत्र नही है, यह तो ऋणानुबंध है। कुछ न समझा प्रहलाद, बोला – यह क्या होता है बाबा? बेटा, यह बड़ा कठिन है, जिसका लिया है, उसका किसी भी रूप में चुकाना ही पड़ता है। पूर्व जन्म की बात है, तुम ऐसे ही किसान थे और यह बैल तुम्हारे गाँव के मठ के मंहत जी। बड़ा आदर था इनका। पूरा गाँव पूजता था। तुम्हारी एक बेटी थी और थोड़ी खेती, जब कभी भी तुम्हारे पास कुछ बचता – दो – चार– दस रुपए, तुम मंहत जी के पास रख देते, जब बेटी की शादी होगी, काम आएंगे।

धीरे–धीरे करके लड़की भी सयानी हो गई और रकम भी ज्यादा।

बिटिया का रिश्ता कर तुम निश्चिंत होकर मंहत जी के पास पहुंचे और बोले, बाबा, मेरा पैसा लौटा दो, मैंने बड़े अच्छे घर और वर से बेटी का रिश्ता तय कर दिया है।

हाय! कुछ काल – कुछ दैव, रकम ने मंहत जी की नीयत खराब कर दी। वे तैश में आकर बोले – कौनसे पैसे, काहे के पैसे?

प्रतिष्ठित मंहत जी की बात से सारा गाँव सहमत था – इतने पैसे गरीब किसान के पास आए कहा से? फिर मंहत जी और बेईमानी। ना–ना। समय कब रुकता है। तुम फिर किसान हो, बेईमानी ने मंहत जी को बैल बना दिया है। गद्दी पर बैठकर माल छानने का संस्कार उन्हे मेहनत करने नहीं देता– बार– बार बैठ जाते है, गालिया और मार खाते है। जिसका लिया है, उसका देना तो है ही, यह प्रकृति का कभी न बदले वाला नियम है, चाहे राजी – खुशी दो, चाहे मार खाकर– यही ऋणानुबंध है। यही कर्म सिद्धांत है, मैंने वही उनके कान में कहा की मंहत जी, चुकाना तो है ही, फिर अपमान और मार सह कर क्यों? राजी – खुशी चुका दो और ऋण मुक्त होकर फिर भगवान का भजन करो। उन्हे स्मरण भी हो आया है और समझ भी आ गई। अब शायद कभी न बैठे, जब तक चुकता न चूक जाए।

दीपक कुमार ऋषि
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

कर्मफल

एक समय नारद जी विष्णु लोक की यात्रा पर जा रहे थे, मार्ग में उनको दो सरोवर मिले, जिनका जल अत्यंत स्वच्छ, शीतल और मीठा था, परंतु वे दुखी थे; क्योंकि कोई भी उनका जल नहीं पीता था। आगे चलने पर उनको दो विशाल आम के वृक्ष मिले, जो मधुर फलों से लदे हुए थे, परंतु दोनों वृक्ष भी दुखी थे; क्योंकि उनके फल कोई नहीं खाता था। आगे चलने पर उनको दो दुधारू गायें भी मिली, जिनका दूध उनके बछड़े भी नहीं पीते थे, इसलिए वे भी दुखी थी।

नारद जी ने भगवान विष्णु के पास पहुँच कर मार्ग में मिले सरोवर, आम्रवृक्ष एवं गायों के दुखी होने का कारण बताने हेतु प्रार्थना की। भगवान ने कहा कि यह सब कर्मों का प्रति फल है। विधाता मात्र न्याय करते है, उन्हें किसी से राग–द्वेष नहीं है। दोनों सरोवर पूर्व जन्म में दो सगी बहने थी। वे धनाढ़य और दानी भी थी, परंतु वे दान देने में पक्ष पात करती थी, केवल परिचितों को ही दान देती थी। इतना ही नहीं, वे हमेशा अपनी प्रशंसा की कामना भी करती थी। उनके विचारों में अत्यंत संकीर्णता थी। उनका उद्धार तभी होगा, जब सरोवरों का पानी नहरों द्वारा सभी के खेतों को मिले और सभी का कल्याण हो। इसी प्रकार दोनों आम्रवृक्ष पूर्व जन्म में प्रकांड विद्धवान थे, परंतु स्वार्थी होने के कारण उनकी विद्वता का लाभ अन्य लोगों को नहीं मिलता था। उनका उद्धार तभी होगा, जब उनके फलों के बीजों से अनेक बगीचे लगाए जाए और सभी लोगो को फल खाने को मिले।

दोनों गायों के विषय में भगवान ने कहा कि दोनों गौए पूर्व जन्म मे महिलाएं थी। वे मात्र अपने पति तथा अपने बेटों का ध्यान रखती थी। उनमें स्वार्थ एवं कपट की भावना अत्यंत प्रबल थी और स्वभाव भी उनका अत्यंत संकुंचित था। उनका उद्धार तभी होगा, जब उनका दूध अभाव ग्रस्त रोगियों–पीड़ितों एवं निर्धन बालकों को मिले। भगवान के समाधान के अनुसार तीनों ने आचरण किया और कुछ समय बाद ही तीनों का दुख दूर हो गया।

उक्त आख्यान से स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मों के अनुसार कर्मफल अवश्य ही मिलता है। कर्मफल मिलने में भले ही विलंब प्रतीत हो, परंतु कर्मफल तो मिलेगा ही।

दीपक कुमार ऋषि
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

कश्मीर की घाटी

कश्मीर की घाटी में
फूल हिंदुस्तान का खिलने वाला हैं।
एक एक आतंकवादी का सर
धड़ से अलग होने वाला हैं।

छुप जाओ जहाँ छुप सकते हो
फिर भी उनको पता चल जाना हैं
हाथ बंधे थे अब तक उनके
अब जोश पूर्ण स्वतंत्रता वाला हैं

कायर हो तुम सब के सब
इसलिए पीठ पीछे वार करना तुम्हें सिखाया हैं।
उरी में सोये मासूमों पे गोली चलाई
और अब पुलवामा में ब्लास्ट करवाया हैं।

इस बार तुम्हारा सामना तुम्हारे बाप से होने वाला हैं
और पीछे से किए गए वार का जवाब
अब तुम्हें सामने से मिलने वाला हैं

आत्म समर्पण कर दो अब तुम
क्योंकि फौज का तरीका निराला हैं
पिछले बार तो बस गोली मारी थी
इस बार तो धड़ भी न मिलने वाला हैं

सिर्फ खून के बदले खून नहीं अब
उनकी रूह को तक तड़पाना हैं।
और हिन्दी–मुस्लिम साइड में रखकर
हिन्दुस्तानी होकर तिरंगा शान से फहराना हैं।

विकास धर्मसिंह डोरिये
छावनी बोर्ड खड़की

चलते–चलते

”मेरी माटी मेरा देश“

‘मेरी माटी मेरा देश’ नारे द्वारा प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 30 जुलाई को मन की बात के 103वें संस्करण के दौरान 77वें स्वतंत्रता दिवस को मनाने के लिए एक अनोखे विचार का हवाला दिया। उन्होंने ‘अमृत महोत्सव समारोह’ के दौरान ‘मेरी माटी मेरा देश’ अभियान की घोषणा की। 09 अगस्त से 15 अगस्त तक चलने वाले इस अभियान में शहीद वीरों का सम्मान और सराहना की जाएगी।

इस वर्ष यह अभियान गांव, पंचायत, ब्लॉक, शहरी स्थानीय निकाय, राज्य और राष्ट्रीय पत्र स्तर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर ”जनभागीदारी” को बढ़ावा देगा। प्रधानमंत्री ने अपने मन की बात के 103वें एपिसोड में कहा, ”इसके तहत हमारे अमर शहीदों की याद में देशभर में कई कार्यक्रम आयोजित किए जाएगे, इन विभूतियों की समिति में देश की लाखों ग्राम पंचायतों में विशेष शिलालेख भी लगाए जायेंगे, इस अभियान के तहत देशभर में ‘अमृत कलश यात्रा’ भी आयोजित की जाएगी।

उन्होंने आगे कहा कि देश के कोने–कोने से 7500 कलशों में मिट्टी लेकर ‘अमृत कलश यात्रा’ देश कि राजधानी दिल्ली पहुंचेगी। यह यात्रा अपने साथ देश के विभिन्न हिस्सों से पौधे भी लेकर आएगी। 7500 कलशों में आने वाली मिट्टी और पौधों को मिलकर राष्ट्रीय पौध स्मारक के पास ‘अमृत वाटिका’ बनाई जाएगी। ये ‘अमृत वाटिका’ एक भारत–श्रेष्ठ भारत’ का भव्य प्रतीक बनेगी।

मेरी माटी मेरा देश अभियान घटनाएँ एवं गतिविधियाँ

- शीर्षफलम् का लोकापर्ण–वीरों की नेमप्लेट की स्थापना
- पंच प्राण प्रतिज्ञा लेते हुए
- देशी वृक्षों के 75 पौधों से अमृत वाटिका का वसुधा वंदन निर्माण
- वीरों का वंदन देश और बहादुरों के परिवारों की रक्षा करने वाले स्वतंत्रता सेनानियों/बहादुरों का सम्मान करता हैं।
- राष्ट्रीय ध्वज फहराना और राष्ट्रगान गाना।

रोहित
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

हेमचन्द्र विक्रमादित्य

हेमू, जिसे हेमू विक्रमादित्य अथवा हेमचंद्र विक्रमादित्य के नाम से भी जाना जाता है ; मृत्यु 5 नवंबर 1556) एक भारतीय सम्राट थे, जिन्होंने पहले भारतीय इतिहास की एक अवधि के दौरान सूर साम्राज्य के आदिल शाह सूरी के सेनापति और वज़ीर के रूप में कार्य किया था। जब मुगल और अफगान पूरे उत्तर भारत में सत्ता के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे थे। उन्होंने पंजाब से लेकर बंगाल तक पूरे उत्तर भारत में अफगान विद्रोहियों और हुमायूं और अकबर की मुगल सेनाओं से लड़ाई लड़ी और 22 लड़ाइयाँ जीतीं । 7 अक्टूबर 1556 को दिल्ली की लड़ाई में अकबर की मुगल सेना को हराने के बाद हेमू ने शाही पद का दावा किया और विक्रमादित्य की उपाधि धारण की जिसे अतीत में कई भारतीय राजाओं और सम्राटों ने अपनाया था। जिस वजह से हेमू को मध्ययुगीन भारत में विरोधी मुस्लिम शासकों के बीच थोड़े समय के लिए ही एक 'हिंदू राज' स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है।

हेमू हरियाणा में रेवाड़ी के रहने वाले थे। उन्होंने अपने जीवन में कुल 22 लड़ाइयाँ जीतीं. इसकी वजह से ही उन्हें कुछ इतिहासकारों ने मध्य युग के समुद्र गुप्त का ख़िताब दिया. हेमू को मध्ययुग का नेपोलियन भी कहा गया.

वो एक अच्छे योद्धा के साथ–साथ कुशल प्रशासक भी थे. उनके युद्ध कौशल का लोहा उनके साथियों के साथ–साथ उनके दुश्मनों ने भी माना. मशहूर इतिहासकार आर.पी त्रिपाठी अपनी किताब 'राइज़ एंड फॉल ऑफ़ मुग़ल एम्पायर' में लिखते हैं, "अकबर के हाथ हेमू की हार दुर्भाग्यपूर्ण थी. अगर भाग्य ने उनका साथ दिया होता तो उन्हें ये हार नसीब नहीं हुई होती."

एक और इतिहासकार आरसी मजूमदार शेरशाह पर लिखी पुस्तक के एक अध्याय 'हेमू– अ फॉरगॉटेन हीरो' में लिखते हैं, "पानीपथ की लड़ाई में एक दुर्घटना की वजह से हेमू की जीत हार में बदल गई, वर्ना उन्होंने दिल्ली में मुग़लों की जगह हिंदू राजवंश की नींव रखी होती."

साधारण परिवार में जन्म

हेमू के प्रारंभिक जीवन के समसामयिक वृत्तांत उनकी विनम्र पृष्ठभूमि के कारण खंडित हैं, और अक्सर पक्षपातपूर्ण हैं, क्योंकि वे बदाउनी और अबू–फ़ज़ल जैसे मुग़ल इतिहासकारों द्वारा लिखे गए थे जो अकबर के दरबार में कार्यरत थे। आधुनिक इतिहासकारों में उनके परिवार के पैतृक घर और जाति और उनके जन्म के स्थान और वर्ष पर मतभेद है। आम तौर पर जो स्वीकार किया जाता है कि हेम चंद्र का जन्म वर्ष 1501 में हरियाणा में रेवाड़ी के गाँव कुतब पुर में एक हिन्दू परिवार में हुआ था।

उनके परिवार में किराने का काम होता था। अकबर के जीवनीकार अबुल फ़ज़ल उनको बहुत तिरस्कारपूर्वक एक फेरीवाला बताते हैं जो रेवाड़ी की गलियों में नमक बेचा करते थे।

लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं कि उनका जैसा भी पेशा रहा हो वो शेरशाह सूरी के बेटे इस्लाम शाह का ध्यान अपनी तरफ़ खींचने में सफल हो गए, हेमू कुछ सैन्य अनुभव के साथ दिल्ली में बाजार के अधीक्षक बन गए । जल्द ही वो बादशाह के विश्वासपात्र बन गए और प्रशासन में उनका हाथ बँटाने लगे। बादशाह ने उन्हें ख़ुफ़िया और डाक विभाग का प्रमुख बना दिया। बाद में इस्लाम शाह को उनमें सैनिक गुण भी दिखाई दिए जिसकी वजह से उन्होंने हेमू को अपनी सेना में वो स्थान दे दिया जो शेरशाह सूरी के ज़माने में ब्रह्मजीत गौड़ को मिला करता था।

30 अक्टूबर 1553 को इस्लाम शाह की मृत्यु हो गई और उनके 12 वर्षीय बेटे, फ़िरोज़ खान को उनका उत्तराधिकारी बना दिया गया, जिसे उनके चाचा आदिल शाह सूरी ने उनके राज्यारोहण के तीन दिनों के भीतर ही मार डाला । हेमू की सैन्य सफलताओं से, आदिल शाह के शासनकाल में हेमू को 'वकील ए आला' यानि प्रधानमंत्री का दर्जा मिल गया।

दिल्ली पर कब्ज़ा : हेमू, एक अत्यधिक सक्षम नागरिक प्रशासक होने के अलावा बेहतरीन सैन्य दिमाग भी थे। उन्हें आदिल शाह के विरोधियों के खिलाफ 22 लड़ाइयां लड़ने और जीतने के लिए जाना जाता है। इनमें से कई लड़ाइयाँ उन अफगानों

के खिलाफ थीं जिन्होंने आदिल शाह के खिलाफ विद्रोह किया था। इनमें से एक इस्लाम शाह के दरबार का सदस्य ताज खान कर्रानी था , जिसने आदिल शाह की सेवा करने के बजाय, अपने अनुयायियों के साथ ग्वालियर से पूर्व की ओर भागने का फैसला किया। छिबरामऊ में हेमू ने उसे पकड़ लिया और हरा दिया, लेकिन किसी तरह भागने में सफल रहा । हेमू ने फिर से पीछा किया और चुनार में कर्रानी से लड़ाई की और एक बार फिर विजयी हुआ।

23 जुलाई 1555 को आदिल शाह के बहनोई सिकंदर शाह सूरी पर हुमायूँ की जीत के बाद , मुगलों ने अंततः दिल्ली और आगरा पर कब्ज़ा कर लिया। 26 जनवरी 1556 को जब हुमायूँ की मृत्यु हुई तब हेमू बंगाल में थे। उनकी मृत्यु ने हेमू को मुगलों को हराने का एक आदर्श अवसर दिया। उन्होंने बंगाल से तेजी से मार्च शुरू किया और बयाना, इटावा, संभल, कालपी और नारनौल से मुगलों को खदेड़ दिया। आगरा में, हेमू के आक्रमण की खबर सुनकर ही आगरा शहर खाली करवा दिया गया और बिना लड़े आगरा पर हेमू का कब्जा हो गया ।

इसके बाद, हेमू ने अपनी सेना के साथ दिल्ली की तरफ़ कूच किया। के.के भारद्वाज अपनी किताब 'हेमू नेपोलियन ऑफ़ मीडिवल इंडिया में' लिखते हैं, "दिल्ली के मुग़ल गवर्नर तारदी बेग खान ने हेमू को रोकने का पूरा इंतेज़ाम किया। हेमू 6 अक्तूबर, 1556 को दिल्ली पहुंचे और उन्होंने तुग़लकाबाद में अपनी फ़ौज के साथ डेरा डाला। अगले दिन उनकी और मुग़लों की सेना के बीच भिड़ंत हुई जिसमें मुग़लों की हार हुई और तारदी बेग खान अपनी जान बचाने के लिए पंजाब की तरफ़ भागा जहाँ अकबर की फ़ौज पहले से मौजूद थी।

दिल्ली में हार की ख़बर अकबर तक 13 अक्तूबर, 1556 को उनके 14वें जन्मदिन से दो दिन पहले पहुंची. उस समय अकबर पंजाब में जालंधर में बैरम ख़ाँ के साथ थे। अकबर के दिल में दिल्ली से अधिक महत्व काबुल का था। लेकिन बैरम ख़ाँ इससे सहमत नहीं थे।

पार्वती शर्मा अकबर की जीवनी 'अकबर ऑफ़ हिंदोस्तान' में लिखती हैं, "अकबर के सामने विकल्प साफ़ थे। या तो वो हिंदोस्तान के बादशाह बनें या लौटकर काबुल के आराम में रह कर सिर्फ़ क्षेत्रीय बादशाह बने रहें। हुआ ये कि जब तारदी बेग खान दिल्ली से भाग कर अकबर के ख़ेमें में पहुंचे तो अकबर शिकार खेलने गए हुए थे। बैरम ख़ाँ ने तारदी बेग खान को अपने तंबू में बुलवा भेजा। थोड़ी देर बातचीत करने के बाद बैरम ख़ाँ अपनी शाम की नमाज़ के लिए वज़ू करने के लिए उठ गए। तभी बैरम ख़ाँ के लोगों ने तंबू के अंदर घुसकर तारदी बेग खान का कत्ल कर दिया। जब अकबर शिकार कर वापस लौटे तो बैरम ख़ाँ के नंबर दो पीर मोहम्मद ने उन्हें तारदी बेग खान की मौत की ख़बर सुनाई। बैरम ख़ाँ ने पीर के ज़रिए अकबर को संदेश भिजवाया कि उन्हें उम्मीद है कि वो उनके इस क़दम का समर्थन करेंगे ताकि दूसरों को सबक़ मिले कि जंग से भागने वालों का क्या हश्र होता है।"

राजा विक्रमादित्य के रूप में

हेमू ने विजेता के रूप में दिल्ली में प्रवेश किया और अपने सिर के ऊपर शाही छतरी लगाकर हिंदू राज की स्थापना की और नामी महाराजा विक्रमादित्य की पदवी गृहण की, जो भारत के प्राचीन अतीत में कई हिंदू राजाओं और सम्राटों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली उपाधि थी।

सतीश चंद्र जैसे इतिहासकार यह नहीं मानते कि इसका तात्पर्य यह है कि हेमू ने खुद को एक स्वतंत्र सम्राट घोषित कर दिया था। जिसके बाद हेमू ने, अपने नाम से सिक्के गढ़वाए और दूरदराज़ के प्रांतों में गवर्नर नियुक्त किए।

पानीपत का युद्ध

उधर जब हेमू को पता चला कि मुग़ल जवाबी हमला करने की योजना बना रहे हैं तो उन्होंने पहले ही अपनी तोपें पानीपत की तरफ़ भेज दीं। बैरम ख़ाँ ने भी अली कुली शैबानी के नेतृत्व में 10000 लोगों की सेना पानीपत की तरफ़ रवाना कर दी। शैबानी एक उज़्बेक थे और उनकी गिनती मशहूर लड़ाकों में होती थी।

अबुल फ़ज़ल अकबर की जीवनी 'अकबरनामा' में लिखते हैं, "हेमू ने बहुत तेज़ी के साथ दिल्ली छोड़ी. दिल्ली से

पानीपत की दूरी 100 किलोमीटर से भी कम थी. उस इलाके में भयानक सूखा पड़ा हुआ था। इसलिए रास्ते में आदमज़ात का नामोनिशान नहीं था। हेमू की सेना में 30000 अनुभवी घुड़सवार और 500 से 1500 के बीच हाथी थे। हाथियों की सूढ़ों में तलवारें और बरछे बँधे हुए थे और उनकी पीठ पर युद्ध कौशल में पारंगत तीरंदाज़ सवार थे।"

"इससे पहले मुग़ल सेना ने युद्ध के मैदान में इतने लंबे चौड़े हाथी नहीं देखे थे। वो किसी भी फ़ारसी घोड़े से तेज़ दौड़ सकते थे और घोड़े और घुड़सवार को अपनी सूंढ़ से उठाकर हवा में फेंक सकते थे।"

हेमू राजपूतों और अफ़गानों की एक बड़ी फ़ौज के साथ पानीपत पहुंचे। जेएम शीलत अपनी किताब 'अकबर' में लिखते हैं, "अकबर को इस लड़ाई से थोड़ी दूर एक सुरक्षित जगह पर रखा गया। बैरम ख़ाँ ने भी इस लड़ाई से अपने को अलग रखते हुए लड़ाई की ज़िम्मेदारी अपने ख़ास लोगों पर छोड़ दी"।

<u>हेमू की बहादुरी</u>

हेमू उस लड़ाई में सिर में बिना कोई कवच लगाए हुए उतरे. वो लगातार चिल्ला कर अपने साथियों का जोश बढ़ा रहे थे। वो अपने हाथी 'हवाई' पर चढ़े हुए थे।

बदायूंनी अपनी किताब 'मुंतख़ब–उत–त्वारीख़' में लिखते हैं, "हेमू के हमले इतने सधे हुए थे कि उसने मुग़ल सेना के बाएं और दाहिने हिस्से में अफ़रा–तफ़री फैला दी। लेकिन मध्य एशिया के घुड़सवारों को हल्के में नहीं लिया जा सकता था। हेमू के हाथियों के सिर पर सीधा हमला करने के बजाए उन्होंने उन पर तिरछा हमला किया ताकि हाथी पर सवार सैनिकों को नीचे गिराकर अपने तेज़–तर्रार घोड़ों तले रौंदा जा सके"।

इस लड़ाई का वर्णन करते हुए अबुल फ़ज़ल लिखते हैं, "बादलों जैसी गर्जना और शेर की तरह दहाड़ती हुई दोनों सेनाओं ने एक–दूसरे पर हमला बोल दिया। अली क़ुली शैबानी के तीरंदाज़ों ने दुश्मन पर तीरों की बरसात कर दी लेकिन लड़ाई का रुख़ तब भी उनकी तरफ़ नहीं मुड़ पाया"।

पार्वती शर्मा लिखती हैं, "शायद अकबर उस समय सोच रहे हों कि किस तरह पानीपत की पहली लड़ाई में उनके दादा बाबर की सेना ने सिर्फ़ 10000 सैनिकों के साथ इब्राहीम लोदी के 100000 सैनिकों को हराया था। लेकिन अकबर को ये भी अंदाज़ा था कि तब बाबर के पास एक गुप्त हथियार था– बारूद। लेकिन तीस साल बाद अकबर के पास कोई गुप्त हथियार नहीं बचा था। तब तक बारूद इतना आम हो चुका था कि अकबर ने सैनिक अभियान शुरू होने से पहले अपने तोपख़ाने के प्रमुख को आदेश दिया था कि इसे हेमू के पुतले में भर कर उसमें आग लगा दी जाए ताकि उसके सैनिकों का मनोबल बढ़ जाए"।

<u>हेमू की आँख में तीर लगा</u>

लेकिन तभी एक चमत्कार ने मुग़ल सेना का साथ दिया। हेमू ने मुग़ल सेना के दाहिने और बाएं हिस्से में खलबली मचा दी थी। अली क़ुली शैबानी के सैनिक हेमू की सेना पर तीरों की बारिश कर दबाव को कुछ कम करने की कोशिश कर रहे थे। उनका एक तीर निशाने पर लगा.

अबुल फ़ज़ल लिखते हैं, "हेमू ने कभी भी घुड़सवारी नहीं सीखी थी। शायद यही वजह थी कि वो हाथी पर चढ़कर लड़ाई लड़ रहे थे। लेकिन शायद इसका ये भी कारण रहा हो कि अगर सेनापति हाथी पर सवार हो तो सभी सैनिक उसे दूर से देख सकते हैं। ऊपर से हेमू ने कोई कवच नहीं पहन रखा था। ये एक बहादुर लेकिन नासमझी भरा फ़ैसला था। लड़ाई के रुख़ के ख़िलाफ़ उड़ता हुआ एक तीर अचानक हेमू की आँख को भेदता हुआ उनकी खोपड़ी में जाकर फँस गया"।

हरबंस मुखिया अपनी किताब 'द मुग़ल्स ऑफ़ इंडिया' में मोहम्मद क़ासिम फ़ेरिश्ता को कहते बताते हैं, "इस दुर्घटना के बाद भी हेमू ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने अपनी आँख के सॉकेट से तीर को निकाला और उसको अपने रूमाल से ढक लिया। इसके बाद भी उन्होंने लड़ना जारी रखा।"

बैरम ख़ाँ ने हेमू का सिर धड़ से अलग किया

लेकिन थोड़ी ही देर में हेमू अपने हाथी के हौदे में बेहोश होकर गिर पड़े। इस तरह की लड़ाई में जब भी सेनापति इस तरह से घायल होता था उसकी सेना की लड़ाई में दिलचस्पी जाती रहती थी। इसलिए जब अकबर और बैरम ख़ाँ युद्धस्थल पर पहुंचे तो उन्हें उनके सैनिक लड़ते हुए दिखने की जगह जीत की ख़ुशी मनाते हुए दिखाई दिए।

निज़ामुद्दीन अहमद अपनी किताब 'तबाक़त ए अकबरी' में लिखते हैं, "एक शाह क़ुली ख़ाँ ने एक हाथी को बिना महावत के भटकते हुए देखा. उसने अपने महावत को हाथी पर चढ़ने के लिए भेजा. जब महावत हाथी पर चढ़ा तो उसने उसके हौदे में एक घायल व्यक्ति को पड़े हुए पाया। ध्यान से देखने पर पता चला कि वो घायल शख़्स और कोई नहीं हेमू था। पूरे मामले के महत्व को समझते हुए कुली ख़ाँ उस हाथी को हाँक कर बादशाह अकबर के सामने ले गया। इससे पहले उसने हेमू को ज़ंजीरों से बाँध दिया था"।

अबुल फ़ज़ल लिखते हैं, "20 से अधिक लड़ाइयों के विजेता हेमू को रक्तरंजित हालत में 14 साल के अकबर के सामने पेश किया गया। बैरम ख़ाँ ने हाल ही में बादशाह बने अकबर से कहा कि वो अपने दुश्मन को अपने हाथों से मारें। अपने सामने पड़े घायल हेमू को देखकर अकबर झिझके। उन्होंने बहाना बनाते हुए कहा, 'मैंने पहले ही इसके टुकड़े कर दिए हैं.' आसपास खड़े कुछ लोगों ने बैरम ख़ाँ की बात का समर्थन करते हुए अकबर को हेमू को मारने के लिए उकसाया। लेकिन अकबर टस से मस नहीं हुए."

फ़ेरिश्ता का मानना है कि अकबर ने घायल हेमू को अपनी तलवार से छुआ भर, लेकिन विन्सेंट ए स्मिथ और हरबंस मुखिया का मानना है कि अकबर ने हेमू पर अपनी तलवार का इस्तेमाल किया। लेकिन आम धारणा ये है कि बैरम ख़ाँ ने अपनी तलवार से हेमू का सिर धड़ से अलग कर दिया।

देश की आज़ादी के लिए जीवन का बलिदान

निरोद भूषण रॉय ने अपनी किताब श्सक्सेसर्स ऑफ़ शेरशाहश में लिखा, "हेमू ने हमेशा हिंदू और मुसलमानों को अपनी दो आँखों की तरह समझा। पानीपत में वो हिंदुस्तान की प्रभुसत्ता के लिए मुग़लों से लड़े। उनकी सेना के दाहिने हिस्से की कमान सँभाली थी शादी ख़ाँ काकर ने जबकि बाएं हिस्से का नेतृत्व कर रहे थे राम्या."

अगर वो कुछ सालों तक और जीवित रह गए होते तो उन्होंने भारत में हिंदू राज की मज़बूत नींव रख दी होती।

विन्सेंट ए स्मिथ अकबर की जीवनी में लिखते हैं, "अकबर विदेशी मूल के थे. उनकी रगों में बह रहे ख़ून की एक बूँद भी भारतीय नहीं थी। अपने पिता की तरफ़ से वो तैमूरलंग की सातवीं पीढ़ी से आते थे जबकि उनकी माँ फ़ारसी मूल की थीं। इसके विपरीत हेमू भारत की मिट्टी के थे और भारत की गद्दी और प्रभुसत्ता पर उनका दावा ज़्यादा बनता था। क्षत्रिय या राजपूत न होने के बावजूद हेमू ने अपने देश की आज़ादी के लिए युद्ध के मैदान पर अपनी आख़िरी साँस ली। किसी मानव अस्तित्व का इससे महान अंत क्या हो सकता है?"

एक किराने की दुकान से दिल्ली की गद्दी तक पहुंचना कम से कम उस ज़माने में बड़ी बात थी. अगर भाग्य ने उनके ख़िलाफ़ होकर जीत को हार में न बदला होता तो भारत का इतिहास कुछ और ही होता।

प्रदीप मिश्र
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

राजभाषा अनुभाग के कार्यकलाप

रक्षा सम्पदा महानिदेशालय अर्थात रक्षा सम्पदा संगठन के मुख्यालय का राजभाषा अनुभाग संगठनात्मक स्तर पर संघ की राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की मॉनीटरिंग एवं संगठन के अधीनस्थ कार्यालयों में उसके कार्यान्वयन तथा प्रचार–प्रसार पर अपनी नजर बनाए रखता है। संघ की राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित करने की दृष्टि से केंद्र सरकार द्वारा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय को अनेक दायित्व सौंपे गए हैं जिनमें हिन्दी भाषा का प्रसार एवं उसका विकास सम्मिलित हैं जिससे कि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

राजभाषा अनुभाग संघ की राजभाषा नीति से संबंधित विशेष दायित्वों का निर्वहन करता है:–

(i) यह अनुभाग सुनिश्चित करता है कि राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी होने वाले सभी कागजात द्विभाषी रूप में ही जारी हों। हालांकि कार्यालय प्रमुख भी यह सुनिश्चित करता है किन्तु राजभाषा अनुभाग इस कार्य में उनका सहयोग करता है।

(ii) राजभाषा अनुभाग ही मुख्यालय एवं अधीनस्थ कार्यालयी स्तर पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा वार्षिक कार्यक्रम के अन्तर्गत राजभाषा हिन्दी से संबंधित निर्धारित लक्ष्यों का अनुपालन सुनिश्चित करता है।

(iii) महानिदेशालय में नियमित रूप से राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों, हिन्दी कार्यशालाओं एवं हिन्दी पखवाड़े का आयोजन, अधीनस्थ कार्यालयों का राजभाषायी निरीक्षण, केंद्र सरकार द्वारा लाई जा रही विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं लागू करना इत्यादि कार्य भी राजभाषा अनुभाग द्वारा सफलतापूर्वक किए जाते हैं।

(iv) राजभाषा अनुभाग संसदीय राजभाषा समिति द्वारा किए जाने वाले निरीक्षणों के दौरान संबंधित अधीनस्थ कार्यालयों को मार्गदर्शन एवं समुचित सहायता भी प्रदान करता है।

उपर्युक्त के आलोक में रक्षा सम्पदा महानिदेशालय के राजभाषा अनुभाग द्वारा पिछले एक वर्ष के दौरान किए गए कामकाज का एक विस्तृत ब्यौरा निम्नानुसार है :–

1. माननीय संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा दिनांक 01.08.2022 से 31.08.2023 तक 23 कार्यालयों (दिनांक 18.08.2022 को छावनी बोर्ड अहमदाबाद एवं रक्षा सम्पदा कार्यालय, अहमदाबाद, दिनांक 20.09.2022 को रक्षा सम्पदा कार्यालय, गुवाहाटी एवं रक्षा सम्पदा कार्यालय, तेजपुर, दिनांक 15.10.2022 को छावनी बोर्ड कन्नूर, दिनांक 11.11.2022 को रक्षा सम्पदा कार्यालय, सिकंदराबाद, दिनांक 03.01.2023 को छावनी बोर्ड इलाहाबाद; रक्षा सम्पदा कार्यालय, इलाहाबाद एवं छावनी बोर्ड वाराणसी, दिनांक 10.01.2023 को रक्षा सम्पदा कार्यालय, मेरठ (विचार–विमर्श कार्यक्रम), दिनांक 13.01.2023 को रक्षा सम्पदा कार्यालय, जोधपुर, दिनांक 01.03.2023 को छावनी बोर्ड रामगढ़, दिनांक 03.03.2023 को रक्षा सम्पदा निदेशालय, मध्य कमान, लखनऊ एवं छावनी बोर्ड लखनऊ, दिनांक 28.04.2023 को रक्षा सम्पदा निदेशालय, पूर्व कमान, कोलकाता; रक्षा सम्पदा कार्यालय, कोलकाता एवं छावनी बोर्ड बैरकपुर, दिनांक 06.05.2023 को छावनी बोर्ड देहरादून एवं छावनी बोर्ड लैंसडाउन, दिनांक 15.07.2023 को रक्षा सम्पदा निदेशालय, दक्षिण कमान, पुणे एवं छावनी बोर्ड खड़की और दिनांक 21.08.2023 को छावनी बोर्ड महू एवं रक्षा सम्पदा कार्यालय, महू) के राजभाषायी निरीक्षण किए गए। ये सभी निरीक्षण कार्यक्रम सफल रहे। इन कार्यालयों के निरीक्षण के दौरान मुख्यालय के प्रतिनिधियों ने समुचित मार्गदर्शन एवं सहायता प्रदान कर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2. रक्षा सम्पदा महानिदेशालय नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दक्षिण दिल्ली–*I* (कार्यालय) के 09 सदस्य कार्यालयों के समूह का नोडल कार्यालय है। नराकास बैठकों में नोडल कार्यालय के रूप में उत्कृष्ट कार्य करने पर महानिदेशालय और राजभाषा अनुभाग की कई बार सराहना की जा चुकी है। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के साथ–साथ राजभाषा अनुभाग इस समूह के सदस्य कार्यालयों का उचित मार्गदर्शन भी करता है तथा आवश्यकतानुसार उनकी समुचित सहायता भी करता है।

3. रक्षा सम्पदा महानिदेशालय में 14 से 28 सितंबर, 2022 तक हिन्दी पखवाड़े का भव्य आयोजन किया गया। इस दौरान आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं में अधिकारियों/ कर्मचारियों ने बढ–चढ़कर भाग लिया। विजेता प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देकर पुरस्कृत किया गया।

4. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों, जिनमें राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की स्थित का जायजा लेने के लिए समय–समय पर किए जाने वाले राजभाषायी निरीक्षण भी सम्मिलित हैं, के अनुसार मुख्यालय स्तर पर अपने न्यूनतम 25 प्रतिशत अधीनस्थ कार्यालयों (अर्थात रक्षा सम्पदा निदेशालय, निदेम, छावनी बोर्ड, और रक्षा सम्पदा कार्यालय) का राजभाषायी निरीक्षण किया जाता है। महानिदेशक, रक्षा सम्पदा द्वारा वर्ष 2022–23 और 2023–24 के लिए अनुमोदित निरीक्षण कार्यक्रम के अनुसरण में मुख्यालय स्तर पर 33 कार्यालयों का राजभाषायी निरीक्षण कार्य पूर्ण किया जा चुका है तथा उनकी निरीक्षण रिपोर्टें संबंधित कार्यालयों और कमानों को आगामी कार्रवाई हेतु भेज दी गई हैं। शेष कार्यालयों की निरीक्षण प्रक्रिया जारी है।

5. रक्षा सम्पदा संगठन के सभी अधीनस्थ कार्यालयों में भी हिन्दी पखवाड़ा बड़ी धूमधाम से मनाया गया। विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और विजेताओं को प्रशस्ति–पत्र और नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। साथ ही लगभग सभी अधीनस्थ कार्यालयों में नियमित रूप से हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की गई, जिनमें अधिकाधिक अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। इन कार्यशालाओं के आयोजन से कार्मिकों में हिन्दी में काम करने की झिझक दूर होती है तथा हिन्दी पत्राचार में भी वृद्धि देखने को मिलती है।

6. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा अनेक प्रोत्साहन योजनाएं परिचालित की जाती हैं जैसे वर्ष भर में हिन्दी में सर्वाधिक सरकारी कामकाज करने वाले अधिकारियों/कार्मिकों को नकद पुरस्कार से पुरस्कृत की जाने वाली प्रोत्साहन योजना आदि। महानिदेशालय में वर्ष 2021–22 के दौरान हिन्दी में सर्वाधिक काम करने के लिए निम्नलिखित अधिकारियों/ कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए :–

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम	अनुभाग	पुरस्कार
1.	श्री जगदीश बिश्नोई, सहायक महानिदेशक	किराया/अधि.	प्रथम
2.	श्री राकेश मीना, वरिष्ठ सचिवालय सहायक	छावनी	प्रथम
3.	श्री पंकज कुमार यादव, कनिष्ठ सचि. सहायक	छावनी	द्वितीय
4.	श्री राहुल कुमार, सहा. अनुभाग अधिकारी	समन्वय	द्वितीय
5.	श्री सोनू पाल, उच्च श्रेणी लिपिक	अधिग्रहण–II	द्वितीय
6.	श्री रतन सिंह, सहा. रक्षा सम्पदा अधिकारी	अर्जन	तृतीय
7.	श्री विनोद शर्मा, कार्यालय अधीक्षक	भूमि	तृतीय

7. महानिदेशालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका "सम्पदा भारती" का प्रकाशन भी राजभाषा के प्रचार–प्रसार की दिशा में एक उल्लेखनीय कदम है। इसमें प्रकाशित लेख, कहानी, कविता, यात्रा–वृतांत एवं संस्मरण इत्यादि कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा को उजागर करने का एक सार्थक एवं सक्रिय मंच है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी आदेशों के अनुपालन में "सम्पदा भारती" में प्रकाशित रचनाओं के रचनाकारों (प्रत्येक रचनाकार की केवल एक रचना) को गुणवत्ता के आधार पर पारिश्रमिक भी प्रदान किया जाता है।

8. संक्षेप में, रक्षा सम्पदा संगठन के मुख्यालय का राजभाषा अनुभाग हिन्दी के प्रति अपने कर्त्तव्यों के निर्वहन को लेकर काफी गंभीर है। सदैव यह प्रयास रहता है कि सौंपे गए दायित्व को सजगता एवं सावधानी के साथ समयबद्ध तरीके से पूरा किया जाए। इस कार्य में महानिदेशक महोदय के मार्गदर्शन में संबंधित उच्च अधिकारियों के बहुमूल्य सुझावों से राजभाषा हिन्दी के प्रोत्साहन संबंधी सभी नीतिगत निर्णयों का सुचारु रूप से कार्यान्वयन संभव हो पाता है।

****

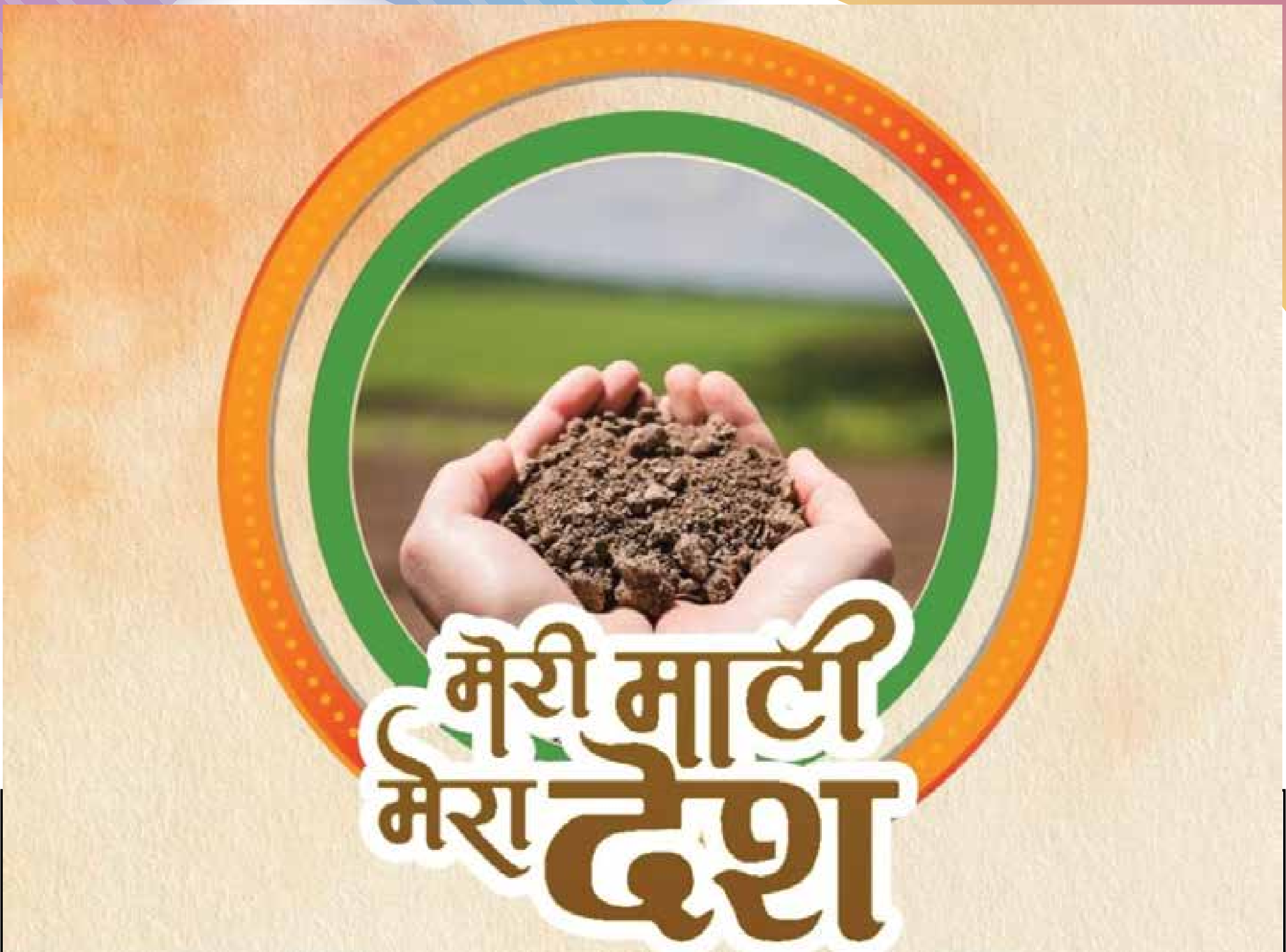

संपर्क सूत्र

राजभाषा अनुभाग, रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

रक्षा सम्पदा भवन, उलान बाटर मार्ग

दिल्ली छावनी – 110010

दूरभाष: 011 – 25674970

फैक्स: 011 – 25674965

ई–मेल: rajbhasha-dgde@gov.in

dgdehindi2013@gmail.com

रक्षा सम्पदा भवन
RAKSHA SAMPADA BHAWAN